महाप्रज्ञ-प्रबोध

मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभा

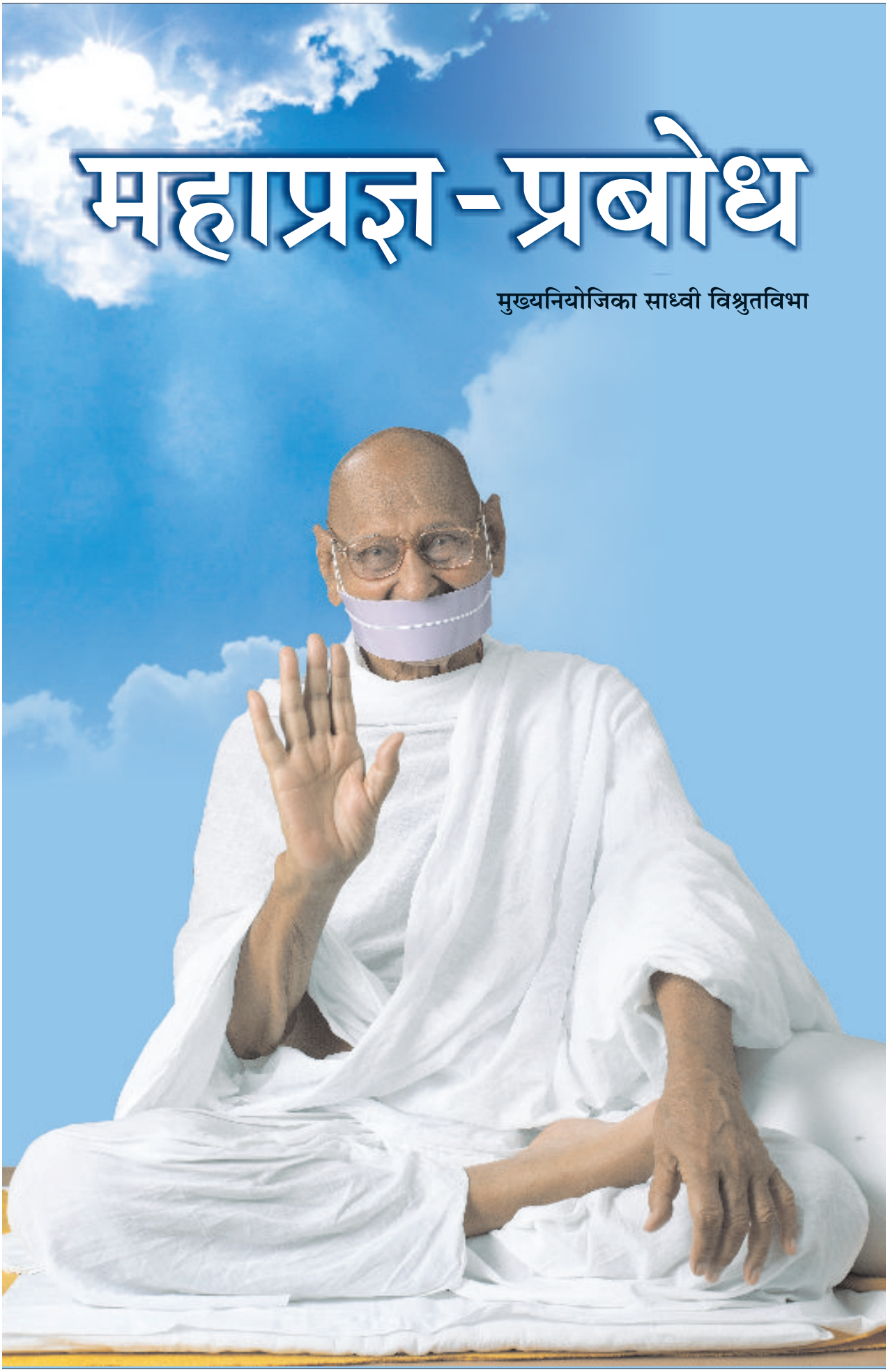

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

आचार्यप्रवर का लम्बा संयम पर्याय, बाहुश्रुत्य, साहित्यकारत्व, कवित्व, ध्यान साधना का अध्यवसाय और उपशम भाव आदि विशेषताओं से संपन्न जीवनवृत्त दूसरों के लिए भी आलोक प्रदान करने वाला था।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने संक्षेप में गुरुदेव के जीवनवृत्त को 'महाप्रज्ञ प्रबोध' में गुम्फित किया है। यह संगानात्मक स्वाध्याय में भी प्रयुक्त हो सकेगा और जीवनवृत्त के अनेक प्रसंग कंठस्थ भी हो सकेंगे। श्रद्धालु जन श्रद्धाभाव के साथ और बौद्धिक जन बौद्धिक भाव के साथ इसे पढ़कर लाभान्वित हों। शुभाशंसा।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

हार्दिक श्रद्धांजलि

:: जन्म ::
05.11.1949

:: देवलोकगमन ::
18.04.2010

स्व. श्रीमती कमला ताराचंद सेठिया

बांगड़ नगर, गोरेगाँव पश्चिम, मुम्बई
ग्राम : छांटी खाटु, जि. नागौर, राजस्थान

:: श्रद्धावनत ::

तारचंद सेठिया (पति), मनोज-रेखा, राजेन्द्र-स्वाति सेठिया (पुत्र-पुत्रवधु)
रितु-अजय बरड़िया, सूरत (पुत्री-दामाद)
सिद्धार्थ, पार्श्व, विशाखा, प्रेक्षा, भाविका, याशिका (पौत्र-पौत्री)
श्रेयांस, सुमित (दोहिता), स्व. बीजराजजी-स्व. मोरदेवी सेठिया (सास-ससुर)
स्व. उगमराज जी, स्व. अनोपचंदजी-प्रेमदेवी सेठिया (जेठ-जेठानी)
स्व. मूलीदेवी-स्व. मांगीलाल जी डूंगरवाल, छोटी खाटु (माता-पिता)
किरण-मोहनलालजी छाजेड़, विमला-हड़मानमलजी छाजेड़, बोरावड़ (ननद-नंदोई)
बिमला-भेकमचन्दजी धाड़ीवाल, उछब-सायरचन्दजी बेताला,
मुन्नी-अजीतमलजी भुरट (बहिन-बहिनोई)
लादूराम, रामदेव, भीकमचन्द, सुमेरचन्द डुंगरवाल (भाई-भ्राता)

Maruti Electricals

Authorised Dealers :
Anchor Roma, Legrand, Realty Automation, LK Fuga, 10, Gold Coin Apartment
Vakola Pipe Line, Santacruz (East) Mumbai - 400 055 (Maharastra)
Tel. : 022-26672555/28798074 | Mob. : 09323190356/09324190355/09819818817

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

महाप्रज्ञ-प्रबोध

मुख्यनियोजिका
साध्वी विश्रुतविभा

जैन विश्व भारती प्रकाशन, लाडनूं

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

प्रकाशक : जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं-३४१३०६
जिला : नागौर (राज.)
फोन नं. : (०१५८१) २२६०८०/२२४६७१
ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

© जैन विश्व भारती, लाडनूं

ISBN : 81-7195-245-3

प्रथम संस्करण : अगस्त २०१३
द्वितीय संस्करण : सितम्बर २०१३

मूल्य : ६०/- (साठ रुपया मात्र)

मुद्रक : पायोराईट प्रिण्ट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

प्रकाशक : जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं-३४१३०६
जिला : नागौर (राज.)
फोन नं. : (०१५८१) २२६०८०/२२४६७१
ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

© जैन विश्व भारती, लाडनूं

ISBN : 81-7195-245-3

प्रथम संस्करण : अगस्त २०१३
तृतीय संस्करण : सितम्बर २०१३

मूल्य : ६०/- (साठ रुपया मात्र)

मुद्रक : पायोराईट प्रिण्ट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

पुरोवाक्

परम पूज्य गुरुदेव आचार्य महाप्रज्ञ का जीवनवृत्त नौ दशकों का रहा। उनका जीवनकाल अनेक विभागों में विभक्त है। आत्मकथा आदि अनेक ग्रंथों के माध्यम से उनका अध्ययन किया जा सकता है।

मैंने 'महात्मा महाप्रज्ञ' ग्रन्थ का प्रणयन किया। उसमें गुरुदेव के सम्पूर्ण जीवन को न अति विस्तृत और न अति संक्षेप रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया। आचार्यप्रवर का लम्बा संयम पर्याय, बाहुश्रुत्य, साहित्यकारत्व, कवित्व, ध्यान साधना का अध्यवसाय और उपशम भाव आदि विशेषताओं से संपन्न जीवनवृत्त दूसरों के लिए भी आलोक प्रदान करने वाला था।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने संक्षेप में गुरुदेव के जीवनवृत्त को 'महाप्रज्ञ प्रबोध' में गुम्फित किया है। यह संगानात्मक स्वाध्याय में भी प्रयुक्त हो सकेगा और जीवनवृत्त के अनेक प्रसंग कंठस्थ भी हो सकेंगे। श्रद्धालु जन श्रद्धाभाव के साथ और बौद्धिक जन बौद्धिक भाव के साथ इसे पढ़कर लाभान्वित हों। शुभाशंसा।

लाडनूं
३० अगस्त २०१३

आचार्य महाश्रमण

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

अपनी ओर से

विकास का एक स्रोत है—प्रेरणा। प्रेरणा के पंख प्राप्त कर कल्पना को यथार्थ रूप देने के लिए कोई भी व्यक्ति उद्यत हो सकता है। मुझे भी एक दिन मध्याह्न में नई प्रेरणा के पंख मिले। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञजी को तुलसी प्रबोध की प्रति उपहृत की। आचार्यवर उस कृति का निरीक्षण कर रहे थे, शब्दों में निहित अर्थात्मा का साक्षात्कार कर रहे थे। कुछ ही क्षणों में मेरी ओर प्रश्नायित मुद्रा में देखा और फरमाया—'साध्वीप्रमुखा ने गुरुदेव के व्यक्तित्व और कर्तृत्व को उजागर करने के लिए 'तुलसी प्रबोध' की रचना कर दी। अब 'महाप्रज्ञ-प्रबोध' कौन लिखेगा?'

कुछ क्षण के लिए पूरे वातावरण में नीरव शांति और स्तब्धता छा गई। मौन प्रेरणा ने ही एक बल दिया। सकुचाते हुए पर दृढ़ संकल्प के साथ स्वतः ही शब्द मुखर हो गए—'गुरुदेव! मेरा लिखने का भाव है।'

तत्काल परमपूज्य आचार्यवर के मुखारविन्द से स्वीकृतिसूचक शब्द निकले—'हां, तुम लिख सकती हो।' बस, फिर क्या था? मुझे लक्ष्य तो मिल गया, किन्तु अपनी क्षमता के संदर्भ में मुझे भक्तामर स्तोत्र के श्लोक की स्मृति हो रही थी।

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम्।

आचार्य मानतुंग के इन शब्दों से मुझे बल मिल रहा था। भक्ति के भावों ने वेग दिया और आचार्य महाप्रज्ञ का विराट् रूप मेरे सामने उभरता चला गया और शब्दों में ढलता गया।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

मैं लक्ष्य तक कितना पहुंच सकी—इसकी मीमांसा करना प्रबुद्ध और तटस्थ समीक्षक का विषय बन सकता है किन्तु मेरे विचार निरंतर लक्ष्य तक पहुंचने के लिए गतिशील बने रहे—यह मेरे लिए आत्मतोष का विषय है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ विलक्षण महापुरुष थे। उनके स्वभाव में एक ओर झरने-सी निर्मलता, शिशु सी सरलता, सरस्वती-सी प्रतिभा, परमहंस सी निर्लेपता, महर्षियों सी आभा, एकलव्य सी एकाग्रता, गौतम सी विनम्रता के दर्शन होते तो दूसरी ओर जैन विद्वान्, दार्शनिक, कवि, साहित्यकार, चिंतक, अन्वेषक, प्रयोक्ता के अनेक रूप सामने आते। आचार्य महाप्रज्ञ के असीम व्यक्तित्व को उपमानों में बांधना सामर्थ्य से परे है। स्वयं गुरुदेव श्री तुलसी ने कहा था—महाप्रज्ञ को महाप्रज्ञ ही रहने दो।'

आचार्य महाप्रज्ञ को जानने, समझने व उनके सान्निध्य में जीने का जो स्वर्णिम अवसर मुझे मिला, उसी को स्मृति के धागों में पिरोने का मैंने संकल्प किया। संकल्प की पौध को पनपने के लिए खाद, हवा, पानी की जरूरत होती है, पर इनसे ज्यादा जरूरत होती है उसके अनुरूप ताप या उष्मा की। परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा प्राप्त अनुमति ने संकल्प-बीज का वपन किया।

स्मृतियों की ऊर्वरा भूमि, संस्मरणों की खाद, उत्प्रेरणा की पवन और शब्दों के जल से संकल्प-बीज अंकुरित होता गया। वीक्षा एवं समीक्षा ने नई ऊष्मा का संचार किया और 'महाप्रज्ञ प्रबोध' की रचना का संकल्प फलवान हो गया। प्रस्तुत कृति के घटना-संदर्भों का मुख्य स्रोत ग्रंथत्रयी रही—'यात्रा : एक अकिञ्चन की', 'महात्मा महाप्रज्ञ' और 'महाप्रज्ञ : जीवन-दर्शन'।

मैं श्रद्धानत हूं पूज्यपाद आचार्यप्रवर के प्रति, जिनकी वीक्षा ने इस लघुकाय कृति को वैशिष्ट्य प्रदान किया, जिनकी समीक्षा इस कृति के सौन्दर्य में निमित्त बनी, अपना मूल्यवान समय प्रदान कर जिन्होंने इस कृति में प्राण-प्रतिष्ठा की। प्राण-प्रतिष्ठा करने वाले चैत्यपुरुष को अन्तहीन नमन।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

प्रस्तुत कृति के लिए मैंने सकुचाते हुए मातृहृदया महाश्रमणी जी से उचित परिष्कार हेतु प्रार्थना की। बड़ी आत्मीयता से उन्होंने मेरे अनुरोध को स्वीकार किया। गुजरात और कच्छ की व्यस्ततम यात्रा में आद्योपान्त निरीक्षण किया, अपेक्षानुसार परिष्कार और परिवर्धन कर मेरा पथ प्रशस्त कर दिया, यह मेरे लिए सात्त्विक आह्लाद का विषय है।

शासन गौरव मुनिश्री धनंजयकुमारजी ने भी इस लघु कृति का समग्रता से अध्ययन किया। अपेक्षित सुधार व परिमार्जन में अपनी शक्ति, समय और श्रम का नियोजन किया। उनके प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती हूं।

'महाप्रज्ञ-प्रबोध' के संपादन में साध्वी मुदितयशाजी और समणी सत्यप्रज्ञाजी का उल्लेखनीय सहयोग रहा। प्रूफ निरीक्षण में आदरणीया साध्वीश्री जिनप्रभाजी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। समणी सौम्यप्रज्ञाजी ने प्रतिलिपि आदि कार्यों में निष्ठापूर्वक श्रम किया है।

लाडनूं (अमृतायन भवन) **मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभा**
१५ अगस्त २०१३

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

अनुक्रम

१. पुरोवाक्	३
२. अपनी ओर से	५
३. महाप्रज्ञ-प्रबोध	११
४. सांकेतिक प्रसंग	४७
५. विशेष शब्दकोष	१२२

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

महाप्रज्ञ प्रबोध

***तुलसी-पटधारी प्रज्ञापुरुष महा-अवतारी!**
मणिधारी मां बालू[1] रो नन्दन जन-मनहारी!
अर्पित चरणां में आस्था रो उपहार हो,
भक्ति रस है अविकार हो, जुड्यो सांसां रो तार हो,
प्रज्ञापुरुष महा-अवतारी।।

१

जन्मभूमि

शेखावाटी जिलो झूंझनूं चिहुं दिशि में सोनेला धोर,
सतयुग री सहनाणी मानो सतरंगो कस्बो टमकोर,
हो सुजना! विष्णूगढ़ नाम दूसरो[2] है श्रीकार हो॥

२

जन्म

आषाढ़ी तेरस बिद पख री गोधूली बेला आई,
आभै में उगतै सूरज-सी देखी अनुपम अरुणाई,
हो सुजना! खुल्लै आंगणियै जनम्यो देवकुमार हो॥[3]

३

चोर-चोर री आवाजां सुण पाडोसी दोड्या आया,[4]
सद्यजात शिशु उणिहारो लख चकित रह्या भाया बायां,
हो सुजना! उमड्यो उल्लास थाळ्यां री झंकार हो॥

***लय : खम्मा खम्मा हो अजमालजी रा कंवरा!**

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

४

बाह्य व्यक्तित्व

नैणां में निरखी निश्छलता तेजस्वी आभामण्डल,
सहज सौम्यता स्यूं अभिमंडित पुलकित रहतो मुखमण्डल,
हो सुजना! देह संपदा लख जन-जन घालै थुथकार हो॥

५

सहज सुकोमल सुघड़ हाथ अरु बै कूर्मोन्नत चरण-विशाल,
साक्षी सचमुच भाग्योदय रा लंबा कान भलकतो भाल,
हो सुजना! रूं रूं में खुशियां दीप्यो दिव्य दिदार हो॥

६

तिल त्रिशूल शुभ लक्षण व्यंजन पद्मरेख स्वस्तिक अहलाण,
सत्व सार स्वर कुल गुण उत्तम, प्रवर प्रमाण तथा उन्मान,
हो सुजना! श्रेष्ठ पुरुष रा मानक प्रकट्या होड लगार हो॥

७

परिवार

चोरड़िया कुल गौरवशाली, मां बालू तोलामल तात,
पारी, मालू दो बहनां रो नत्थू इकलोतो लघु भ्रात,
हो सुजना! बड़भागी सहज मिल्यो धार्मिक परिवार हो॥

८

पिता की भविष्यवाणी

पुण्य पूतळो जीव उदर में तू भागण जननी बणसी,
किंतु आउखो थोड़ो म्हारो जीवन रो दिवलो बुझसी,[५]
हो सुजना! सुख-दुख रो इक सागै अनुभव तिणवार हो॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

९

एक वज्रपात

बण विकराल काळ उतर्‌यो बालू रो उजड़ गयो संसार,[६]
ढाई माह रो सुत माता रै जिजीविषा रो दृढ़ आधार,
अवतरियो कुल में शिशु उम्मीद जगार हो॥
हो सुजना! आश्वासन भावी रो बालक सुकुमार हो॥

१०

संस्कार

ब्रह्म मुहूरत इमरत बेला 'भीखणजी रो समरण' गीत,[७]
सुण आस्था रा दिवला चसग्या प्रभु स्यूं जुड़ी अबोली प्रीत,
हो सुजना! मिलग्या झूलै में गुरुभक्ती संस्कार हो॥

११

खींयासर सरदारशहर में[८] बीत रह्यो भोळो बचपन,
'नानेरै को दही बाटियो' भरतो प्राणां में पुलकन,
हो सुजना! बचपन री सारी स्मृतियां हैं रसदार हो॥

१२

बचपन के प्रसंग

बाखळ में साथी संगलिया करता खेलण रो अभ्यास,
मानो नित नूआं प्रयोग स्यूं पायो सत्यशोध आभास,[९]
हो सुजना! शिशुवय में भण्यो नहीं विद्यालय जा'र हो॥

१३

गो-दोहन बेळा में नत्थू, दूध-फेन पीतो सोल्लास,[१०]
सुबह-शाम रो क्रम हो पक्को, लाड-प्यार री सहज सुवास,
हो सुजना! बणग्यो मस्तिष्क पुष्टता रो आधार हो॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१४

आंख बंदकर चाल सकूं मैं? चल्यो भींत स्यूं टकरायो,[११]
'खुलग्यो थारो भाग' बोल यूं पट्टी कर मां सहलायो,
हो सुजना! आंख तीसरी खुलणै री दस्तक दमदार हो॥

१५

योगी की भविष्यवाणी

इक अलबेलो योगी आयो बालक द्वय सिर हाथ धरै,[१२]
सात दिवस है इक रो जीवन, दूजो योगीराज अरे,
हो सुजना! सिद्ध पुरुष री वाणी सहज हुई सचकार हो॥

१६

कोलकाता की यात्रा

महानगर री भीड़भाड़, बिछुड्यो ना लाग्यो अतो पतो,[१३]
स्वर्ण सूत्र की करी सुरक्षा पहुंच्यो घर भमतो-भमतो,
हो सुजना! खुशियां रो उमड्यो बेहद पारावार हो॥

१७

जलपोत-यात्रा

नौका द्वारा मेमनसिंह की यात्रा रो अद्भुत उल्लास,[१४]
फूलवाड़िया री आपण में करज वसूली रो आयास,
हो सुजना! लघुवय में लगन लगा समझ्यो व्यापार हो॥

१८

वैराग्य

मुनि छबील, मुनि मूलचन्द रो चातुर्मासिक योग सुखद,
मिल्यो प्रेरणा-नीर अंकुरित हुयो विराग-बीज बरगद,[१५]
हो सुजना! समझ्यो संयम ही जीवन रो सिणगार हो॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१९

कंघो, दरपण तनै चाहिजै कियां बठै मिलसी भाई?
केशलोच होसी म्हांरो, जलपात्र दिखासी परछाई,[१६]
हो चाचा! महापंथ रो पथिक बणूं छोडूं घरबार हो॥

२०

गुरुदर्शन

मां चाचा सह कालूगणि-दर्शन हित गंगाणै प्रस्थान,
मुनि तुलसी है बड़ा दीपता भाग्यवान गुरु-कृपा महान,
दरसण करतां ही जुड़ग्यो दिल रो तार हो॥
हो सुजना! निरख्यो निजरां स्यूं बालक होनहार हो॥[१७]

२१

मां और बेटे का संवाद

मन री बात बताई 'मां! साधू बणणै री है इच्छा'
'म्हारै दिल री बात कही, सचमुच है श्रेयस्कर दीक्षा',
हो नत्थू! इन्द्रिय-निग्रह रो पथ तलवार दुधार हो'॥[१८]

२२

प्रतिक्रमण और दीक्षा का आदेश

गंगाणै में मां बालू सह वैरागी नथमल आयो,
पड़िकमणै री मिली आगन्या मनड़ो अतिशय सरसायो,[१९]
हो सुजना! भादासर इतिहास रच्यो दीक्षा फरमार हो॥[२०]

२३

दीक्षा

नौ वैरागी वैरागण में नत्थू साधिक दस वय बाल,
निज जननी सह दीक्षा लीन्ही, भंसाली रो बाग विशाल,
हो सुजना! परम कृपालू श्री कालू दीक्षा दातार हो॥[२१]

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

२४

विद्या गुरु की प्राप्ति

महिमामय कालू फरमायो—'नत्थू! जा तुलछू रै पास',[२२]
विनय समर्पण अनुशासन स्यूं लिया प्रगति रा नव उच्छ्वास,
हो सुजना! पाया शिक्षा गुरु तुलसी-सा दिलदार हो॥

२५

तुलसी की पोशाल

बाल साधु मिल भणै-गुणै है तुलसी री पोशाल में,
भावी रा आलेख अमोला लिख्या शिष्य रै भाल में,
हो सुजना! अनहद गुरु-किरपा, पायो नेह-दुलार हो॥[२३]

२६

मंथर गति स्यूं दसवेआलिय नवदीक्षित मुनि याद करै,[२४]
दैव और पुरुषार्थ योग स्यूं मेधावी बणकर उभरै,
हो सुजना! भाग्यविधाता श्री कालू-तुलसी किरदार हो॥

२७

सि-ति प्रश्न उभारी शंका कियां व्याकरण तूं पढसी?[२५]
शास्त्रां रो गंभीर ज्ञान कर किणविध तूं आगै बढ़सी,
हो सुजना! गुरुवर री गुरुता स्यूं फळग्यो सहकार हो॥

२८

कालू-कृपा प्रसाद

'हाबू बंगू वल्कलचीरी' नत्थू नै यूं बतलाता,[२६]
टेढ़ा-मेढ़ा कदम देख कर छोगां-सुत अति मुळकाता,[२७]
गांठ लगाई पछेवड़ी रै कित्ती बार हो॥[२८]
हो सुजना! कम्बल भेजी प्रभु मन में करुणा ल्यार हो॥[२९]

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

२९

बालपणै में कंठ सुरीला श्री कालू रै मन भाया,
मधुरी-मधुरी तान ध्यानमय सुण जन-जन मन हरषाया,
हो सुजना! पाई बक्सीस वत्सलता इजहार हो॥[३०]

३०

उच्चारण सिन्दूरप्रकर रो सायं प्रतिक्रमण पश्चात्,
अर्थबोध देता मुनि तुलसी सन्निधि गुरुवर री साक्षात्,[३१]
हो सुजना! दीन्हो उपदेश मुनि नथमल दोफार हो॥[३२]

३१

साध्वीप्रमुखा झमकूजी पूछै—क्यूं चंदेरी प्रस्थान?
बहिर्विहारी बण जास्यो फिर गुरुकुलवास नहीं आसान,[३३]
हो सुजना! तुलसी स्यूं न्यारो रहणो है दुश्वार हो॥

३२

करूं न कोई काम इसो मैं विद्यागुरु नाराज हुवै,
क्यूं अनिष्ट चिन्तन औरां रो, निज पर निज रो राज हुवै,[३४]
हो सुजना! जीवन हो सहज संतता रै अनुहार हो॥

३३

संत हेम रै संरक्षण में आंख्यां रो उपचार चल्यो,
जोधाणै स्वाध्याय-योग स्यूं भीतरलो दिवलो प्रजल्यो,
हो सुजना! जागृत अन्तश्चक्षू री धुर टंकार हो॥[३५]

३४

'सूयगडो री पढ टीका तूं उच्चारण सुणणो च्हावां,
लल्लर-पल्लर नहीं सुहावै सही बात म्हैं बतलावां',[३६]
हो सुजना! घोष-शुद्धि है शिक्षा रो प्रारंभिक द्वार हो॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

३५

'याद करो अध्याय आठवों' श्री कालू फरमान करै,
तन्मय बणकर घोक लगाई सफल देव अरमान करै,[३७]
हो सुजना! जैनागम समझण हित प्राकृत अनिवार हो॥

३६

छत पर थापी थेपड़ियां ज्यूं लागै कंवरां रा आखर,
रात-दिवस मेहनत कर पायो दो महीना में फल सुन्दर,
हो सुजना! पार्श्व-स्तोत्र लिख कहलाया चारु लिपिकार हो॥[३८]

३७

मुनि तुलसी का सान्निध्य

म्हारै सरखा बणस्यो के थे? विद्यागुरु ओ प्रश्न कर्‌यो,
'आप बणास्यो तो बण ज्यास्यूं' पूर्ण समर्पण भाव भर्‌यो,
हो सुजना! चोरड़िया महफिल बणगी यादगार हो॥[३९]

३८

प्रवचन सामग्री-संग्रह री करणी मांडी तैयारी,
नाराजी लख महर-नजर में ठेस लगी मन में भारी,
हो सुजना! तुलसी नै राजी करणो दुक्करकार हो॥[४०]

३९

आओ संतां! पाणी लेवण छप्पर नीचै पायो स्थान,
हुई शिकायत, चोट दुतरफी ओलम्भै स्यूं मनड़ो म्लान,
किणविध कर दी थे आज्ञा अस्वीकार हो॥
हो सुजना! मंत्रीश्वर बोल बण्या सहज्यां उपचार हो॥[४१]

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

४०

कालू पट्टोत्सव पर नयो छंद रच इमरत बरसायो,
शब्द-अर्थ गांभीर्य भर्‌यो पर नत्थू रे नहि मन भायो,
हो सुजना! कविता अब नहीं लिखूं पक्को इकरार हो॥[४२]

४१

कालूगणी का देवलोकगमन

छोटो-सो व्रण पीड़ादायक तीव्र वेदना बांयैं हाथ,
कुण जाण्यो प्राणान्तक बणसी स्वर्ग सिधासी यूं गणनाथ,
हो सुजना! अन्तर्धान हुई ज्योति सन्मार्ग दिखार हो॥

४२

मुनि तुलसी का पदाभिषेक

पाट बिराज्या तुलसी मुनिवर छात्रां रो मनड़ो मुरझ्यो,
कठै बैठस्यां उठस्यां सोस्यां चिंतन में चितड़ो उळझ्यो,
हो सुजना! गुरुवर समझाया सबनै निकट बुला'र हो॥[४३]

४३

अध्ययन का क्रम

संस्कृत प्राकृत भाषावां पढ़ गहरो शास्त्राभ्यास कर्‌यो,
ज्ञान-ध्यान री अलख जगाई कंचन कुंदन बण निखर्‌यो,
हो सुजना! रघुनंदन योग मिल्यो पहुंच्या गिगनार हो॥[४४]

४४

दर्शन का अध्ययन

नय-प्रमाण-निक्षेप समझ दरसण री गुथ्यां सुलझाई,
अनेकांत स्याद्‌वाद-न्याय स्यूं मापी जिनमत गहराई,
हो सुजना! जाणक कोइ सिद्धसेन रो पुनरवतार हो॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

४५

आगम का अध्ययन

आगम पढ्या पढ़ी टीकावां भाष्य चूर्णियां निर्युक्ति,
शक्ति नियोजन सत्य-शोध में सीखी नई-नई युक्ति,
हो सुजना! श्रुत दिवलो मेटै घट-घट रो अंधार हो॥

४६

तुलनात्मक अध्ययन

वेद उपनिषद् आगम त्रिपिटक ग्रंथां रो हो झीणो ज्ञान,
तुलनात्मक गहरै चिंतन स्यूं बणी विश्व में नव पहचान,
हो सुजना! आनंदित सब हुया देख मेधा मंदार हो॥

४७

टॉलस्टाय मार्क्स रस्किन लेनिन फ्रायड रो अनुशीलन,
व्यापक दृष्टि बणी जद कीन्हो ज्ञानाम्बुधि में अवगाहन,
हो सुजना! तर-तर चिंतन में आयो नयो निखार हो॥

४८

संस्कृत भाषा

कल्पवृक्ष संस्कृत भाषा रो गण उपवन में हर्‌यो-भर्‌यो,
श्री कालू रो सपनो साचो पौरुष प्रतिमा बण निखर्‌यो,
हो सुजना! लेखन-बोलण पर पायो वर अधिकार हो॥[४५]

४९

हिन्दी भाषा

परामर्श दस्साणीजी रो लिख्यो राष्ट्रभाषा में लेख,
सुणकर चकित देखकर निजरां घोर अमां में विद्युल्लेख,
हो सुजना! ल्याया हिन्दी भाषा री नई बयार हो॥[४६]

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

५०

पहलो लेख लिख्यो हिन्दी में सूक्ष्म 'अहिंसा' रो संदेश,[४७]
'जीव-अजीव' जिसी पोथी लिख सृजन क्षेत्र में कर्‌यो प्रवेश,[४८]
हो सुजना! बणग्या तात्त्विक बोलां रा व्याख्याकार हो॥

५१

'आत्मा नै नहि जाणूं मानूं' वाक्य बण्यो सहसा वातूल,
नास्तिक पूरा मुनि नथमलजी, क्षम्य कियां होवै आ भूल,[४९]
हो सुजना! केवल मान रह्या तब कुण है जाणणहार हो॥

५२

साझ व्यवस्था

'करो साझपति री वनणा' विश्रुत वसुगढ़ रो वर्षावास,
मान बढ्यो सारा संतां में निरख्यो गुरुवर रो उल्लास,
हो सुजना! बढ़ता ही रह्या सदा सबनै अपनार हो॥

५३

परिवर्तन

दो हजार पांच छापर पुर में प्रारम्भ्यो योगाभ्यास,
आयो नयो मोड़ जीवन में पल-पल आध्यात्मिक आयास,
हो सुजना! परिवर्तन-परिष्कार आयो अणधार हो॥[५०]

५४

केवल सतियां री गोष्ठी में नत्थू क्यूं बोलै गुरुवर!
प्रज्ञाबल पर मनैं भरोसो इण खातिर देवूं अवसर,[५१]
हो सुजना! ऊर्ध्वारोहण री तेज चली रफ्तार हो॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

५५

तुलसी युनिवर्सिटि

कुणसी युनिवर्सिटि में पढ्या भण्या थे बण्या बड़ा विद्वान्,
'तुलसी युनिवर्सिटि' सुण चौंक्या, कठै बताओ बो संस्थान?,
देखो बो आगै चालै मम कृतिकार हो॥[५२]
हो सुजना! कीन्हों मिट्टी स्यूं घट, गुरु-कुम्भकार हो॥

५६

कर्तृत्व की गूंज

प्रोफेसर नॉर्मन बोल्या—'सुणणो चाहूं प्राकृत भाषण'
'नथमलजी! बोलो, खोलो थांरी प्रज्ञा रो वातायन,'
हो सुजना! प्राकृत भाषा में प्रवचन ज्यूं जलधार हो॥[५३]

५७

संस्कृत महाविद्यालय प्रांगण अनेकान्त पर संभाषण,
झड़ी लगी तार्किक प्रश्नां री जाणक चर्चा समरांगण,
हो सुजना! संशयवाद न स्याद्वाद, आया समझार हो॥[५४]

५८

वाग्वर्धिनी सभा विलक्षण दिग्गज विद्वानां रो ठाठ,[५५]
पूना संस्कृत भाषा रो गढ़ कर्‌यो आशु कविता रो पाठ,
हो सुजना! छंद स्रग्धरा रचना सुण कवि चित्राकार हो॥[५६]

५९

विद्या परिषद् संगोष्ठ्यां में प्राच्य संपदा रो मंथन,
आयारो-भगवई आदि पर शोध पत्र चर्चा चिंतन,
अणचिंती होती प्रश्नां री बौछार हो॥
हो सुजना! महाप्रज्ञ पर देख्यो सारो दारमदार हो॥[५७]

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

६०

लोक कला मण्डल में जाता लेवण जैन कला शिक्षण,
सुण प्रश्नां री दीर्घ शृंखला विस्मित रहग्या दर्शक गण,
हुया समर्पित सब बहगी उलटी रसधार हो॥
हो सुजना! श्रद्धा स्यूं चरणां में नत आखिरकार हो॥[५८]

६१

साहित्य

गागर में सागर भर करता शब्दां रो समुचित विन्यास,
अति विशिष्ट लेखन री शैली विद्वानां रो अनुभव खास,
शब्द-अर्थ अभिव्यंजना रा शिल्पकार हो॥
हो सुजना! ग्रंथ सैकड़ां लिख्या अनूठा सिरजणहार हो॥

६२

वरदपुत्र मां सरस्वती रा ध्रुवतारा दर्शन युग रा,
प्रेमी पाठक और प्रयोक्ता अटलबिहारी-सा सखरा,[५९]
हो सुजना! मिल्यो अचिंतन स्यूं चिंतन रो नव उजियार हो॥

६३

कविता लेखन

पारायण गहरा ग्रंथां रो कविता लेखन में विश्राम,
काव्यात्मक स्फुरणा स्यूं खुलता चिन्तन रा प्रेरक आयाम,[६०]
हो सुजना! ऋषभायण महाकाव्य है रम्याकार हो॥[६१]

६४

प्रथम पृथक् चातुर्मास

बहिर्विहारी बण ठायो सरदारशहर पहलो पावस,
प्रस्फोटन कर्तृत्व शक्ति रो पायो पुर में घणो सुयश,
हो सुजना! मुख-मुख पर मुखरित मंजुल मृदु व्यवहार हो॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

६५

दिन में कर कंठस्थ, रात रामायण रो रसमय व्याख्यान,
परिषद् में विज्ञाता श्रोता सुणणै में रहता इकतान,
हो सुजना! वाणी कल्याणी बरसी धारासार हो॥[६२]

६६

आगम संपादन

बौद्ध धर्म रा पिटकां रै संपादन रो संवाद पढ्यो,
जैन आगमां रै संपादन रो प्रशस्त प्रारूप गढ्यो,
बोलो नथमलजी! के हो थे तैयार हो॥
हो सुजना! फरमायो गुरुवर तुलसी कृपा करार हो॥

६७

गुरु री अणमापी ऊर्जा स्यूं सब कुछ संभव हो ज्यासी,
सदा समर्पित गुरु-चरणां में करस्यूं जो प्रभु फरमासी,
हो सुजना! 'सृष्टी संकल्पजा' सूक्ती साकार हो॥[६३]

६८

दो हजार बारह रो पावस उज्जयिनी नगरी अभिराम,
च्यार मास तक चल्यो ठाठ स्यूं आगम संपादन रो काम,
हो सुजना! गुरु-आज्ञा मुनि नथमल निर्देशनकार हो॥[६४]

६९

मूलपाठ रो संशोधन, अनुवाद और संस्कृत छाया,
पाठान्तर, टिप्पण, व्याख्या, सम्पादन रा मौलिक पाया,
हो सुजना! हुवै न इणमें कदै मताग्रह रो संचार हो॥[६५]

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

७०

गुरुवर स्वयं वाचना देता रहता सम्पादन में लीन,
साधु-साध्वियां श्रेयोभागी श्रुत-आराधन में तल्लीन,
हो सुजना! आगम महायज्ञ में बणग्या भागीदार हो॥

७१

टिप्पण देख 'नियाग' शब्द रो महाप्राण स्यूं मिल्यो प्रसाद,
दवा विगय बगसीस कराई व्यक्त कर्‌यो अन्तर आह्लाद,
हो सुजना! समय-समय पर प्रोत्साहित करता जगतार हो॥[६६]

७२

पदयात्रा नियमित दिनचर्या सुलभ कठै हा संसाधन,
बिना रुक्यां अरु बिना थक्यां ही करता रहता संपादन,[६७]
हो सुजना! भरता प्रतिभा बल स्यूं जिनमत भण्डार हो॥

७३

जैनागम पर भाष्य लिख्या श्री संघदास जिनदासगणी,
भद्रबाहु रै क्रम में ओपै महाप्रज्ञ गण-मुकुटमणी,
हो सुजना! जैन धर्म में विरला एह्वा भाष्यकार हो॥[६८]

७४

समय प्रबन्धन

समय प्रबंधन कला अनुत्तर हर वासर रा तीन विभाग,
ज्ञान-शक्ति-आनंद साधना स्यूं जाग्यो अन्तर अनुराग,[६९]
हो सुजना! 'निःशेषम्' सूत्र सदा रखतो निर्भार हो॥[७०]

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

७५

व्यवस्था में सहभागिता

गण रै अन्तरंग कार्यां में अब थानै सागै रहणो,
जठै उचित आवश्यक लागै यथासमय खुलकर कहणो,
हो सुजना! 'आत्मा' में गण-हित चिन्तन साझीदार हो॥[७१]

७६

द्वितीय पृथक् चातुर्मास

दिल्ली चतुर्मास में पहलो लम्बो अणुव्रत शिविर सघन,
हरिभाऊ, जैनेन्द्र और यशपाल आदि सब कर्‌यो मनन,[७२]
हो सुजना! कियां हुवै नैतिकता रो बिरवो फलदार हो॥

७७

निकाय सचिव व्यवस्था

प्रवर निकाय व्यवस्था में प्रभु दियो निकाय सचिव रो स्थान,
गुरु चरणां कर पूर्ण समर्पण चढग्या प्रगति शिखर सोपान,
हो सुजना! मुनिवर रो कुरब बढ़ायो जोरदार हो॥[७३]

७८

मातृ मिलन

करी विदेह साधना माजी गंगाशहर हुयो स्थिरवास,
दरसण दिया पुत्र माता नै डेढ़ मास तक कर्‌यो प्रवास,
हो सुजना! ऋणो चुकायो मां रो सेवा फर्ज निभार हो॥

७९

च्यार तीर्थ री तीव्र प्रार्थना 'मुनिवर करो नहीं प्रस्थान',
चौमासो गुरु तुलसी सागै मां स्यूं पहलो गुरु रो स्थान,[७४]
हो सुजना! गुरुवर भवसागर पार लगावणहार हो॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

८०

'आत्मा भिन्न शरीर भिन्न' ओ मंत्र सहज साताकारी,
'देव दिराओ हस्तालम्बन' गीत सुणायो सुखकारी,[७५]
हो सुजना! सांस-सांस में मानो आत्मा री गुंजार हो॥

८१

मां की भविष्यवाणी

मुनि नथमलजी बणसी इक दिन तेरापथ शासन सम्राट,
मैं देखूं, नहि देखूं सतियां! निरखोला थे रूप विराट,
हो सुजना! सफल करी मां री वाणी बण गच्छाधार हो॥[७६]

८२

प्रेक्षाध्यान

जैन धर्म में ध्यान योग री परम्परा क्यूं लुप्त हुई?
जागै जिण स्यूं आत्मबोध बा शक्ति आज क्यूं सुप्त हुई?
हो सुजना! करणो है जैन योग रो पुनरुद्धार हो॥

८३

पढ्या योग रा ग्रंथ पुराणा, पहली खुद पर कर्‌यो प्रयोग,
प्रेक्षा-अनुप्रेक्षा, लेश्या, चैतन्यकेन्द्र रो शुभ संयोग,
हो सुजना! 'प्रेक्षा' पद्धति रो कीन्हो आविष्कार हो॥

८४

दीर्घ साधना रै अनुभव री निष्पत्ती है प्रेक्षाध्यान,
आधि-व्याधि री जड़ उपाधि है सफल चिकित्सा रो वरदान,
हो सुजना! अनुपम आधार बण्यो आगम 'आयार' हो॥[७७]

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

८५

जीवन विज्ञान

शिक्षा जग री यक्ष समस्या सुलझावै जीवन विज्ञान,
अभिभावक-शिक्षक-विद्यार्थी त्रिण आयामी ओ अभियान,
हो सुजना! संस्कारी बणसी भावी कर्णधार हो॥[७८]

८६

महाप्रज्ञ अलंकरण

मारग में शुभ शकुन सांतरा उभरी मन में जिज्ञासा,
सहसा 'महाप्रज्ञ' संबोधन जागी जन-जन में आशा,
हो सुजना! फैलाओ गण में प्रज्ञा सौरभदार हो॥[७९]

८७

गणवेदी पर कर्‌या प्रतिष्ठित पायो अतिशायी बहुमान,
'मैं म्हारो दायित्व निभायो' ना कोई पर भी अहसान,
हो सुजना! गुरुवर गुरुता में नहि उपचार लिगार हो॥[८०]

८८

युवाचार्य चयन

जिम्मेदारी आचार्यां री युवाचार्य रो मनोनयन,
गहरै पाणी पैठ करै सद्‌गुरु सर्वोत्तम शिष्य चयन,
हो सुजना! योग्य व्यक्ति नै सूंपै गणपति गण रो भार हो॥

८९

आद्यक्षर जिणरो 'मकार' 'पैंसठ वय' तेजस्वी श्रुतधर,
ओजस्वी वर्चस्वी होसी तुलसी गणिवर रा पटधर,
हो सुजना! शुभ भविष्यवाणी ज्योतिर्विद 'जय' अनुसार हो॥[८१]

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

९०

राजाणै मर्याद-महोत्सव रची भूमिका सहज सुखद,[८२]
युवाचार्य पद महाप्रज्ञ नै लोगां में अचरज अनहद,
हो सुजना! गूंज्या चिहुं दिशि बाढ स्वर जय-जयकार हो॥

९१

निज हस्ताक्षर स्यूं आलेखित मनोनयन रो पत्र पढ्यो,
धारित उत्तरीय ओढाकर गण में नव इतिहास गढ्यो,
हो सुजना! बैठाया निज आसन पर गण सरदार हो॥[८३]

९२

कर उद्घोषित युवाचार्य निश्चिन्त बण्या गुरुवर तुलसी,
च्यार तीर्थ मिल मोद मनायो बौद्धिक जनता भी हुलसी,
हो सुजना! अति सुन्दर निर्णय है जन-जन उद्गार हो॥

९३

प्रशासन-निदर्शन

ज्ञान-ध्यान में लीन अनवरत कियां करैला अनुशासन?
कोमल करुण हृदय मक्खन-सो कियां चलासी गण शासन?
हो सुजना! हुयो प्रशासन कौशल स्यूं संशय निस्तार हो॥

९४

दिल्ली रो बो दृश्य देखकर चिंतन री धारा बदली,
विस्फारित-सा नयन हजारां दिन में भी कोंधी बिजली,
हो सुजना! दीप्या शासन में कुशल प्रशासनकार हो॥[८४]

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

९५

शांति की मिसाइल

अणु परमाणू अन्वेषण कर दियो राष्ट्र नै इक अवदान,
लक्ष्य बणाओ अब 'कलाम'! कर शांति मिसाइल रो संधान,[८५]
हो सुजना! अस्त्र-शस्त्र स्यूं बणै पराङ्मुख अब संसार हो॥

९६

प्रज्ञापर्व आयोजन

योगक्षेम वर्ष आयोजन पावन प्रज्ञापर्व प्रकर्ष,
संघ चतुर्विध रो सुनियोजित बौद्धिक-आध्यात्मिक उत्कर्ष,
हो सुजना! महाप्रज्ञ आयोजना रा मूलाधार हो॥[८६]

९७

आगम आधारित विषयां पर प्रवचन वाचन मनहर दौर,
शाश्वत तथ्यां री व्याख्या सुण, जनता सारी हर्ष विभोर,
हो सुजना! वैज्ञानिक सोच प्रस्तुती धारफार हो।

९८

गुरु-शिष्य एकात्मकता

भिक्षु-भारमल जय-मघवा री जोड़ी शासन में विख्यात,
तुलसी-महाप्रज्ञ इण युग में महावीर-गौतम साक्षात,
हो सुजना! एकात्मकता शिष्य सुगुरु री मनहरणार हो॥[८७]

९९

मूल्यवान मणका अणगमता जिण में नहीं राम रो नाम,
तुलसी री मरजी स्यूं हटकर नहीं सुहातो कोई काम,[८८]
हो सुजना! 'तुलसी-तुलसी' नित जपता सांझ सवार हो॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१००

एक बार श्रुतिलेख लिख्यो मन में पायो गहरो आश्वास,
बोल्या सविनय श्री जोशीजी—'मैं गणपति, तू म्हांरो व्यास',
हो सुजना! धन्य हुई बै घड़ियां खुशियां रो अंबार हो॥[८९]

१०१

विश्व भारती चौमासा में कार्य अनूठो करवायो,
सब विध सक्षम युवाचार्य नै संघ प्रशासन संभलायो,
हो सुजना! बद्धांजलि सविनय इंगित अंगीकार हो॥[९०]

१०२

आचार्य पद

गुरु तुलसी रो महाविसर्जन अनुपमेय अलबेलो कार्य,
निज आचारज री सन्निधि में, युवाचार्य बणग्या आचार्य,
हो सुजना! 'गणाधिपति गुरुदेव' सीन अति शानदार हो॥[९१]

१०३

ऊंचो लक्ष्य बणा पद छोड्यो सेवा रो संकल्प महान,
'अकडं करिस्सामि' वृत्ती पर चरण कर्या प्रभुवर गतिमान,[९२]
हो सुजना! सुगुरु-शिष्य मिल दोन्यूं करता गगन विहार हो॥

१०४

तुलसी री आ सीख सतोली—महाप्रज्ञ शासन सिरमौर,
आज बण्यो निर्भार सूंप सक्षम हाथां में गण री डोर,
प्राणाधिक मानीज्यो इंगित आकार हो॥
हो सुजना! आज्ञा-निर्देश सब करज्यो स्वीकार हो॥[९३]

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१०५

आचार्य पट्टोत्सव

वर्तमान आचारज री है पट्टोत्सव री परम्परा,
महाप्रज्ञ पट्टोत्सव होसी क्यूं इणमें आरेक जरा,
कालू-पटधर रा अपना स्पष्ट विचार हो॥
हो सुजना! तुलसी-पट्टोत्सव री अब ना दरकार हो॥

१०६

नव चिन्तन निकल्यो निषेध स्यूं, नव उत्सव गण में स्थायी,
गुरु रो पाट-महोत्सव शाश्वत उत्सव रो दिन वरदायी,
हो सुजना! भैक्षव शासन में आई नई बहार हो॥

१०७

विकास महोत्सव

भाद्रव नवमी पट्टोत्सव नै मिल्यो विकास महोत्सव रूप,
लिख्यो नयो परिपत्र विलक्षण गण विकास रो अभिनव स्तूप,
हो सुजना! महाप्रज्ञ इण मोच्छव रा प्रारूपकार हो॥[९४]

१०८

विशेष प्रसंग

चंदेरी में पूछ्यो गुरुवर चालै किणरो बरतारो?,
बड़ै गरब स्यूं खुद बतलायो महाप्रज्ञ रो बरतारो,[९५]
हो सुजना! गणाधिपति री वाणी सुण विस्मित नरनार हो॥

१०९

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम सह पुस्तक लेखन अद्भुत काम,[९६]
घर परिवार राष्ट्र हित गुंफित पथदर्शक हर सूत्र ललाम,
हो सुजना! मिली प्रतिष्ठा सहज सिद्ध साहित्यकार हो॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

११०

विविध भाषाओं में साहित्य का अनुवाद

अंगरेजी, गुजराती, कन्नड़, तमिल, तेलगू, मलयाली,
पंजाबी, असमीज, मराठी, उड़िया, उर्दू, बंगाली,
हो सुजना! विविध प्रान्त री भाषा में अनुवाद उदार हो॥

१११

जरमन, रसियन, स्पेनिश, जापानी में पोथ्यां रो अनुवाद,[९७]
विज्ञ विदेशी जिन-दर्शन पढ़ प्राप्त कर्‌यो सात्त्विक आह्लाद,
हो सुजना! फैली दुनिया में कीरत अपरम्पार हो॥

११२

प्रवचन शैली

सहज मिल्यो संकेत सुगुरु रो बदलो अब प्रवचन शैली,
सरस सरल दिल छूणै वाली हुई विकस्वर अलबेली,[९८]
हो सुजना! पायो ज्ञानामृत सुण चैनल संस्कार हो॥

११३

पृथक मर्यादा महोत्सव

चाड़वास मोच्छब रो चिन्तन सचमुच हो इक नयो प्रयोग,
विजय-दुन्दुभि बजी सहज ही सार्थक सफल हुयो उद्योग,
हो सुजना! साखी गुरु शिष्य रो है पत्राचार हो।

११४

तुलसी में महाप्रज्ञ निहारो, महाप्रज्ञ में श्री तुलसी,[१०१]
तुलसी-महाप्रज्ञ इकतारी किणरी तुलना में तुलसी,
हो सुजना! हरखी जनता अद्‌भुत अद्वैत निहार हो॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

११५

तुलसी महाप्रयाण

क्यूं विधना बण गई बावळी गुरु-तुलसी रो महाप्रयाण,
स्तम्भित रहग्या सुणकर सारा कियां कठै कुण करसी छाण,
हो सुजना! लाखां आंख्यां में गंगा जमनाधार हो॥

११६

अथ स्यूं इति तक गणाधिपति रो साथ निभायो सांतरो,
अन्तर्मन स्यूं सदा समर्पित रह्यो कदै नहिं आन्तरो,
हो सुजना! निर्मल आभामण्डल दुख भंजनहार हो॥

११७

महाप्रज्ञ का संकल्प

गुरु तुलसी रै आयामां नै देणी अनहद ऊंचाई,
महाप्रज्ञ संकल्प साधना सागर सरखी गहराई,
हो सुजना! ल्याणो सब अवदानां में नयो उभार हो॥

११८

युवाचार्य का चयन

गण चिंता स्यूं मुक्त बण्या गंगाणै में गण रा सरताज,
ओढाई अपणी पछेवड़ी महाश्रमण गण रा युवराज,
हो सुजना! तुलसी की दिव्य दृष्टि गणपति निर्भार हो॥[१०२]

११९

युगप्रधान श्रुतधर आचार्यां री श्रेणी में प्रभु रो नाम,
जिन वाङ्मय सेवा में सार्थक महाप्रज्ञ पुरुषार्थ प्रकाम,[१०३]
हो सुजना! पूरबली पुण्याई रो साक्षात्कार हो॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१२०

पोपपाल से मिलन

रजधानी विज्ञान-भवन में अन्तर्धार्मिक परिसंवाद,
पोप पाल भी हुया प्रभावित जैन धर्म रो गूंज्यो नाद,[१०४]
दुनिया में शांति प्रेम रो मंत्रोच्चार हो॥
हो सुजना! शांतिपूर्ण जीवन शैली रो कर्‌यो प्रचार हो॥

१२१

जिण वय में स्थिरवास बसाणो उण वय में यात्रा री चाह,
बंय्यासी री ढलती वय में चढ़तै यौवन-सो उत्साह,
हो सुजना! तेज अहिंसा रो फैलायो विश्व मझार हो॥

१२२

विविध प्रदेशां री कर यात्रा खूब बढ़ाई गण री शान,
एम.पी., महाराष्ट्र, गुर्जर, दिल्ली, फिर आया राजस्थान,
हो सुजना! हरियाणो, पंजाब भक्तिरस स्यूं गुलजार हो॥

१२३

हिन्दु-मुस्लिम एकता

गांधी री धरती पर दंगा भय चिंता दहशत छाई,
कटुता बढगी समुदायां में गहरी नफरत री खाई,
हो सुजना! नगर शांति री चाबी रो अर्पित उपहार हो॥[१०५]

१२४

हिन्दू-मुस्लिम और प्रशासन री संगोष्ठ्यां नई पहल,
प्रेम और मैत्री स्यूं जीणै रो सार्थक संकल्प सफल,
हो सुजना! थामी सौहार्द समन्वय री पतवार हो॥[१०६]

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१२५

रथयात्रा

रथयात्रा पर रोक-टोक में हो ज्यासी शासन री भूल,
संदेशो उलटो जावैला सदा चुभैला बणकर शूल,
हो सुजना! परामर्श सचमुच समयोचित करग्यो कार हो॥[१०७]

१२६

मेयर रो अनुरोध मानकर स्वयं पधार्‌या करुणाकर,
रच्यो सवा सौ वर्षां में पहलो इतिहास जैन गुरुवर,
हो सुजना! शांतिपूर्ण रथयात्रा रा जन साक्षीदार हो॥[१०८]

१२७

सूरत घोषणा पत्र

मान्य राष्ट्रपति जन्म दिवस पर गुरुवर री सन्निधि पाई,
प्रथम नागरिक स्यूं सम्मानित प्रकटी प्रभुता पुण्याई,
हो सुजना! सोलह धर्मगुरां रो बो मोहक दरबार हो॥

१२८

सूरत रो सद्‌भाव घोषणा पत्र अनूठी एक नजीर,
नई सदी को मानव पावै सकल समस्यावां रो तीर,
हो सुजना! शिखर वारता नव युग रो नूतन आचार हो॥[१०९]

१२९

सर्वाधिक आयुवाले आचार्य

लांघी वय सब आचार्यां री मुंबई धूम मची सखरी,
तंय्यासी कृतियां लोकार्पित साहित्यिक आभा निखरी,[११०]
हो सुजना! 'सार्थक जीवन रा राज' इचरजकार हो॥[१११]

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१३०

समणश्रेणी का शतक

माला की इक लड़ी बणाई मणका पूरा इक सौ आठ,[११२]
जिनशासन री आब बढ़ाई देश विदेशां लाग्यो ठाठ,
हो सुजना! समण श्रेणि पर आजीवन रहसी आभार हो॥

१३१

बाल दीक्षा

छोटा-छोटा घणां दीपता टाबरिया आया चरणां,
अणमोलो संयम वर पायो वरणन नहि होसी वरणां,
हो सुजना! हंसता-खिलता सब रहता आर-बार हो॥

१३२

प्रोफेशनल फोर्म का निर्माण

प्रोफेश्नल फोरम स्यूं जुड़ग्यो तेरापथ रो बौद्धिक वर्ग,[११३]
देखी आस्था की ऊंचाई सिमट्या सहज्यां तर्क-वितर्क,
हो सुजना! गण-गतिविधियां रो ओ करसी खूब प्रसार हो॥

१३३

सापेक्ष अर्थशास्त्र

युनिवर्सिटी युनीक बणै या प्रतिकृति तक्षशिला साक्षात,
अर्थशास्त्र-सापेक्ष, अहिंसा चिंतन करणो जग विख्यात,[११४]
हो सुजना! सत्यं शिवं सुन्दरं आवै झट साभार हो॥

१३४

मैनुअल का निर्माण

'तेरापथ रो नयो मैनुअल' महाश्रमण! तैयार करो,
युग-अनुरूप प्रबंधन पूरो विधि-निषेध रो सार भरो,
हो गुरुवर! ल्यो 'अनुशासन संहिता' रो मुक्ताहार हो॥[११५]

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१३५

नए पद की सर्जना

मुख्य नियोजक अरु नियोजिका पद रो कर्‌यो नयो निर्माण,
गण में गौरवपूर्ण और सम्मानित है अै दोन्यूं स्थान,
हो सुजना! अंतरंग परिषद री रचना रो विस्तार हो॥[११६]

१३६

पुरस्कार

'इन्द्रा गांधी राष्ट्र एकता' पुरस्कार 'सद्‌भावना',
'धर्मचक्रवर्ती' उपाधि स्यूं गण री हुई प्रभावना,
हो सुजना! 'लोकमहर्षि' और 'महात्मा' तारणहार हो॥

१३७

सफल 'अहिंसा-यात्रा' मांही मिल्यो 'स्टेट गेस्ट' सम्मान,
'वल्डपीस मेसेन्जर' 'डी.लिट्' 'प्राकृत पण्डित' रो बहुमान,
हो सुजना! 'मदर टेरेसा' 'बेन दीवाली' स्यूं सत्कार हो॥[११७]

१३८

मेवाड़ यात्रा

घणै चाव स्यूं मगरां री धरती फरसण नै पधराया,
उदियापुर पावस मोच्छव आसीन्द कर्‌यो सब हरषाया,
हो सुजना! धरा केलवा करै प्रतीक्षा पलक बिछार हो॥

१३९

होळै-होळै चलतां-चलतां पहुंच्या गुरुवर टाड शिखर,
वात-पित्त री बढ़ी उग्रता, भारी बैचेनी भीतर,
हो सुजना! लाग्यो आवश्यक आमय रो प्रतिकार हो॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१४०

मेवाड़ी घाट्यां में चलणो तन पर श्रम री परछाई,
अनुभव उम्र करायो गहरो विश्रम री बेला आई,
हो सुजना! बदल्यो यात्रा-पथ करणो स्वास्थ्य सुधार हो॥

१४१

आचारज रो स्वास्थ्य संघ री अति अनमोल धरोहर है,
वरो प्रवर आरोग्य लाभ ओ संघ चतुष्टय रो स्वर है,
हो सुजना! जयपुर चौमासो पैंसठ बिन आसार हो॥

१४२

श्रीडूंगरगढ़ स्वाम पधार्‌या कर चंदेरी चातुर्मास,
मा'मोच्छब सानन्द पूर्ण कर मोमासर में दीर्घ प्रवास,
हो सुजना! शुभागमन पावस हित पावन पुर सरदार हो॥

१४३

सरदारशहर चातुर्मास

'महाश्रमण खातिर आया म्है' प्रवचन में प्रभु फरमायो,
पहलो पावस जन्म धरा पर करणो इंगित करवायो,[११८]
हो सुजना! समझ्या नहि रैस छिपी के होवणहार हो॥

१४४

समयबद्ध दिनचर्या सारी ना कोई आयो व्यवधान,
प्रवचन, लेखन, बातचीत में 'काले कालं' रो संधान,
हो सुजना! दाह लगी दो दिन पहलां सचमुच दुर्वार हो॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१४५

अन्तिम दिन

च्यार बजे उठकर झांझरकै ध्यान, जाप, स्वाध्याय कर्‌यो,
आसन-प्राणायाम सदा ज्यूं प्रातराश व्याख्यान कर्‌यो,
हो सुजना! अणुव्रत गोष्ठी आहूत करी गणधार हो॥

१४६

'प्रेक्षाध्यान पुस्तिका' पूरी, करल्यो श्री गुरुराज कह्यो,
लगभग सगला विषय लिखाया इक चैप्टर बस शेष रह्यो,
हो सुजना! गुरुवर रै मुख पर निरखी तुष्टि अपार हो॥[११६]

१४७

रह्या आखिरी पल तक जागृत जीवन री घटना सुविशेष,
अन्तस् दाह लगी भारी अब हुया संकुचित आत्मप्रदेश,
हो सुजना! पलक झपकतां स्वर्ग सिधार्‌या पालनहार हो॥

१४८

सात कदम री दूरी पर श्री युवाचार्य वाचन में लीन,
समणीगण, साधू-सतियां, सब सुणणै में गहरा तल्लीन,
हो सुजना! ल्याया संवाद मुनि रजनीशकुमार हो॥

१४९

तत्परता स्यूं युवाचार्यवर पूज्य कक्ष में कर्‌यो प्रवेश,
ऊंचे स्वर में संबोधन पर ना लाग्यो कुछ भी अवशेष,
हो सुजना! नियती रै आगै सब बेबस लाचार हो॥

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१५०

बिद बैसाखी ग्यारस मझदिन महाप्रज्ञ रो महाप्रयाण,
वैदिक परम्परा में इण दिन विरला जन पावै निर्वाण,[१२०]
हो सुजना! संवत उगणीसै सड़सठ सूर्यवार हो॥

१५१

युवाचार्य महाश्रमण सहित मुनि, महाश्रमणी आदि सतियां,
भाया बायां विरह-व्यथाकुल हुयो हादसो इयां-किंयां?
हो सुजना! आयू बल साम्है सगला मानी हार हो॥

१५२

एकादशम आचार्य

एकादशमां आचारज अब स्वतः बण्या है महाश्रमण,
गण री डोर हाथ में थामी उन्नति पथ पर बढ्या चरण,
हो सुजना! विधि-निषेध आज्ञा अनुशासन सूत्रधार हो॥

१५३

छप्पन संत युवाचारज सह इंगित आराधन तत्पर,
पैंसठ सतियां, दस समणीजी मुनिपति सेवा में हाजर,
हो सुजना! इक सौ इकतीस संख्या जोड़ मिलार हो॥

१५४

देवयान सी बैंकूठी रो सोलह घण्टा में निर्माण,
इकसठ खंडी मंडी ओपी लागै उतर्‌यो दिव्य विमान,[१२१]
हो सुजना! हेलीकॉप्टर स्यूं बरसाया कलदार हो॥[१२२]

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१५५

वायुयान स्यूं कलकत्ता मुंबई चेन्नई श्रावक आया,
होडाहोड लगी दरसण हित गुरुवर री पार्थिव काया,
लागी स्कूटर गाड्यां री दीर्घ कतार हो॥[१२३]
हो सुजना! जनता री भीड़ रो नहि आर-पार हो॥

१५६

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अरु चीफ मिनिस्टर भी आया,
विविध विभागां रा मंत्री मिल, श्रद्धांजलि देवण आया,[१२४]
हो सुजना! 'गार्ड ऑफ ऑनर' सम्मान कर्‌यो सरकार हो॥[१२५]

१५७

शिखर पर आरोहण

जनम्या उन्नीसै सतहत्तर सित्यासी संयम पर्याय,
दो हजार च्यार साझपति बाइसै में सचिव निकाय,
हो सुजना! पैंतीसै युवाचार्यपद लियो सं'भार हो॥

१५८

पच्चासै आचारज रो पद युगप्रधान पचपन री साल,
शिखर चढ़ाई गण री गरिमा बणकर धर्मसंघ री ढाल,
हो सुजना! स्वर्ग-गमन सड़सठ में नौका खेवणहार हो॥

१५९

ऐतिहासिक संरचना

'युवाचार्य उनसठ री वय में' तेरापंथ विरल इतिहास,
पचहत्तर में आचारज पद आयो गण-वन में मधुमास,
हो सुजना! संयम जीवन रो कीर्तिमान सुखकार हो॥[१२६]

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१६०

संघनीति अरु परम्परा संपोषक सदा रह्या गणनाथ,
नव उन्मेषां री स्याही स्यूं लिखी संघ री अनुपम ख्यात,
हो सुजना! बरत्यो शासन में जाणै चोथो आर हो॥

१६१

'उवसमसारं खलु सामण्णं' उदाहरण प्रभु रो जीवन,
ऋजुता मृदुता सहिष्णुता स्यूं मिलतो सबनै संजीवन,
हो सुजना! प्रतिबिम्बित रोम-रोम में पंचाचार हो॥

१६२

'ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरवे'* श्री महाश्रमण शुभ मंत्र दियो,
विघ्नविनायक शांतिप्रदायक सार्थक जीवन तंत्र दियो॥
सुमिरण स्यूं बण ज्यावै हिवड़ो अविकार हो॥
हो सुजना! आत्मसुरक्षा रो मानो अविचल प्राकार हो॥

---

*ॐ श्री महाप्रज्ञगुरवे नमः।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

परिशिष्ट

१. सांकेतिक प्रसंग

२. विशेष शब्दकोश

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

परिशिष्ट-१

सांकेतिक प्रसंग

१. मणिधारी मां बालू.....

कुछ बातें श्रद्धा से परे होती है, विश्वास से परे होती है किन्तु जो श्रद्धा या विश्वास से परे है, वह सत्य नहीं है—ऐसा नहीं कहा जा सकता। साध्वी बालूजी के अंतिम समय की घटना ऐसी ही है।

खेमचंदजी सेठिया की धर्मपत्नी गुलाबबाई ने मुनि नथमलजी को एक बात बताई—साध्वीश्री बालूजी ने जीवन के संध्याकाल में मेरे पिताश्री आसकरणजी चौपड़ा से कहा—'मेरे ललाट के मध्य भाग में रत्न है, मणि है। मृत्यु के बाद देख लेना।

गुलाबबाई ने अपने पिता से पूछा—'आपने दाह-संस्कार के समय उसे देखा या नहीं?'

आसकरणजी ने कहा—'हजारों की भीड़ थी। मैं देख नहीं सका। पर इतना मुझे अवश्य याद है—दाह संस्कार के समय एक पटाखा छूटने जैसी आवाज हुई। इस विषय में जो जागरूकता बरतनी थी, वह नहीं बरती जा सकी।

२. विष्णूगढ नाम दूसरो.....(१)

कहा जाता है कि टमकोर गांव में डाक की व्यवस्था बिसाऊ से संचालित होती थी। बिसाऊ से ही डाकिया आता और डाक बांटकर जाया करता था। सन् १९४६ में बिसाऊ के ठाकुर रघुवीरसिंहजी टमकोर आए तो गांव वालों ने उनके सामने यह समस्या रखी। समस्या के समाधान हेतु ठाकुर साहब ने छाजेड़ों की हवेली के नीचे के मकानों में डाकघर खुलवा दिया और उसका

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

नाम 'बिशनगढ़' (ठाकुर बिशनसिंहजी के नाम पर) रख दिया। बिशनगढ़ ही बाद में विष्णुगढ़ के रूप में प्रचलित हो गया। इस प्रकार इस गांव के दो नाम प्रचलित हो गए—विष्णुगढ़ और टमकोर। चूंकि अन्य सभी विभागों में टमकोर नाम ही चल रहा था इसलिए इसका नाम डाकघर में पुनः टमकोर डाल दिया गया।

३. खुल्लै आंगणियै जनम्यो देवकुमार.....(२)

झुंझनू जिले का टमकोर कस्बा। मंदिर, तालाब और पेड़-पौधों के बीच एक खुला-खुला सा घर। घर के पिछवाड़े में खुला आकाश। श्री तोलारामजी चोरड़िया की धर्मपत्नी बालूजी प्रस्रवण हेतु पीछे गई। बिना किसी विशेष शारीरिक पीड़ा के वहीं सहज प्रसव हो गया। मुक्त आकाश, मुक्त बदन। मुक्त रूप से समस्त आकाशीय ग्रहों के साथ नवजात का अनुकूल संपर्क स्थापित हो गया, निसर्गतः मुक्त आकाश को देखना ऊर्ध्वारोहण का माध्यम बन गया।

४. चोर चोर की आवाजां सुण.....(३)

मातुश्री बालूजी की कुक्षि से पैदा होने वाला यह नवजात उनकी पांचवी संतान था। अग्रजा दो बहनें अग्रज दो भाई। भाई दुनिया में आए पर ज्यादा रहे नहीं। तीसरे भाई की स्थिति भी वैसी ही न हो जाए इसीलिए नवजात शिशु की सुरक्षा हेतु कई विशेष उपचार किए गए। उनमें से एक था—बच्चे का जन्म होते ही उसकी बुआ ने छत पर चढ़कर जोर से शोर मचाया—चोर आ गया, चोर आ गया। चोरड़िया परिवार के लोगों ने सुना और लाठियां लेकर एकत्र हो गए। घर में आने पर उन्हें वास्तविकता की जानकारी हुई।

५. किंतु आउखो थोड़ो म्हारो.....(८)

चोरड़िया कुल के कुलभूषण तोलारामजी व बालूजी के मध्य संलाप में एक दिन तोलारामजी ने बालूजी को कहा—'तुम एक पुत्र को जन्म दोगी। मैं उसके जन्म के बाद अधिक समय तक नहीं रहूंगा।' बालूजी ने तत्काल कहा—'ऐसा बेटा मुझे नहीं चाहिए, जिसके आने पर आप न रहे।'

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

६. बण विकाराल काल उतर्‌यो.....(९)

नियति के योग का परिहार नहीं किया जा सकता। बालक ढाई मास का हुआ और पिता दिवंगत हो गए। पिता के चले जाने पर परिस्थितियों का भार कम नहीं था पर मां के कंधे मजबूत थे। हालांकि उस युग में दैनिक आवश्यक वस्तुएं बहुत सुलभ और सस्ती थी। खानपान, रहन-सहन सब कुछ बहुत कम खर्चीला था, फिर भी पिता का न होना परिवार के लिए अपूरणीय क्षति था।

७. भीखणजी रो समरण..... (१०)

शिक्षा जीवन भर चलने वाला अनौपचारिक उपक्रम है। जन्म के साथ शुरू हुआ यह सफर जीवन के हर मोड़ पर साथ रहता है। शिक्षा के इस आयाम में प्रथम शिक्षिका मां ही होती है। मां की हर एक क्रिया अनायास ही बच्चे के भीतर कुछ न कुछ संप्रेषित करती रहती है। मां बालूजी की गतिविधियों का प्रभाव नवजात बालक नत्थू के अवचेतन पर अंकित होता रहा। ब्रह्मबेला में मां की भक्ति प्रधान स्वर लहरियां वातावरण में तरंगित होती। चौबीसी, आराधना, संत भीखणजी का सुमिरण आदि गीतों के माध्यम से मां की भक्तिरस भरी स्वर-धारा बहती और पास में अधसोए, अधजगे बालक की हृत्तंत्री थिरक उठती। अनायास एक तार सा जुड़ गया भिक्षु से, भिक्षु के जीवन से और भिक्षु के दर्शन से। समय के साथ यह तार सघन और सघनतम होता गया।

८. खींयासर सरदारशहर में.....(१०)

बालक नथमल के ननिहाल पक्ष का बच्छावत परिवार खिंयासर रहता था। पिता तोलारामजी के स्वर्गवास के बाद मां बालूजी अपनी संतान को लेकर अपनी मां के पास चली गई। उस समय यह विवेकपूर्ण निर्णय था। बालक का लालन-पालन ननिहाल के स्वतंत्र वातावरण में जैसा हो सकता था, वैसा शायद पितृपक्ष में संभव नहीं था। बच्छावत परिवार के पास बहुत जागीर, खूब खेती, खूब गाएं थी। मां बालूजी अपने पुत्र के साथ करीब ढाई साल तक अपने पीहर रही और फिर टमकोर आ गई।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

९. मानो नित नूआं प्रयोग स्यूं.....(१२)

व्यक्ति के वर्तमान के क्रिया-कलाप को देखकर उसके भविष्य का अनुमान लगाया जा सकता है। बालक नथमल बचपन से ही वैज्ञानिक अभिरुचि वाला और सत्यशोध के प्रति जिज्ञासु था। लघुवय में अपने मित्रों के साथ मिलकर बालोचित क्रीड़ा करता। उनकी क्रीड़ा का अंग था—दियासलाई की दो डिब्बियों को एक लंबे धागे से बांध देता। कुछ दूरी पर खड़े होकर एक दूसरे की बात को सुनने का प्रयत्न करता। कभी कभी दहलीज पर लोह की शलाका चलाते और उससे उत्पन्न होनेवाली ध्वनि को सुनने का प्रयत्न करते।

छत पर वर्षा का पानी इकट्ठा होता, पानी के बुलबुले बनते। बालक नथमल के मन में प्रश्न होता कि बुलबुला कौन बना रहा है? बुलबुला कैसे बन रहा है? ऐसे अनेक प्रश्न बालक के मानस पटल पर उभरते। इसी जिज्ञासु वृत्ति ने सत्य-शोध की गहराई में प्रवेश करने का मार्ग प्रशस्त किया।

१०. गो-दोहन बेला में.....(१३)

बालक नथमल के दो बहनें थी—१. माली बाई २. पारीबाई। बड़ी बहन मालीबाई का विवाह चूरू के बैद परिवार में हुआ था। वे बहुत सौम्य प्रकृतिवाली थी। बहुत कम बोलती थी। अपने इकलौते भाई के पालन-पोषण का बहुत ध्यान रखती थीं। छोटी बहन पारीबाई थी। उनका स्वभाव बहुत मृदु नहीं था, किन्तु अपने भाई पर अत्यधिक स्नेहभाव रखती थी।

उस समय प्रायः घरों में गायें होती थीं। बालूजी के घर में भी गाय थी। मालीबाई (साध्वी मालूजी) गाय का दूध दूहती। बालक नथमल अपने हाथ में कटोरा लेकर उनके पास बैठ जाता। दूध दोहन से पात्र में जो झाग आते, उनसे बालक का कटोरा भर देती। वह फेनिल दूध बालक वहीं पी लेता।

परम श्रद्धेय आचार्य महाप्रज्ञजी अनेक बार फरमाते—ढाई वर्ष तक मुझे अन्न खाने को नहीं दिया, केवल दूध पर ही मेरा पालन-पोषण हुआ। संभव है, यही पयःपान आचार्यवर की मस्तिष्कीय पुष्टता में निमित्त बना हो।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

११. आंख बंदकर चाल सकूं मैं.....(१४)

बालक नथमल के बहन की शादी का प्रसंग था। घर मेहमानों से भरा था। पारिवारिकजन उनके आतिथ्य में व्यस्त थे। सभी अपने-अपने कार्यों में लगे हुए थे। बालक स्वभावतः चंचल होता है। नथमल ने कुतूहलवश अपनी आंखों पर पट्टी बांधी और अपने घर में चलना शुरू किया। जैसे ही बालक दरवाजे के पास पहुंचा, सहसा सिर दीवार से टकरा गया। ठीक उसी स्थान पर चोट लगी, जो पीनियल ग्लैण्ड, ज्योति केन्द्र का स्थान है। बालक के सिर से खून बहने लगा, रोते-रोते मां के पास पहुंचा। मां ने सहलाया, डांटा और सिर पर पट्टी करते हुए कहा—आज तेरा भाग्य खुल गया, रो मत, सब ठीक हो जाएगा। मां के स्नेहिल शब्दों से बालक आश्वस्त हो गया। संभव है, यह घटना बालक के तीसरे नेत्र-जागरण (अतीन्द्रिय चेतना) का निमित्त बनी हो।

१२. इक अलबेलो योगी आयो.....(१५)

एक दिन बालक नथमल अपने साथी बच्चों के साथ घर के अहाते में खेल रहा था। एक व्यक्ति आया और एक बच्चे के सिर पर हाथ रखते हुए बोला—यह सात दिन के बाद इस दुनिया से विदा हो जाएगा। तत्पश्चात् बालक नथमल की ओर मुड़ा, उसके सिर पर हाथ रखकर बोला—'यह बच्चा योगीराज बनेगा।'

उसकी बातें सुनकर बच्चे घबरा गए। वे योगी का अर्थ नहीं जानते थे पर मौत का अर्थ जानते थे। बच्चों की बात बड़ों तक पहुंची किन्तु किसी का भी इस ओर ध्यान केन्द्रित नहीं हुआ। सप्ताह बीतने के साथ ही वह साथी इस संसार से चल बसा। तब लोगों का ध्यान उस भिक्षु व उसकी भविष्यवाणी की ओर गया। उसे खोजने का प्रयत्न किया गया पर कुछ पता नहीं चला।

१३. महानगर री भीड़भाड़.....(१६)

मेमनसिंह गांव (पाकिस्तान का एक कस्बा) में नथमल की चचेरी बहन (मां की पालित पुत्री) का विवाह था। उसमें सम्मिलित होने चोरड़िया परिवार के कुछ सदस्य जा रहे थे। उनके साथ बालक नथमल भी था। जाते वक्त कलकत्ता में अपनी बुआ के यहां कुछ दिन ठहरे। चाचा पन्नालालजी और

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

मुनीम शादी के लिए कुछ आवश्यक सामान लाने बाजार जा रहे थे। बालक नथमल भी उनके साथ जाने के लिए तैयार हो गया। वह पहली बार ही कलकत्ता गया था। वहां की बहुमंजिली इमारतें, बड़े-बड़े बाजार, चकाचौंध करने वाली दुकानों ने उसको मंत्रमुग्ध कर लिया। नथमल देखने में इतना मग्न हो गया कि उसे न अपना भान रहा, न अपने साथ आए व्यक्तियों का। नथमल मुग्धभाव से चारों तरफ एकटक देख रहा था इसीलिए साथ जाने वाले व्यक्तियों का उसे पता ही नहीं चला।

कुछ समय पश्चात् जब मनोरम दृश्यों से ध्यान छूटा तो देखा कि मैं तो अकेला रह गया हूं। न चाचा है, न मुनीम। न यह पता कि किस मार्ग से जाना है, न कोठी का नाम-पता है। कोई चेहरा भी परिचित नहीं। बाहर का कोई साथी या मार्गदर्शक सामने न था। उस समय अन्तश्चेतना ने ही मार्गदर्शक की भूमिका निभाई। भीतर से ही मार्गदर्शन और उसके क्रियान्वयन की क्षमता अभिव्यक्त होने लगी। अपने को अकेला जान सबसे पहले सुरक्षात्मक कार्य किया—अपने गले से स्वर्ण सूत्र निकाला, हाथ की घड़ी खोली और दोनों को अपनी जेब में डाल दिया। उसके बाद पीछे मुड़ा, चलता रहा, चलता रहा और अपने घर पहुंच गया। उधर चाचाजी नथमल को न पाकर चिंतित हुए। उन्होंने बच्चे को खोजने की दौड़-धूप की। पूरा बाजार छान लिया पर नथमल नहीं मिला। आखिर पुलिस स्टेशन पर गुम होने की रिपोर्ट लिखाई। वे निराश होकर लौट आए। दरवाजे से ही जोर-जोर से बोलना शुरू किया—'नत्थू हमसे बिछुड़ गया। उसका पता ही नहीं चला।' उनकी परेशानी के सामने उनकी बहन कुछ क्षण मौन रही, फिर नथमल को सामने लाकर खड़ा कर दिया। पारिवारिक जनों के मुरझाए चेहरे खिल गए। सबने पूछा—तू यहां कैसे पहुंचा? बालक नथमल के पास इसका कोई उत्तर नहीं था।

१४. नौका द्वारा मेमनसिंह की.....(१७)

कोलकाता से पारिवारिक जनों के साथ नत्थू जलपोत से मेमनसिंह गया। वहां विवाह का कार्य सम्पन्न होने के पश्चात् बालक नथमल को फुलवाड़िया ले जाया गया। वहां पिता तोलारामजी की दुकान थी। उनके स्वर्गवास के बाद मुनीम उसकी देखभाल कर रहे थे। उस समय मालिक के बिना भी मुनीम

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

ईमानदारी के साथ सारा काम करते थे। वे आसपास के गांवों में 'बाकी' (उधार) वसूल करने के लिए बालक नथमल को ले जाते थे। ग्रामीण लोग 'बाबू तोलाराम का पुत्र आया है' यह जानकर प्रेमपूर्वक स्वागत करते। उनका प्रेम देखकर बालक गद्‌गद हो जाता। उनसे मांगने की बात ही भूल जाता। बालक वहां आसपास के गांवों में घूमकर व्यापार संबंधी कार्य संपन्न कर फिर फुलवाड़िया आ गया। फुलवाड़िया से नौका की यात्रा कर प्राणगंज गया, वहां से मेमनसिंह और फिर टमकोर (राजस्थान) की ओर प्रस्थान कर दिया।

१५. मिल्यो प्रेरणा-नीर.....(१८)

बालक नथमल के जीवन का दसवां वर्ष चल रहा था। उस समय मुनि छबीलजी का चतुर्मास टमकोर में था। उनके सहवर्ती मुनि मूलचन्दजी ने बालक को तत्त्वज्ञान सीखने के लिए प्रेरित किया। एक दिन मुनिद्वय ने बालक को मुनि बनने की प्रेरणा दी। बालक का अन्तःकरण झंकृत-सा हो गया। जैसे कोई बीज अंकुरित होना चाहता हो और उस पर पानी की फुहारें गिर जाए।

१६. कंघो दरपण तनै चाहिजै.....(१९)

बालक नथमल के भीतर वैराग्य के अंकुर प्रस्फुटित हो रहे थे। उसकी भावना आस-पास के परिजनों तक पहुंची। उन्होंने भी बालक को लुभाने के विविध प्रयत्न किए। एक दिन चाचा बालचंदजी ने कहा—तुम हमेशा अपने पास दर्पण और कंघी रखते हो। दिन भर बाल संवारते-सजाते हो। साधु जीवन में तुम्हें ये कैसे मिलेंगे? तब तुम क्या करोगे?

बालक नथमल ने कहा—पात्र में पानी रहेगा, उसमें मुंह देख लूंगा और केशों का तो लुंचन हो जाएगा।

बालचंदजी ने कहा—साधु को तो पैदल चलना पड़ता है, तुम कैसे चलोगे?

नथमल—मैं अभी चार कोस चल सकता हूं।

बालचंदजी—साधु बनने के बाद केशलुंचन कर लोगे?

नथमल—मैं अभी करके दिखा सकता हूं।

बालचंदजी—तुम्हें दीक्षा देने से भाई तोलारामजी का वंश कैसे चलेगा?

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

नथमल—बाबाजी! गोपीचंदजी का वंश कैसे चलेगा? महालचंदजी को कहां से लाओगे?

बालक से युक्तियुक्त उत्तर पाकर बालचंदजी मौन हो गए।

१७. मां चाचा सह.....(२०)

बालक नथमल और उसकी मां बालूजी के मन में वैराग्य-जागरण के पश्चात् पूज्य कालूगणी के दर्शन करने का निश्चय किया। मुनि छबीलजी के सहयोगी संत मुनि मूलचंदजी (बीदासर) संघ और संघपति के प्रति सर्वात्मना समर्पित थे। जब बालक नथमल, उसके चाचा और मां अष्टमाचार्य कालूगणी के दर्शन करने गंगाशहर जाने लगे तो मुनि मूलचंदजी बोले—'नत्थू! तुम गुरुदेव के दर्शन करने जा रहे हो, वहां मुनि तुलसी के दर्शन जरूर करना।'

उस वर्ष (संवत् १९८७) कालूगणी का चातुर्मास गंगाशहर था। उनका प्रवास भैंरूदानजी चोपड़ा के पुत्र लूणकरणजी चोपड़ा की हवेली में था। उस हवेली की छत पर एक कमरा था। कमरे के पास ऊपर जाने की सीढ़ियां थीं। मुनि तुलसी उन सीढ़ियों में ऊपर बैठे थे। वहां बालक नथमल आया और बोला—'तुलसीरामजी स्वामी कौन हैं?'

मुनि तुलसी—'क्यों भाई! उनसे तुम्हें क्या काम है?'

बालक नथमल—'मैं अपनी मां के साथ टमकोर से आया हूं। हम दोनों वैरागी हैं। मुनि मूलचंदजी ने मुझे उनके दर्शन करने के लिए कहा है।'

मुनि तुलसी से परिचय हुआ। परिचय पाकर बालक को अपनी मंजिल मिल गई, उसके हृदय का तार जुड़ गया। प्रथम साक्षात्कार में मुनि तुलसी को लगा कि बालक भोला-भाला-सा दीखता है, पर है होनहार।

१८. मन री बात बताई.....(२१)

एक दिन मां और पुत्र ने परस्पर वार्तालाप किया। पुत्र ने अपनी मां से कहा—मैं मुनि होना चाहता हूं।

मां ने कहा—मैं भी साध्वी बनना चाहती हूं पर तुमने कभी सोचा है—कितना कठिन है यह मार्ग और कितनी कठिन है इसकी साधना!

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१९. पडिकमणै री मिली आगन्या.....(२२)

बालूजी ने अपने देवर पन्नालालजी से कहा—हमें आचार्यश्री के दर्शन करने हैं। पन्नालालजी ने बालूजी और बालक नथमल को साथ लेकर गंगाशहर की ओर प्रस्थान किया। उस समय तेरापंथ के अष्टम आचार्य पूज्य कालूगणी श्री लूणकरणजी चोपड़ा की हवेली में चातुर्मासिक प्रवास कर रहे थे। तीनों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। प्रवचन सुना। कार्यक्रम के मध्य खड़े होकर बालक नथमल ने दीक्षा की प्रार्थना की। उधर बालूजी भी खड़ी हो गई और दोनों के लिए दीक्षा की स्वीकृति मांगने लगी। अभिभावक के रूप में पन्नालालजी वहां उपस्थित थे। वि. सं. १९८७, कार्तिक महीने में पूज्यप्रवर ने दोनों को साधु प्रतिक्रमण सीखने की अनुमति प्रदान कर दी।

२०. भादासर इतिहास रच्यो.....(२२)

घर की समग्र व्यवस्था करने के बाद मां बालूजी और पुत्र नथमल दोनों कालूगणी के दर्शन करने गए। उस समय कालूगणी श्रीडूंगरगढ़ और सरदारशहर के बीच भादासर गांव में विराज रहे थे। सांझ के समय पूज्य कालूगणी एक तिबारी के मध्यवर्ती द्वार में विराज रहे थे। उसके बाहर सेठ गणेशदासजी गधैया उपासना कर रहे थे। बालक नथमल आगे आया, गधैयाजी ने वात्सल्य से अपनी गोद में बिठा लिया। बालक नथमल ने गुरुदेव से प्रार्थना की—मुझे दीक्षा का आदेश दें।

गुरुदेव—दीक्षा कौन लेगा?

बालक नथमल—मैं और मेरी मां।

गुरुदेव—पहले तुम ले लो। तुम्हारी मां के लिए फिर सोचेंगे।

बालक नथमल—दोनों साथ ही लेंगे। मां को छोड़कर दीक्षा नहीं लूंगा।

गुरुदेव ने दो बार फरमाया पर बालक अपनी बात पर दृढ़ रहा।

गुरुदेव—तो साथ में लेना है?

बालक नथमल—हां।

गुरुदेव—ठीक है, माघ शुक्ला दशमी के दिन तुम दोनों की दीक्षा हो जाएगी।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

दीक्षा की स्वीकृति प्राप्त कर मां और पुत्र दोनों प्रसन्न हो गए। उस दिन वहां रुके और फिर टमकोर चले गए।

२१. नौ वैरागी वैरागण में.....(२३)

वि.सं. १९७७, माघ शुक्ला दशमी, भैरुंदानजी भंसाली का बाग, सरदारशहर। पूज्य कालूगणी साधु-साध्वियों के साथ वहां पधारे। बालक नथमल आदि सभी दीक्षार्थी अपने पारिवारिक जनों के साथ वहां पहुंचे।

पूज्य कालूगणी के द्वारा उस समय दीक्षित होने वाले नौ साधु-साध्वियों के नाम इस प्रकार हैं–

१. मुनि चौथमलजी, सरदारशहर
२. मुनि खेतसीजी, श्रीडूंगरगढ़
३. मुनि नथमलजी, टमकोर
४. साध्वी बालूजी, टमकोर
५. साध्वी आसांजी, लाडनूं
६. साध्वी लिछमांजी, सरदारशहर
७. साध्वी छगनाजी, नोहर
८. साध्वी मनोहरांजी, सरदारशहर
९. साध्वी पिस्तांजी, जमालपुर

२२. महिमामय कालू फरमायो.....(२४)

वि.सं. १९८७, माघ शुक्ला दशमी, सरदारशहर, भंसालीजी का बाग। अष्टमाचार्य परम पूज्य कालूगणी ने मंत्रोच्चार के साथ बालक नथमल व उनकी माता बालूजी का दीक्षा संस्कार कराया। वहां से प्रस्थान कर पूज्यश्री अपने प्रवास स्थल–गधैयों के नोहरे में पधारे। दक्षिण दिशा में बने कमरे के पीछे नाल में कालूगणी टहलने लगे। नवदीक्षित मुनि नथमल उनके निकट खड़ा था। गुरुदेव ने बाल मुनि नथमलजी से कहा–'नत्थू! तुझे तुलसी के पास रहना है, पढ़ना है और यह जैसा कहे, वैसा करना है। गंगाशहर में अज्ञात की उर्वरा में जिस बीज का वपन हुआ था, उसे अब अंकुरित होने का अवसर उपलब्ध हो गया।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

२३. अनहद गुरु-किरपा.....(२५)

मुनि तुलसी प्रमाद होने पर उपालम्भ देते और अच्छा कार्य करने पर साधुवाद देते। बाल मुनि नथमल के प्रति मुनि तुलसी का अत्यधिक वात्सल्य भाव था। छापर की घटना है। एक दिन मुनि तुलसी ने बाल मुनि को कहा—'आज तुम्हें विगय नहीं खानी है।' यह एक भूल का प्रायश्चित्त था। बाल मुनि के जीवन का यह पहला प्रसंग था। आहार का समय हुआ। मुनिश्री चंपालालजी, मुनि तुलसी और बाल मुनि नथमल—तीनों एक साथ आहार करते। गोचरी में आम का रस आया। बाल मुनि नहीं खाए और मुनि तुलसी खाए—यह मुनि तुलसी को अच्छा नहीं लगा। मुनि तुलसी ने बाल मुनि को इशारा किया—'तुम आम रस खाओ।'

बाल मुनि ने कहा—'नहीं खाऊंगा। आपने ही मुझे कहा था कि तुम्हें विगय नहीं खानी है।' बालमुनि अपनी बात पर अड़ गए।

बीस-पचीस साधुओं की उस मंडली में मुनि तुलसी ने बाल मुनि को शब्दों से कुछ नहीं कहा, किन्तु इशारों से खाने के लिए विवश कर दिया। आखिर बाल मुनि ने अपना बालहठ छोड़ दिया। ऐसे स्नेह और वात्सल्य के अनेक प्रसंग बाल मुनि के जीवन में घटित हुए हैं, जिन्हें सुनकर आह्लाद की अनुभूति होती है।

२४. मंथर गति स्यूं.....(२६)

बाल मुनि नथमल के अध्ययन का प्रारंभ प्राकृत भाषा के जैन आगम दसवैकालिक सूत्र से हुआ। उसमें मुनि की जीवन-यात्रा का सांगोपांग निरूपण किया गया है। प्रारंभ में बाल मुनि का अध्ययन बहुत मंथर गति से चला क्योंकि मन अध्ययन में नहीं लगता था। पूरे दिन में मुश्किल से दो-तीन श्लोक कंठस्थ कर पाते थे। इस मंथर गति से पूज्य कालूगणी और मुनि तुलसी दोनों ही प्रसन्न नहीं थे। वे चाहते थे कि मुनि नथमल त्वरित गति से आगे बढ़े। अपरिचित से परिचित होने में प्रारंभिक कठिनाई होती ही है। मुनि नथमल ने भी उस कठिनाई का सामना किया किंतु वह कठिनाई शीघ्र ही दूर हो गई। उनकी सीखने की गति तेज हो गई और वे प्रतिदिन आठ-दस श्लोक कंठस्थ करने लगे।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

२५. सि-ति प्रश्न उभारी शंका.....(२७)

तेरापंथ धर्मसंघ में शैक्ष साधुओं को संस्कृत व्याकरण में प्रवेश करने के लिए मुनि चौथमलजी के द्वारा प्रणीत 'कालुकौमुदी' को कंठस्थ कराया जाता है। तत्कालीन शैक्ष साधुओं ने उसका पाठ याद करना शुरू किया और उसकी साधनिका भी प्रारंभ की। मुनिश्री की गति मंद थी। मुनिश्री के सहपाठी कालुकौमुदी के सूत्रों और उसकी वृत्ति को कंठस्थ कर रहे थे तथा उसकी साधनिका को हृदयंगम कर रहे थे। मुनिश्री को दोनों में ही कठिनाई हो रही थी।

बीदासर की घटना है। स्वरान्त पुल्लिंग की साधनिका चल रही थी। विद्यार्थी साधुओं को बताया गया कि 'जिन' शब्द की प्रथमा विभक्ति के एकवचन में 'सि' प्रत्यय का योग होने पर 'जिनः' रूप बनता है।

मुनिश्री ने तत्काल जिज्ञासा के स्वरों में पूछा—हम 'सि' ही क्यों जोड़े? उसके स्थान पर 'ति' क्यों नहीं जोड़े? शब्दरूप व क्रियारूप के विभेद के ज्ञान के अभाव में ही कोई ऐसा प्रश्न कर सकता है। उसे जाननेवाला कोई मेधावी ऐसा प्रश्न नहीं कर सकता। समय के साथ क्षयोपशम विशद बनता गया और मुनिश्री विद्यार्थियों की अग्रिम पंक्ति में आ गए। मुनि तुलसी की चिन्ता सदा के लिए समाप्त हो गई।

२६. हाबू बंगू वल्कलचीरी.....(२८)

कालूगणी विनोदप्रिय थे। बाल मुनि नथमल उनके लिए विनोद के साधन थे। उनका विनोद केवल मनोरंजन के लिए नहीं होता था, उसके माध्यम से वे बाल संतों को प्रशिक्षण देते और उनके जीवन को बेहतर बनाने का प्रयत्न करते। वे बालमुनि को बंगू, हाबू और वल्कलचीरी जैसे शब्दों से संबोधित करते थे। ग्रामीण संस्कृति में पले-पुसे बाल मुनि नथमल की रहन-सहन, बोलचाल आदि प्रवृत्तियां दूसरे संतों से भिन्न थी। उनमें ग्राम्य संस्कृति की झलक थी। उनकी प्रकृति भद्र व सरल थी। संभवतः इसीलिए पूज्यवर बाल मुनि को ऐसे विनोदपरक संबोधनों से आहूत करते थे।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

२७. टेढा-मेढा कदम देख.....(२८)

मुनिवर साधिक दस वर्ष की अवस्था में दीक्षित हो गए। अपने रहन-सहन आदि के प्रति विशेष सजगता जैसी कोई बात उस बाल सुलभ मन में नहीं पनप पाई थी। पूज्य कालूगणी के पास जब बाल मुनि अकेले होते तब वे बाल मुनि को संबोधित कर फरमाते—'नत्थू! तुम चलो, कैसे चलते हो?' बाल मुनि टेढ़े-मेढ़े कदमों से चलते। कालूगणी फरमाते—'ऐसे नहीं, ऐसे चलो।' इस प्रकार प्रयोगात्मक शिक्षण ने आपकी चाल-ढाल में सुधार ला दिया।

२८. गांठ लगाई पछेवड़ी.....(२८)

बाल मुनि नथमल के वस्त्र भी व्यवस्थित नहीं रहते थे। पूज्य कालूगणी बाल मुनि को अपने पास बुलाकर कहते—'देखो, पछेवड़ी कैसे ओढ़ रखी है? इसे कैसे ओढ़ना चाहिए? यह ठीक नहीं है। इसे खोलकर पुनः बांधो, इस तरह पहनो' आदि संकेतों से बालमुनि को प्रशिक्षित करते। कभी-कभी स्वयं पूज्य कालूगणी मुनिश्री की पछेवड़ी की गांठ बांधकर बताते—ऐसे गांठ देनी चाहिए, ऐसे गांठ खोलनी चाहिए। अनेक बार बाल मुनि के पछेवड़ी की गांठ स्वयं कालूगणी लगाते। बाल मुनि को व्यवस्थित एवं कला निपुण बनाने के इस उपक्रम से अनायास मुनिश्री का जीवन सुव्यवस्थित और कला-प्रवीण बन गया।

२९. कम्बल भेजी.....(२८)

वि.सं. १९८८, पूज्य कालूगणी लाडनूं में विराजमान थे। सर्दी का मौसम था। बाल मुनि नथमलजी मुनि तुलसी के लिए होमियोपैथिक दवा लाने के लिए सूरजमलजी बैंगानी के घर गए वह प्रवास स्थल से काफी दूर था। पूज्यप्रवर पंचमी समिति से प्रवास-स्थल पर पधारे और पधारते ही पूछा—नत्थू कहां है?

सन्त—मुनि तुलसी के लिए दवा लाने गया है।

कालूगणी—सर्दी बहुत है। जाओ, देखो, कम्बल ओढ़कर गया या नहीं?

सन्त—कम्बल यहीं पड़ा है।

कालूगणी ने मुनिश्री कोडामलजी (श्रीडूंगरगढ़) आदि दो सन्तों को निर्देश दिया—'तुम कम्बल लेकर जाओ और उसे ओढ़ा दो।' इस घटना से यह ज्ञात

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

होता है कि बालमुनि नथमल ने पूज्य कालूगणी से अत्यधिक वात्सल्य प्राप्त किया।

३०. बालपणै में कण्ठ सुरीला.....(२९)

वि.सं. १९८८ में पूज्य कालूगणी के सान्निध्य में एक बार संगीत प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। अनेक साधुओं ने उसमें भाग लिया। उस प्रतियोगिता में मुनि नथमलजी ने बहुत सुन्दर गीत गाया। गीत का ध्रुवपद इस प्रकार है—

'चेत! चतुर नर कहै तनै सतगुरु,

किस विध तूं ललचाना है।'

इस गीत प्रतियोगिता में मुनिश्री ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। पूज्य कालूगणी द्वारा प्रशंसित और पुरस्कृत हुए। पुरस्कार में पूज्यप्रवर ने एक कल्याणक दिया।

३१. उच्चारण सिन्दूरप्रकर रो.....(३०)

परम पूज्य कालूगणी की सन्निधि में सायंकालीन प्रतिक्रमण के पश्चात् बाल मुनि सिन्दूरप्रकर के श्लोकों का शुद्ध उच्चारण करते। उच्चारण के बाद मुनि तुलसी उन श्लोकों का अर्थ बोध देते यानी एक-एक श्लोक के एक-एक शब्द को स्पष्ट करते, जिससे बाल साधुओं को अर्थ हृदयंगम हो जाता। यह क्रम काफी समय तक चलता रहा।

३२. दीन्हो उपदेश.....(३०)

परम पूज्य कालूगणी चित्तौड़ से प्रस्थान कर गंगापुर पधारे। हाथ का व्रण उत्तरोत्तर विकराल रूप ले रहा था। मुनि नथमलजी मध्याह्न में घंटा, दो घण्टा पूज्यश्री की सेवा में बैठते। दोपहर में व्याख्यान होता। प्रारंभ में मुनिश्री उपदेश देते। एक दिन जब उपदेश देकर आए, पूज्य कालूगणी ने फरमाया—'तू उपदेश कैसा देता है? हमें यहां सुनाई नहीं देता। सुनाई देता तो पता चलता कि ठीक देता है या नहीं।' इन प्रश्नात्मक वाक्यों में भी प्रबल विश्वास की प्रतिध्वनि है। मध्याह्न के व्याख्यान का निर्देश गुरु के अमित विश्वास का परिचायक था।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

वि.सं. १९९३ परम पूज्य कालूगणी गंगापुर में चातुर्मासिक प्रवास कर रहे थे। उस समय बाल मुनि नथमल यदा कदा उपदेश दिया करते थे। वि.सं. १९९६ से २००४ तक मुनिश्री का मध्याह्न में व्याख्यान हुआ करता। रात्रि में भी रामायण से पूर्व व्याख्यान देते। चूंकि बाल मुनि के कण्ठ सुरीले थे इसलिए 'राजा चन्द' आदि का व्याख्यान देते थे।

३३. साध्वीप्रमुखा झमकूजी.....(३१)

छापर में मर्यादा-महोत्सव का आयोजन। पूज्य कालूगणी ने धवल सेना के साथ अपनी जन्मभूमि छापर में पादार्पण किया। मुनि तुलसी की कुछ अस्वस्थता के कारण उन्हें लाडनूं छोड़ दिया। वहां से मुनि सुखलालजी और मुनि अमोलकचंदजी छापर आए। उन्होंने पूज्यप्रवर से बाल मुनि नथमल को लाडनूं भेजने के लिए प्रार्थना की। आचार्यवर ने उसे स्वीकार कर लिया। बाल मुनि लाडनूं जाने के लिए तैयार हो गए।

बाल-मुनि के रजोहरण का प्रतिलेखन साध्वीप्रमुखा झमकूजी करती थी। जब उन्होंने यह सुना कि बाल मुनि लाडनूं जा रहे हैं तब उन्होंने बालमुनि को कहा—फिर आपको गुरुदेव अपने पास नहीं रखेंगे, बहिर्विहारी साधुओं के साथ भेज देंगे।

मुनिश्री ने इस सारी चर्चा को पूज्य कालूगणी को निवेदित किया। पूज्यश्री ने मंद मुस्कान के साथ कहा—तुम तुलसी के पास लाडनूं चले जाओ। कोई चिंता मत करो।

मुनिद्वय के साथ बाल मुनि ने लाडनूं की ओर प्रस्थान कर दिया। बाल मुनि को मुनि तुलसी मिल गए। मुनि तुलसी से पृथक् रहने में जो कठिनाई हो रही थी, उसका समाधान हो गया।

३४. करूं न कोई काम इसो मैं.....(३२)

बाल-मुनि नथमल अपने और अपने हितों के प्रति सतत जागरूक थे। उन्होंने बचपन से ही सफलता के कुछ सूत्र निश्चित किए थे। वे सूत्र इस प्रकार है—

१. मैं ऐसा कोई काम नहीं करूंगा, जो मेरे विद्यागुरु को अप्रिय लगे।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

२. मैं ऐसा कोई काम नहीं करूंगा, जिससे मेरे विद्या गुरु को यह सोचना पड़े कि मैंने जिस व्यक्ति को तैयार किया, वह मेरी धारणा के अनुरूप नहीं बन सका।

३. मैं किसी भी व्यक्ति का अनिष्ट-चिंतन नहीं करूंगा। उनकी यह निश्चित अवधारणा थी—दूसरे का अनिष्ट चाहने वाला उसका अनिष्ट कर पाता है या नहीं, अपना अनिष्ट निश्चित ही कर लेता है।

मुनि अवस्था में ग्रहण किए गए इन संकल्पों का मुनिश्री ने आजीवन अनुपालन किया। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी वे अपने संकल्प पर अविचल रहे।

३५. संत हेम रै संरक्षण में.....(३३)

वि.सं. १९९० में पूज्य कालूगणी का प्रवास डीडवाना में था। वहां बाल मुनि नथमल की दोनों आंखों में दाने हो गए। इस वजह से प्रायः आंखों में दर्द रहता था। तात्कालिक उपचार से कोई लाभ नहीं हुआ। आंखों से पानी बहने लगा। पढ़ना-लिखना बंद हो गया। सहपाठी साधुओं को अनायास ही बाल मुनि से आगे बढ़ने का अवसर मिल गया।

कालूगणी का जोधपुर चतुर्मास निश्चित हो चुका था। पूज्यप्रवर जसोल, बालोतरा होकर जोधपुर पधारने वाले थे। विहार करते-करते लूणी जंक्शन पधारे। वहां बाल मुनि की आंखों से अधिक पानी गिरने लगा इसलिए उनको मुनि हेमराजजी (आत्मा) के साथ जोधपुर भेज दिया गया। उस समय उनका पढ़ना सर्वथा बंद था। मुनि हेमराजजी ने उन्हें प्रोत्साहित करते हुए कहा—'तुम प्रतिदिन कंठस्थ पाठ का जितना प्रत्यावर्तन करोगे, उतना ही अंकित कर पूज्य कालूगणी को निवेदन कर दूंगा।' मुनिश्री की यह बात बाल मुनि की समझ में आ गई। वे प्रतिदिन हजारों गाथाओं का पुनरावर्तन करने लगे।

ढाई मास के बाद पूज्य कालूगणी चतुर्मास के लिए जोधपुर पधारे। मुनिश्री हेमराजजी ने बाल मुनि के पुनरावर्तन का लेखा-जोखा पूज्यप्रवर के समक्ष प्रस्तुत किया। वह प्रत्यावर्तन कई लाख श्लोकों का हो गया। पूज्यप्रवर बहुत प्रसन्न हुए। जब प्रत्यावर्तन की बात मुनि तुलसी ने सुनी तब वे प्रसन्न हुए पर

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

पूरे प्रसन्न नहीं हुए। उन्होंने सोचा—इन्होंने अशुद्ध पाठ का ही प्रत्यावर्तन किया होगा। पर जब मुनि तुलसी को उन्होंने बिलकुल विशुद्ध पाठ सुनाए तब तो उन्हें भी अत्यधिक आश्चर्य हुआ। यह बाल मुनि के रूपान्तरण का समय था।

अशुद्ध उच्चारण की समस्या का समाधान हो गया किन्तु बाल मुनि आंख की समस्या से अब भी जूझ रहे थे। आंखों में दानों की चुभन और पानी गिरना, दोनों चल रहे थे। इससे बाल मुनि हताश हो गए किन्तु विद्या-गुरु मुनि तुलसी ने उपचार की ओर अधिक ध्यान दिया। धीरे-धीरे नेत्र-स्वस्थता हो गयी और ऐसा प्रतीत होने लगा मानो बाल मुनि का अन्तश्चक्षु जागृत हो गया हो।

३६. सूयगडो री पढ टीका तूं.....(३४)

वि.सं. १९९१ में पूज्य कालूगणी मांढा में प्रवास कर रहे थे। वहां एक दिन पूज्यप्रवर विद्यार्थी साधुओं के पाठ-उच्चारण की परीक्षा ले रहे थे। मुनि मगनलालजी पास में बैठे थे। कुछ विद्यार्थी साधुओं की परीक्षा हो चुकी थी। बाल-मुनि नथमलजी पंचमी समिति (शौच) से निवृत्त होकर कुछ विलम्ब से आए।

मुनि मगनलालजी—नाथूजी! आओ और इस पाठ (सूत्रकृतांग की टीका) का उच्चारण करो।

बाल मुनि ने उस पाठ को पढ़ा और वे उसमें सफल हो गए।

मुनि मगनलालजी—'आज तो यह बहुत सफल रहा है।'

पूज्य कालूगणी—'अभी बच्चा है। अभी सफलता का क्या पता चले? उस वक्त पूज्यश्री ने एक दोहा कहा—

लाखां लोहां चम्मड़ां, पहलां किसा बखाण।
बहू बछेरा डीकरा, नीवड़ियां निरवाण।।

स्नेह-दुलार और विनोदी वातावरण में बाल मुनि उत्तरोत्तर विकास के पथ पर अग्रसर होते रहे।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

३७. याद करो अध्याय आठवों.....(३५)

उन दिनों कंठस्थ करने की परम्परा बहुत प्रचलित थी। बालमुनि नथमलजी से पूज्य कालूगणी ने पूछा—धातु पाठ कंठस्थ किया या नहीं?

बाल मुनि—नहीं किया।

कालूगणी—उसे कंठस्थ करो।

बाल मुनि ने धातु पाठ कंठस्थ कर लिया।

वि.सं. १९९२, उदयपुर चतुर्मास, प्रातःकाल का समय। बाल मुनि नथमलजी ने पूज्य कालूगणी को वंदना कर अपने स्थान पर जा रहे थे। उसी समय कालूगणी ने कहा—'तूने आठवां अध्याय (हेमशब्दानुशासन का आठवां अध्याय, जिसमें प्राकृत, शौरसेनी आदि भाषाओं का व्याकरण है) कंठस्थ किया या नहीं?

बाल मुनि—नहीं किया।

कालूगणी—'आज से कंठस्थ करना शुरू करो।'

बाल मुनि ने गुरु-आदेश को शिरोधार्य कर उसी समय उसका अध्ययन करना शुरू कर दिया।

मुनि तुलसी उन दिनों उसे कंठस्थ कर रहे थे। बाल मुनि ने कालूगणी के पास जाकर कहा—'मुनि तुलसी ने आचार्य हेमचन्द्र का प्राकृत व्याकरण कंठस्थ करना शुरू कर दिया है। मैं अपने विद्यागुरु के साथ कैसे चल पाऊंगा।' पर मुनि तुलसी चाहते थे कि बाल मुनि उनके साथ प्राकृत व्याकरण सीखे। मुनि तुलसी की प्रेरणा से बाल मुनि ने त्वरता के साथ आठवां अध्याय सीख लिया।

३८. छत पर थापी थेपड़ियां स्यूं.....(३६)

प्राचीनकाल में हस्तलिखित ग्रंथों के सृजन की परम्परा थी। जिसकी लिपि सुन्दर होती, उसके लेखन का अधिक मूल्य होता। वि.सं. १९८९ की घटना है। पूज्य कालूगणी बीदासर में विराज रहे थे। उन्होंने सभी बाल साधुओं की हस्तलिपि सुन्दर करने का निर्देश दिया। मुनिश्री के सहपाठी और समवयस्क सभी साधुओं की हस्तलिपि सुन्दर हो गई थी। मुनिश्री की हस्तलिपि जैसे ही

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

सामने आई, उसमें सौन्दर्य नहीं पाकर पूज्य गुरुदेव मुस्कुरा दिए। उन्होंने कोई टिप्पणी नहीं की। मंत्री मुनि मगनलालजी स्वामी वहीं बैठे थे। उन्होंने कहा—'नाथूजी के अक्षर तो छत पर सुखाने जैसे हैं। छत पर उपले सुखाए जाते हैं। ये अक्षर भी वैसे ही टेढ़े-मेढ़े हैं।' इन शब्दों को सुनकर मुनिश्री को संकोच की अनुभूति हुई। उन्होंने संकल्प किया—'मुझे अपनी हस्तलिपि को अच्छा बनाना है।' उसके लिए उन्होंने तीव्र प्रयास किया।

पाली में मुनिश्री ने पार्श्वनाथ स्तोत्र की प्रतिलिपि की। वह प्रति पूज्य गुरुदेव के सामने प्रस्तुत की। उन्होंने उसे देखा और प्रसन्न मुद्रा में कहा—अब तुम्हारी लिपि ठीक हो गई है।

३९. म्हारै सरखो बणस्यो के थे?.....(३७)

लाडनूं में पूज्य कालूगणी का प्रवास। तीसरी पट्टी में चोरड़िया महफिल। व्याख्यान के बाद प्रायः साधु गोचरी-पानी के लिए गए हुए थे। बाल मुनि नथमल, मुनि तुलसी के पास बैठे थे। मुनि तुलसी ने उनको अध्ययन की प्रेरणा दी और जीवन विकास के कुछ सूत्र बताते हुए पूछा—तुम भी मेरे जैसा बनोगे? बाल मुनि ने कहा—'मुझे क्या पता? आप बनाएंगे तो बन जाऊंगा।'

४०. प्रवचन सामग्री-संग्रह री.....(३८)

मुनि छत्रमलजी व्याख्यान की सामग्री का संकलन कर रहे थे। बाल मुनि नथमलजी के मन में भी यह भावना जागृत हुई। उन्होंने भी सामग्री-संकलन करने का निर्णय किया। मुनि तुलसी को इस बात की अवगति मिल गई। उन्होंने मनाही कर दी। इससे उनके शिशु मन को ठेस लगी। उस समय सामग्री-संकलन की जरूरत नहीं थी, पर विद्यार्थी-साधुओं में प्रतिस्पर्धा चल रही थी। कोई एक विद्यार्थी साधु व्याख्यान की सामग्री संकलित करे तो दूसरा कैसे नहीं करे? बाल मुनि ने आग्रह किया। मुनि तुलसी अप्रसन्न हो गए। मुनिश्री का यह दृढ़ संकल्प था कि मुझे अपने विद्या गुरु को कभी भी अप्रसन्न नहीं करना है। पर यदा कदा वे अप्रसन्न हो जाते तो उन्हें प्रसन्न किए बिना उन्हें चैन भी नहीं मिलता। उन्होंने बहुत विनयपूर्वक मुनि तुलसी को प्रसन्न किया।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

४१. आओ संतां! पाणी लेवण.....(३९)

गंगापुर चातुर्मास की समाप्ति के बाद आचार्य तुलसी बागोर पधारे। आहार के समय एक आदेश प्रसारित हुआ—पानी लाने वाले साधु पांच मिनिट के भीतर उस स्थान पर चले जाएं, जहां गोचरी का विभाग होता है। सभी साधु अपने-अपने पात्र लेकर उस स्थान पर पहुंच गए जहां गोचरी का संविभाग हो रहा था। संविभाग स्थल के पास ही केलू का एक छपरा था। बाल-मुनि उस स्थान पर बैठ गए। शिवराजजी स्वामी ने उनको वहां बैठे देखकर कहा—यहां बैठने की मनाही है। तुम कैसे बैठ गए? मुनि नथमलजी ने कहा—अपने स्थान पर बैठने की मनाही है, यहां बैठने का निषेध नहीं है। यह विभाग का स्थल है, यहां कोई खड़ा रहे या बैठे, इससे आपको क्या?

मुनि शिवराजजी तेरापंथ धर्मसंघ के कोतवाल कहलाते थे। धर्मसंघ में आचार-विचार की क्रियान्विति और आचार्य के आदेश/अनुशासन का सम्यक् पालन हो रहा है या नहीं? इन बातों का ध्यान रखना उनका दायित्व था और वे अपने इस कार्य में पूर्ण सजग थे। बाल मुनि से उन्हें इस उत्तर की आशा नहीं थी। यद्यपि बाल मुनि का उत्तर तर्क संगत था पर विनय परम्परा की मांग कुछ और थी। वे तत्काल गुरुदेव के पास पहुंचे और सारी घटना गुरुदेव के सामने रख दी। पूज्य गुरुदेव ने बाल मुनि को बुलाया और पूछा—तुम वहां क्यों बैठे?

बाल मुनि ने अपना तर्क फिर दोहरा दिया। व्यवहार में इस तरह के तर्क का प्रवेश अपेक्षित न जानकर पूज्य गुरुदेव ने उन्हें उपालम्भ दिया। बाल मुनि ने इस उपालम्भ को विनम्र भाव से सुना और सहा। वहां वे कुछ नहीं बोले, चुपचाप अपने स्थान पर लौट आए।

इस घटना से बाल मुनि का मन बहुत भारी हो गया। अपनी मनःस्थिति का चित्रण करते हुए स्वयं लिखते है—'मैं मन ही मन सोचता रहा—मेरा कोई प्रमाद नहीं हुआ, न मैंने कोई गलती की। शिवराजजी स्वामी ने अकारण मुझे फंसा दिया। आचार्यवर ने भी उनकी बात को मानकर मुझे उपालम्भ दे दिया। यह प्रतिक्रिया लम्बे समय तक मेरे मन पर होती रही। मैं काफी समय तक इस बात को अपने मन से नहीं निकाल सका। यह कोई बड़ी बात नहीं थी, पर मेरे

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

लिए यह बड़ी बात इसलिए बन गई कि मेरी भावना पर दोहरी चोट पहुंची। मैं कल्पना नहीं करता था कि आचार्यश्री से इतनी प्रियता होते हुए भी अकारण ही उनसे कड़ा उलाहना सुनना पड़ेगा। दूसरी बात, मेरे मन पर एक छाप थी—कालूगणी के व्यवहार की। मैंने सुना था—पूज्य कालूगणी को आचार्यों से कभी उलाहना नहीं मिला। मेरे मन का भी संकल्प था कि मैं भी कभी आचार्यवर से उलाहना नहीं सुनूंगा। मेरा संकल्प टूटता सा लगा, इससे मुझे बहुत आघात पहुंचा। मैं कोई प्रमाद न करूं, कभी उलाहना न सुनूं, किसी के प्रति कोई अनिष्ट चिन्तन न करूं, अध्ययन में किसी से पीछे न रहूं—इन छोटे-छोटे संकल्प सूत्रों ने मेरी चेतना के जागरण में योग दिया, ऐसा मैं अनुभव करता हूं।'

४२. कालू पट्टोत्सव पर.....(४०)

वि.सं. १९९१ में पूज्य कालूगणी जोधपुर में चातुर्मासिक प्रवास कर रहे थे। भाद्रपद शुक्ला पूर्णिमा को उनका पदारोहण दिवस था। विद्यार्थी साधु भी गुरुदेव के अभिनंदन में कुछ बोलना चाहते थे। उन्होंने मुनि तुलसी से पद्य बनाने के लिए प्रार्थना की। उन्होंने सबके लिए पद्य बना दिए। बाल मुनि नथमल के लिए भी पद्य बनाया गया, पर वह उन्हें पसंद नहीं आया।

बाल मुनि नथमल ने कहा—'आपने दूसरे साधुओं के लिए पद्य अच्छे बनाए हैं, मेरे लिए बना पद्य वैसा नहीं है।'

मुनि तुलसी—'तुम्हारा पद्य बहुत अच्छा है।'

बाल मुनि अपने आग्रह पर अड़े रहे और मुनि तुलसी उन्हें समझाते रहे। आखिर बाल हठ था। बाल मुनि नहीं समझे। तब मुनि तुलसी ने कहा—'आज से प्रतिज्ञा है कि भविष्य में कभी भी तुम्हारे लिए पद्य नहीं बनाऊंगा।

इस प्रतिज्ञा ने मुनिश्री के लिए कविता-सृजन का द्वार उद्घाटित कर दिया और एक दिन आया, जब मुनिश्री काव्य जगत् में उत्कृष्ट कोटि के कवि के रूप में प्रतिष्ठित हो गए।

४३. पाट विराज्या मुनिवर तुलसी.....(४२)

भाद्रपद शुक्ला नवमी के दिन युवाचार्य तुलसी का उल्लासपूर्ण वातावरण

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

में आचार्य-पदाभिषेक किया गया। मुनि तुलसी, अब तक जो कुछ संतों के शिक्षक व आत्मीय मार्गदर्शक थे, अब सबके बन गए। पहले उनका सारा समय अपने विद्यार्थी साधुओं के विकास हेतु समर्पित था, किन्तु अब उनके सामने समग्र तेरापंथ की प्रगति का दायित्व था। मुनि तुलसी का आचार्य तुलसी बनना बाल साधुओं को कुछ अटपटा-सा लगा। अटपटा लगने का कारण यह नहीं था कि मुनि तुलसी आचार्य तुलसी बन गए। इसका कारण यह था कि पहले मुनि तुलसी उनको हर समय उपलब्ध थे। दायित्व की चादर ओढ़ने के बाद उसमें बहुत लोग संविभागी बन गए। इस संविभाग से बाल मुनियों की अनेक प्रवृत्तियां, जो विद्या-गुरु मुनि तुलसी के साथ जुड़ी हुई थी, बाधित-सी हो गयी। पहले आहार मुनि तुलसी के साथ होता था। अब आहार साथ में संभव नहीं था। पदे-पदे ऐसी स्थिति थी। अध्ययन की व्यवस्था का कुछ समय के लिए गड़बड़ा जाना भी एक मुख्य कारण बना। बाल-साधुओं के अध्ययन में एक बार अवरोध सा आ गया। उस स्थिति का चित्रण स्वयं आचार्यश्री तुलसी ने 'मेरा जीवन : मेरा दर्शन' भाग-१ में किया है—

'पूज्य गुरुदेव की कृपा से मुझे विद्यार्थी साधुओं की पाठशाला संचालित करने का सौभाग्य मिला था। वि.सं. १९८७ से १९९३ के प्रथम भाद्रपद मास के प्रथम पक्ष तक पाठशाला व्यवस्थित रूप से चली। संघीय दायित्व से जुड़ते ही मेरा वह काम छूट गया। यद्यपि अध्यापन मुझे बहुत प्रिय था, किन्तु हर काम की अपनी सीमाएं होती है। अध्यापन का क्रम टूटने से मुझे अटपटा-सा लग रहा था। विद्यार्थी साधुओं को भी बहुत अटपटा लगा। वे अन्यमनस्क-से रहने लगे। उनका मन नहीं लगता। मैंने उनकी मनःस्थिति को पढ़ा। एक दिन मुनि नथमलजी, मुनि बुद्धमलजी, मुनि दुलीचन्दजी, मुनि जंवरीमलजी आदि को अपने पास बुलाकर पूछा—'तुम लोग आजकल क्या करते हो? स्वाध्याय, अध्ययन आदि का क्रम कैसे चलता है?' साधु बोले—'हमारा मन नहीं लगता। हम क्या करें?' मैंने उनको आश्वस्त करते हुए कहा—'मेरी बहुत इच्छा है कि मैं अपनी पाठशाला चलाऊं, तुम लोगों को पढ़ाऊं। पर तुम्हीं सोचो, अभी यह कैसे संभव है? अब तक मैं दिन-रात तुम्हारी निगरानी रखता था। अब तो मेरे सामने दूसरे काम भी हैं। मैं चाहता हूं कि अब तुम स्वावलम्बी बनो। अध्ययन का क्रम बंद मत करो। स्वयं पढ़ो। अपेक्षा हो तो मेरे पास

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

आ जाओ। मैं तुम्हें समय दूंगा। मैंने उन साधुओं की आकृति पढ़ी। उनकी भावना सुनी। थोड़े से दिनों में वे बहुत अव्यवस्थित हो गये थे। मैंने उनको आश्वासन दिया। उनके उखड़े हुए मन को जमाने का प्रयास किया और उन्हें पुनः अध्ययनरत होने की प्रेरणा दी।'

४४. रघुनंदन योग मिल्यो.....(४३)

मुनिश्री का संस्कृत और प्राकृत के अध्ययन के पश्चात् दर्शन के अध्ययन का क्रम शुरू हुआ। उन्होंने गुरुदेव के पास स्याद्वाद मंजरी पढ़ी और प्रमाणनयतत्त्वलोकालंकार गुरुदेव के साथ पढ़ा। वि.सं. १९९५ में पूज्य गुरुदेव का चतुर्मास सरदारशहर था। वहां पंडित रघुनंदनजी का आगमन हुआ। पंडितजी संस्कृत के धुरंधर विद्वान्, आशुकवि और आयुर्वेदाचार्य थे। पंडितजी के पास प्रमाणनयतत्त्वलोकालंकार का अध्ययन प्रारंभ किया। दर्शन उनका विषय नहीं था। जैन न्याय और दर्शन के अध्ययन का गुरुदेव का प्रथम प्रयास था। समस्या का समाधान खोजा गया। भाषा का अर्थ पंडितजी करते और अर्थ का प्रतिपादन गुरुदेव करते। इस पारस्परिक योग ने दर्शन के क्षेत्र में प्रवेश का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

४५. लेखण बोलण पर पायो.....(४८)

वि.सं. २००२ का आचार्यप्रवर का चातुर्मासिक प्रवास श्रीडूंगरगढ़ में था। एक दिन संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान् बुद्धदेव आर्य गुरुदेव के दर्शनार्थ आए। उन्होंने प्रातःकालीन प्रवचन में संस्कृत में भाषण दिया। उनका धाराप्रवाह भाषण सुन गुरुदेव के मन में चिन्तन आया—'हमारे धर्मसंघ में संस्कृत के विद्वान् साधु-साध्वियां अनेक हैं, पर संस्कृत बोलने का अभ्यास कम है। यदि संस्कृत में धाराप्रवाह भाषण करना हो तो कठिनाई अनुभव होती है।' यह चिन्तन प्रकर्ष पर पहुंच गया। आचार्यवर ने विद्यार्थी साधुओं को निर्देश दिया—'तुम संस्कृत में धाराप्रवाह बोलने का अभ्यास करो।' गुरुदेवश्री के इंगित को समझकर कुछ साधुओं ने संस्कृत में बोलने का अभ्यास प्रारम्भ कर दिया। श्रीडूंगरगढ़ में कस्बे के चारों ओर रेत के बहुत ऊंचे-ऊंचे टीले है। मुनिश्री ने उन ऊंचे टीलों पर खड़े होकर संस्कृत में भाषण करना शुरू कर दिया। कोई श्रोता नहीं था। चारों तरफ बालू के टीले। ऊपर आकाश, नीचे धरती। मुनिश्री ही वक्ता,

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

मुनिश्री ही श्रोता। यह सिलसिला लगभग दो मास तक चला। उसके पश्चात् मुनिश्री ने गुरुदेव से निवेदन किया—'अब हम संस्कृत भाषा में धाराप्रवाह बोल सकते हैं।' संस्कृत में लिखने का अभ्यास तो मुनिश्री को प्रारम्भ से ही था।

४६. परामर्श दस्साणीजी रो.....(४९)

गुरुदेवश्री तुलसी का वि.सं. २००१ का चातुर्मास सुजानगढ़ था। आपश्री के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में शुभकरणजी दसानी ने हिन्दी में कुछ निबन्ध लिखे। उनमें साहित्यिक भाषा और भावों का प्रवाह था। कुछ साधुओं ने उनको पढ़ा। पढ़ने में वे रुचिकर लगे। उन्होंने अन्य साधु-साध्वियों से इसकी चर्चा की। निबन्ध पढ़ने की उत्सुकता जागी। अनेक साधु-साध्वियों ने उसको पढ़ने की इच्छा व्यक्त की। निबन्ध पढ़े गए। सबको पसन्द आए। इससे हिन्दी पढ़ने और लिखने की प्रेरणा मिली। आचार्यश्री तुलसी के मन में एक विचार उभरा कि हमारे धर्मसंघ में इतने साधु-साध्वियां हैं परन्तु इनमें एक भी उच्च कोटि का चिन्तक, लेखक और वक्ता नहीं है। काश! हमारे साधु-साध्वियां, आधुनिक भाषा में बोल पाते, लिख पाते। उस समय तेरापंथ में हिन्दी का वातावरण नहीं था। हिन्दी बोलना और लिखना—दोनों ही प्रचलन में नहीं थे। हिन्दी बोलने वाले व्यक्तियों को अहंकारी माना जाता था। उस समय राजस्थानी एवं संस्कृत भाषा का ही प्रचलन था और उसे आदर की दृष्टि से देखा जाता था। अनेक साधु हिन्दी में पढ़ने की अपनी अभिरुचि एवं इच्छा को अभिव्यक्ति देने से घबराते थे। इस दौरान श्री शुभकरण दसानी ने आचार्यश्री तुलसी से कहा—कुछ साधु हिन्दी में बहुत अच्छा लिखते हैं। उनके द्वारा लिखे गए निबंध और कविताएं मैंने पढ़ी है। उनका लेखन स्तर भी काफी अच्छा है। वे आपसे संकोच करते हैं, भय खाते हैं, इसलिए आपको नहीं दिखाते।

आचार्यवर ने इस नई बात को सुनकर लिखने वाले साधुओं को प्रोत्साहित किया और अब तक किए गए लेखन कार्य को निःसंकोच दिखाने के लिए कहा। लिखने वाले मुनियों में मुनिश्री नथमलजी भी थे। आचार्यवर ने मुनिश्री के निबंध एवं कविताएं पढ़कर प्रसन्नता व्यक्त की।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

४७. पहलो लेख लिख्यो हिन्दी में.....(५०)

प्रोफेसर हीरालाल रसिकदास कापड़िया अहिंसा के बारे में एक ग्रंथ का संकलन कर रहे थे। उन्होंने आचार्यश्री तुलसी के पास एक प्रस्ताव भेजा—'आचार्य भिक्षु के अहिंसा संबंधी विचारों को उस ग्रंथ में मैं देना चाहता हूं। मुझे हिन्दी में उनके विचारों का एक संकलन उपलब्ध कराएं।'

यह वि.सं. २००२ की बात है। मुनिश्री गोचरी करके आए। आते ही आचार्यश्री तुलसी ने उनसे पूछा—'क्या तुम हिन्दी में लिख सकते हो?' मुनिश्री ने कहा—'हां।' उनकी स्वीकारोक्ति में आत्मविश्वास मुखर हो रहा था। आचार्यश्री कुछ संदिग्ध थे। आपश्री को यह जानकारी नहीं थी कि मुनिश्री हिन्दी में लिखते हैं।

पूज्य आचार्यश्री ने कहा—'हीरालाल रसिकदास कापड़िया का पत्र आया है। वे अहिंसा के विषय में एक पुस्तक लिख रहे हैं। उन्होंने आचार्य भिक्षु के चिन्तन के अनुसार अहिंसा-विषयक निबंध हिन्दी में मांगा है। हिन्दी में लिखना है। लिख लोगे?'

मुनिश्री ने कहा—'हां'।

कार्य की तत्काल क्रियान्विति में मुनिश्री का विश्वास रहा। त्वरता के साथ लेख लिखा गया। 'अहिंसा' शीर्षक से एक लघु पुस्तिका तैयार हो गई।

४८. 'जीव-अजीव' जिसी पोथी लिख.....(५०)

मुनि नथमलजी के लिए वि.सं. २००० का वर्ष नए उन्मेष का वर्ष था। चौबीसवें वर्ष में प्रवेश के साथ ही संस्कृत, प्राकृत और दर्शनशास्त्र के ग्रन्थों का अध्ययन किया। उसी वर्ष हिन्दी में भी लिखना शुरू कर दिया। उन्होंने सबसे पहले हिन्दी भाषा में 'पचीस बोल' की व्याख्या लिखी। श्रीडूंगरगढ़ के कुछ युवकों और कुछ तत्त्व-रसिक प्रौढ़ व्यक्तियों ने उसका अध्ययन प्रारम्भ किया। अध्ययन क्रम में संशोधन और परिवर्धन के साथ पूरी पुस्तक तैयार हो गई। उसका नाम रखा गया—जीव-अजीव। हिन्दी और दर्शन के क्षेत्र में मुनिश्री की यह प्रथम रचना थी।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

४९. 'आत्मा नै नहि जाणूं मानूं.....(५१)

जैन व जैनेतर समाज में मुनि नथमलजी की एक दार्शनिक, चिन्तक, साहित्यकार और कवि के रूप में पहचान हो रही थी। अनेक मनीषी उनके प्रत्यक्ष सान्निध्य में गहन विषयों पर चिन्तन-मनन करते। बहुत से विद्वान् परोक्ष रूप से उन तक अपनी जिज्ञासा पहुंचा कर समाधान प्राप्त करते। एक बार जुगलकिशोर मुख्तार की प्रश्नावली मुनिश्री के पास आई। उसमें आत्मा के संदर्भ में प्रश्नों की एक लम्बी सूची थी। उन्होंने उन सबका समाधान मांगा था। मुनिश्री ने विमर्शपूर्वक सब प्रश्नों को समाहित किया। उनमें एक बात लिख दी—'मैं आत्मा को मानता हूं, जानता नहीं।'

यह लेख प्रख्यात पत्रिका कादम्बिनी में प्रकाशित हुआ। चर्चा का वातूल खड़ा हो गया। आचार्यवर के पास लब्ध प्रतिष्ठ श्रावकों के पत्र आने शुरू हो गए। उन पत्रों का सार-संक्षेप यह था कि एक जैन मुनि कैसे कह सकता है कि मैं आत्मा को नहीं जानता। जो आत्मा को नहीं जानता, वह जैन मुनि कैसे हो सकता है?

उस समय आचार्यवर बीदासर में विराज रहे थे। पश्चिम रात्रि में मुनिश्री वन्दना करने के लिए पधारे। आचार्यवर मुनिश्री को कहा—तुमने क्या लिख दिया! देखो, यह कागजों का पुलिन्दा। प्रमुख-प्रमुख श्रावकों के पत्र आ रहे हैं।

मुनिश्री ने विनम्र स्वर में कहा—'आचार्यवर! मैंने जो लिखा, संभवतः श्रावक उसे समझ नहीं पाए हैं और वे नहीं समझ पाए, उसका कारण भी मैं जानता हूं। वे संभवतः मानने और जानने के भेद को नहीं समझ पा रहे हैं इसीलिए उनके मन में द्वन्द्व पैदा हुआ है।'

मुनिश्री के लेख के विषय में प्रबल प्रतिवाद किया गया किन्तु जैसे ही जानने और मानने का भेद स्पष्ट हुआ, सारी शंकाएं निरस्त हो गई।

५०. दो हजार पांच छापर.....(५३)

विक्रम संवत् २००५ के छापर चातुर्मास से पूर्व पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी सुजानगढ़ में विराज रहे थे। उस समय मुनि नथमलजी को प्रतिश्याय हुआ

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

और वह बिगड़ गया। साथ में ज्वर भी रहने लगा। एलोपैथिक और आयुर्वेदिक इलाज कराएं किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। प्राकृतिक चिकित्सा करवाई, उससे मुनिश्री अतिशीघ्र स्वस्थ हो गए। उसके पश्चात् मुनिश्री ने प्राकृतिक चिकित्सा की अनेक पुस्तकें पढ़ी। यहीं से उनकी जीवन शैली में परिवर्तन प्रारम्भ हो गया।

पहले तेरापंथ धर्मसंघ में आसन-प्राणायाम का क्रम प्रायः नहीं था। वि.सं. २००५ में मुनि नथमलजी ने आसन-प्राणायाम का प्रयोग प्रारम्भ किया। भोजन में भी परिवर्तन किया। गरिष्ठ व तले हुए पदार्थों का परिहार किया, जैसे—दाल का हलवा, बादाम का हलवा, घेवर, जलेबी, बड़े-पकोड़े, कचौरी आदि।

आसन-प्राणायाम के साथ-साथ ध्यान की रुचि भी जागृत हुई। मुनिश्री ने बीज मंत्रों की ध्वनि के प्रयोग भी किए। उदात्त स्वर में बीज मंत्रों की ध्वनि करने से लोग उनको हास्य का विषय भी बनाते फिर भी उन्होंने प्रयोग को नहीं छोड़ा। गुरुदेव तुलसी का प्रोत्साहन मिलता रहा। गुरुदेव तुलसी ने स्वयं प्राकृतिक चिकित्सा का प्रयोग किया। आसन-प्राणायाम और ध्यान के प्रयोगों का भी उन्होंने समर्थन किया। धीरे-धीरे उन सबकी जड़ें हमारे धर्मसंघ में गहरी होती चली गई।

५१. केवल सतियां री गोष्ठी में.....(५४)

मर्यादा महोत्सव के अवसर पर शिक्षा गोष्ठियों के तीन रूप बनते हैं—

१. केवल साधुओं की गोष्ठी
२. केवल साध्वियों की गोष्ठी
३. साधु-साध्वियों की संयुक्त गोष्ठी

मर्यादा-महोत्सव के अवसर पर होनेवाली शिक्षा गोष्ठियों में आचार्य ही शिक्षा-प्रवचन करते हैं। वि.सं. २००५ के मर्यादा-महोत्सव से मुनि नथमलजी ने भी गोष्ठियों में वक्तव्य देना शुरू कर दिया। प्रारम्भ में साधु-साध्वियों की गोष्ठी में विचार व्यक्त करते। संघीय दायित्व के साथ जुड़ने के बाद केवल साध्वियों की गोष्ठी में भी उनके वक्तव्य होते। मुनिश्री के विषय रहते—साधना का विकास, व्यवस्था के प्रति जागरूकता, सेवा और बौद्धिक

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

विकास। मुनिश्री का इस प्रकार गोष्ठियों में बोलना चर्चा का विषय बन गया।

एक दिन सेवाभावी मुनिश्री चम्पालालजी ने आचार्यवर से निवेदन किया—'जब केवल साध्वियों की गोष्ठी होती है तो उसमें आपका ही शिक्षा-प्रवचन होना चाहिए। उसमें मुनि नथमलजी के वक्तव्य की अपेक्षा क्या है?

आचार्यवर ने मुनिश्री चम्पालालजी के निवेदन को ध्यान से सुना और संक्षिप्त उत्तर देते हुए कहा—'उनका बोलना मुझे आवश्यक लगता है।'

५२. कुणसी युनिवर्सिटी में.....(५५)

सन् १९५४ का वर्ष। मुंबई में परम पूज्य गुरुदेव आचार्य तुलसी का चातुर्मासिक प्रवास। कार्तिक का महीना। भारतीय विद्या भवन में संस्कृत संगोष्ठी का समायोजन। उच्च कोटि के विद्वानों का समागम। गोष्ठी में सम्मिलित होने के लिए आचार्यवर को भी आमंत्रण मिला। आचार्यवर वहां पधारे। मुनि नथमलजी भी उनके साथ थे। उन्होंने संस्कृत भाषा में धाराप्रवाह वक्तव्य दिया। आशुकविता भी की। कार्यक्रम सम्पन्न हो गया। सबने वहां से प्रस्थान कर दिया।

मुनि नथमलजी कुछ पीछे रह गए। पांच-सात प्रोफेसर उनके निकट आए और बोले—'मुनिजी! आपने किस विश्वविद्यालय में अध्ययन किया है?' प्रश्न सामने आए और मुनिश्री उसका समाधान न दे, यह उनको कभी भी मान्य नहीं था।

मुनिश्री नथमलजी की स्वतः स्फूर्त मेधा से जबाव उभरा—'तुलसी विश्वविद्यालय में।' सर्वथा अश्रुत, अपरिचित और नया नाम। प्रोफेसर उनकी ओर देखने लगे। उन्होंने अपनी स्मृति पर बहुत जोर डाला पर उक्त नाम का कोई विश्वविद्यालय उनके ध्यान में नहीं आया। आखिर उन्होंने पूछा—'मुनिजी! यह विश्वविद्यालय है कहां?'

परम पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी मुनि नथमलजी से कुछ कदम ही आगे चल रहे थे। उन्होंने गुरुदेवश्री की ओर इंगित करते हुए कहा—'वह आगे चल रहा है। हमने उस चलते-फिरते विश्वविद्यालय में पढ़ाई की है।' विद्वान् आश्चर्यचकित हो देखते से रह गए।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

५३. प्रोफेसर नॉर्मन बोल्या.....(५६)

वि.सं. २०११ में गुरुदेवश्री तुलसी का चातुर्मास मुंबई था। वहां पर पेनसिलवीनिया युनिवर्सिटी के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. नॉर्मन ब्राऊन पहली बार दर्शनार्थ आए। उन्होंने गुरुदेव के साथ विविध विषयों पर वार्ता की। वार्तालाप के दौरान डॉ. नॉर्मन ब्राउन ने कहा—'मेरे जीवन की एक चिर अभिलाषा है कि मैं भगवान् महावीर की मूल भाषा-प्राकृत में प्रवचन सुनूं। आज तक मैं अनेक जैन मुनियों, आचार्यों के पास इस अभिलाषा के साथ गया, किन्तु मेरी इच्छा आज तक पूरी नहीं हुई। आप ही इसे पूर्ण कर सकते हैं।'

उनकी उत्कृष्ट भावना को देखते हुए पूज्य गुरुदेव ने मुनिश्री नथमलजी को प्राकृत में प्रवचन करने का आदेश दिया। दूसरे दिन मध्याह्न में निर्धारित समय पर मुनिश्री ने भगवान् महावीर के मुख्य सिद्धांत-स्याद्वाद पर बीस मिनट तक धाराप्रवाह प्रवचन किया। उसे सुनकर डॉ. ब्राउन स्तब्ध रह गए।

डॉ. नॉर्मन ब्राउन ने गद्गद होकर कहा—'आचार्यजी! मैं आपका बहुत-बहुत कृतज्ञ हूं। आपके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं है। मेरी भारत यात्रा सफल हो गई। मेरी प्राकृत में प्रवचन सुनने की चिरपोषित आशा पूर्ण हो गई। अब मैं चाहे अभी मरूं या बाद में, मुझे कोई दुःख नहीं होगा क्योंकि मेरी अंतिम मनोकामना पूरी हो गई है।'

पूज्य गुरुदेव ने उनकी बात सुनकर आह्लाद का अनुभव किया।

५४. संस्कृत महाविद्यालय प्रांगण.....(५७)

गुरुदेव श्री तुलसी कोलकाता यात्रा के दौरान बनारस पधारे। वहां संस्कृत महाविद्यालय के प्रांगण में प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित था। मंगलदेव शास्त्री उस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे थे। पंडितों, प्राध्यापकों तथा विद्यार्थियों ने 'स्याद्वाद' विषय पर वक्तव्य देने की प्रार्थना की। मुनिश्री ने संस्कृत में एक घंटा तक धाराप्रवाह प्रवचन किया। स्याद्वाद संशयवाद नहीं हैं इसे स्पष्टता के साथ समझाया। उपस्थित पंडितों में से अधिकांश प्रसन्न हुए किन्तु कुछ अप्रसन्न भी हुए। उन्होंने मुनिश्री को प्रश्नों के कटघरे में खड़ा कर दिया। संस्कृत में ही प्रश्न और संस्कृत में ही उत्तर। यह क्रम काफी समय तक चलता रहा।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

आपकी प्रतिभा से सारा विद्वद् वर्ग चमत्कृत रह गया। आपके विद्वत्तापूर्ण उत्तरों से विद्यार्थी व प्राध्यापक वर्ग झूम उठा। कुछ पंडित अपने प्रभाव को घटता देख क्षुब्ध हो उठे। उन्होंने मुनिश्री को आशुकवित्व के लिए निमंत्रित किया। आशुकवित्व के लिए विषय दिए जाने लगे। किसी ने राष्ट्रसंघ पर आशुकवित्व चाहा तो किसी ने और-और विषयों पर। मुनिश्री सफलतापूर्वक आशुकविता प्रस्तुत करते रहे।

सारी परिषद् मंत्रमुग्ध हो गई। इस प्रकार यह क्रम सन्ध्या तक चलता रहा। पंडित व अन्य बौद्धिक व्यक्ति यह जानते थे कि जैन मुनि रात में न खाते हैं, न इधर-उधर जा सकते हैं। उन्होंने अपनी पराजय को जय में बदलने के लिए इसे स्वर्णिम अवसर समझा। उन्होंने पूज्य गुरुदेव से कहा—'हम संस्कृत में आपसे चर्चा, प्रश्नादि करना चाहते हैं।'

गुरुदेव—'हमारा सारा कार्यक्रम निर्धारित है।'

विद्वान—'हमारी प्रबल भावना अवश्य पूरी होनी चाहिए।'

गुरुदेव—हम रात्रि में यहां रहे, यह संभव नहीं है फिर भी आपकी इच्छा को पूर्ण करने के लिए मुनि नथमलजी यहीं रहेंगे। आप चाहे तो रात-भर इनसे चर्चा कर सकते हैं। इसके बाद सभा विसर्जित कर दी गई। रात्रि में प्रतिक्रमण के पश्चात् मुनिश्री विद्वानों का इंतजार करते रहे। कोई भी विद्वान् चर्चा के लिए नहीं आया। कुछ समय पश्चात् कुछ विद्यार्थी आए। उन्होंने मुनिश्री को विनम्र प्रणाम करते हुए कहा—'मुनिजी! आपने बाजी मार ली। अब आप आराम से सो जाएं, कोई नहीं आएगा।'

५५. वाग्वर्धिनी सभा विलक्षण.....(५८)

आचार्यश्री तुलसी यात्रा के दौरान पूना पधारे। पूना प्रवेश से पूर्व अनेक लोगों ने कहा—महाराज! यह पंडितों की नगरी है। आप इसमें सार्वजनिक कार्यक्रम न करें। इन्हें केवल अपने समाज तक ही सीमित रखें। गुरुदेव ने उनकी इस प्रार्थना को महत्त्व नहीं दिया। जब भंडारकर इंस्टीट्यूट, तिलक विद्यापीठ, संस्कृत वाग्वर्धिनी सभा, डेक्कन कॉलेज आदि राष्ट्र विश्रुत विद्या केन्द्रों में मुनि नथमल (आचार्य महाप्रज्ञ) के संस्कृत में संभाषण तथा

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

आशुकवित्व के प्रेरक प्रसंग बने, तब दक्षिण की काशी—पूना-नगरी के विद्वान हर्ष विभोर हो उठे। पूना गुरुदेवश्री तुलसी केवल नौ दिन ठहरे। इस दौरान लगभग सत्ताईस संगोष्ठियों का आयोजन हुआ। विद्या-क्षेत्र पूना में समायोजित इन महत्त्वपूर्ण कार्यों को दृष्टि में रख पूज्य गुरुदेव ने कहा—बम्बई के नौ मास और पूना के केवल नौ दिन बराबर हैं।

५६. छंद स्रग्धरा रचना सुण.....(५८)

संस्कृत में धाराप्रवाह वक्तव्य देना एक महान उपलब्धि है किन्तु संस्कृत में तत्काल काव्य की रचना कर देना उससे भी विशिष्ट उपलब्धि है। मुनिश्री किसी भी विषय पर, किसी भी छंद में तत्काल कविता करने में समर्थ हो गए। यह उनके बौद्धिक व्यक्तित्व का दुर्लभ पृष्ठ है।

२७ फरवरी १९५५। वाग्वर्धिनी सभा पूना में आशुकवित्व के लिए विषय देते हुए डॉ. के. एन. वाटवे ने कहा—

समयज्ञापकं यंत्रं, नव्यानां हस्तभूषणम्।
स्रग्धरावृत्तमालम्ब्य, घटीयंत्रं हि वर्ण्यताम्।।

जो सदा समय बताती है, जो नवजवानों के हाथ का आभूषण बनी हुई है, उस घड़ी का स्रग्धराछंद में वर्णन करें।

स्रग्धराछंद संस्कृत भाषा का एक बृहद् छंद है। इस छंद में संस्कृत श्लोक का निर्माण भी सहज नहीं होता, उसमें आशुकवित्व करना भारी कार्य है।

गुरुदेव उस सभा में उपस्थित थे। गुरुदेव ने मुनिश्री से कहा—क्या इस छंद में आशुकविता कर लोगे? यदि संभव न हो तो दूसरा छंद देने के लिए कह दें।

मुनिश्री ने कहा—'नहीं, मैं इस छंद में कविता कर सकता हूं।'

मुनिश्री द्वारा स्रग्धरा छंद में आशुकवित्व का पहला अवसर था। आत्मविश्वास की प्रबलता के कारण वह चुनौती समस्या नहीं बनी। तत्काल प्रस्तुत विषय पर चार श्लोक बना दिए। मुनिश्री द्वारा उद्गीत एक श्लोक निदर्शन के लिए प्रस्तुत है—

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

यद्वा ज्ञातः पुराणैर्निखिलऋषिवरैर्व्योमवीक्ष्यापि कालः,
ज्ञाता तज्जायते वा प्रकृतिविवशता साम्प्रतं वर्धमाना।
स्वातन्त्र्यस्य प्रणादो बहुजनमुखगः किन्तु नो कार्यरूपे,
हस्ते बद्ध्वा घटीस्ता भवति च मनुजश्चित्रमासामधीनः।।

प्राचीन ऋषि-मुनियों ने आकाश को देखकर काल का ज्ञान किया था किन्तु आज बढ़ती हुई प्रकृति की विवशता स्वयं ज्ञात है या ज्ञात हो सकती है। वर्तमान में स्वतंत्रता का स्वर जन-जन के मुख पर है, किन्तु वह कार्यरूप में परिणत नहीं है। आश्चर्य है कि मनुष्य हाथ पर घड़ी बांधकर उसके अधीन हो रहा है।

मुनिश्री द्वारा आशुकवित्व के रूप में स्रग्धरा छंद में चार श्लोकों को सुनकर विद्वद् वर्ग विस्मित रह गया।

५७. विद्या परिषद् संगोष्ठ्यां में.....(५९)

साधु-साध्वियों की प्रतिभा को प्रस्तुत करने का एक सशक्त माध्यम-जैन विद्या परिषद् का आयोजन बना। इसके अधिवेशनों में जैन जगत् के मूर्धन्य विद्वानों को आमंत्रित किया जाता था। वे चुने हुए विषयों पर अपने शोधपूर्ण पत्र पढ़ते थे। जैन विद्या परिषद् के इन अधिवेशनों में साधु-साध्वियों को विषय देना, विषय से संबद्ध सामग्री को व्यवस्थित रूप देना आदि-आदि कुछ ऐसे कार्य होते, जिनको संपादित करने में मुनिश्री अपने समय और सामर्थ्य का नियोजन करते।

जैन विद्या परिषदों में तेरापंथ का बौद्धिक पक्ष अत्यन्त प्रभावी ढंग से सामने आया। प्रत्येक शोध-पत्र पर होने वाले प्रश्नोत्तर एवं विचार-मंथन ने अनेक विद्वानों को विस्मित किया। पण्डित दलसुखभाई मालवणिया आदि अनेक प्रबुद्ध व्यक्तियों ने गुरुदेव तुलसी के सान्निध्य में होने वाली इन विद्या परिषदों पर टिप्पणी करते हुए कहा—'हमने अन्य संस्थाओं द्वारा आयोजित अनेक विद्या परिषदों में भाग लिया है पर आचार्य तुलसी के सान्निध्य में होने वाली इस परिषद् का रूप हमने कुछ दूसरा ही देखा है। अन्य विद्या परिषदों में भी हम शोध-पत्र पढ़ते हैं, चर्चा करते हैं किन्तु अनेक प्रश्नों पर अटक जाते हैं। उनका कोई संतोषजनक समाधान हमें नहीं मिल पाता। इस विद्या परिषद् की यह

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

विशेषता है कि यहां कोई भी प्रश्न अनुत्तरित नहीं रहता, सारे प्रश्न समाहित हो जाते हैं। इन समाधानों के मूल में है मुनिश्री नथमलजी। यह एक ऐसा आकर्षण है, जो यहां आयोजित होने वाली प्रत्येक परिषद् में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित करता है।'

५८. लोक कला मण्डल में.....(६०)

गुरुदेव श्री तुलसी का चातुर्मास उदयपुर में था। अणुव्रत प्रवक्ता देवीलालजी सामर भारतीय लोक कला मण्डल के संस्थापक निर्देशक थे। इस संस्था के कलाकारों ने भारतीय संस्कृति को कठपुतलियों के माध्यम से अभिव्यक्त कर अनेक राज्यों के नृत्यों का भाव, भाषा, शैली में रोचक प्रदर्शन कर पूरे विश्व में ख्याति अर्जित की हैं। श्री सामर गुरुदेव के परम भक्त थे। गुरुदेव ने एक दिन श्री सामरजी की प्रार्थना पर मुनिश्री नथमलजी को आदेश दिया—जैन दर्शन में कला की क्या उपयोगिता है, इसका अध्ययन तुम्हें करना है। इसके लिए तुम प्रतिदिन लोक कला मंडल में जाया करो। मुनिश्री गुरुदेव के आदेश को स्वीकृत कर प्रतिदिन लोक कला मंडल जाने लगे। वहां वे अपनी जिज्ञासाएं सामरजी के सामने प्रस्तुत करते और सामरजी उनका समाधान करते। मुनिश्री के उर्वर चिन्तन को देख सामरजी विस्मित रह गए। उन्होंने एक दिन आपसे कहा—मुनिश्री! मुझे आप प्रश्न लिखकर दें, मैं दूसरे दिन उनका समाधान कर दिया करूंगा। अहं पोषण का यह उपाय भी असफल रहा। जैसे तैसे दस दिन बीते। ग्यारहवें दिन सामरजी ने गुरुदेव को निवेदन करते हुए कहा—गुरुदेव! आपने मेरी यह परीक्षा क्यों ली? मैं तो मुनिश्री नथमलजी का शिष्य हूं, वे मेरे गुरु हैं।

५९. प्रेमी पाठक और प्रयोक्ता.....(६२)

श्री अटलबिहारी वाजपेयी महाप्रज्ञ-साहित्य के अध्येता हैं। ऐसा शायद ही कभी हुआ हो, महाप्रज्ञ की नवीन प्रकाशित पुस्तक वाजपेयीजी को न मिली हो। जब भी कोई संत वाजपेयीजी से मिलते, वाजपेयीजी कह देते—महाप्रज्ञजी की अमुक नवीन प्रकाशित पुस्तक मिल गई है। क्या उसके बाद कोई नई कृति आई है?

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१३ मई १९९४। भारत की राजधानी दिल्ली, अक्षय तृतीया का पावन पर्व, विशाल जनमेदिनी को संबोधित करते हुए श्री वाजपेयीजी ने कहा—'मैं महाप्रज्ञ के साहित्य का प्रेमी पाठक हूं। अपने भाषणों में इनकी कथाओं, दृष्टान्तों और मौलिक विचारों का बहुत उपयोग करता रहा हूं। आज पहली बार महाप्रज्ञ की कथा उनके सामने ही प्रस्तुत कर रहा हूं।' यह कहते हुए उन्होंने महाप्रज्ञ द्वारा प्रयुक्त एक मार्मिक कथा सुनाई, जिसमें समस्या की जड़ का स्पर्श था। विशिष्ट अंदाज में प्रस्तुत उस कथा को सुन श्रोता मंत्रमुग्ध हो उठे।

६०. पारायण गहरा ग्रंथां रो.....(६३)

दर्शन की जटिल गुत्थियों को सुलझाने के लिए मुनिश्री को अनेक ग्रंथों का अनुशीलन करना होता। इस प्रक्रिया में कभी-कभी श्रम का अतिरेक हो जाता। कार्यान्तर को विश्राम मानने वाले मुनिश्री के विश्रान्ति के क्षण उनके कवि मानस को प्रबुद्ध करने वाले हो जाते। ऐसा ही एक प्रसंग है—जैन सिद्धान्त दीपिका के संपादन का। दर्शन की किसी गुत्थी को सुलझाने के लिए आपने अनेक ग्रन्थों का अवगाहन किया। अत्यन्त बौद्धिक श्रम के बाद मुनिश्री नगर के बाहर उद्यान में गमन योग के लिए पधारे। उद्यान के मनोरम वातावरण में विश्राम किया। इन क्षणों में मुनिश्री का कवि-मानस बोल उठा—

आनन्दस्तव रोदनेऽपि सुकवे! मे नास्ति तद्व्याकृतौ,
दृष्टिर्दार्शनिकस्य संप्रवदतो जाता समस्यामयी।
किं सत्यं त्वितिचिन्तया हृतमते! क्वानन्दवार्ता तव,
तत् सत्यं मम यत्र नन्दति मनोनैका हि भूरावयोः।।

दार्शनिक का प्रतिनिधित्व करते हुए मुनिश्री ने कवि से कहा—कविशेखर! तुम्हारे रोने में भी आनन्द है और मुझे आनन्द की व्याख्या करने में भी आनन्द नहीं आता। मैं जैसे-जैसे आनन्द को समझने और उसकी व्याख्या करने का प्रयास करता हूं, वैसे-वैसे मेरी दृष्टि समस्याओं से भर जाती है।

कवि ने कहा—दार्शनिक! तुम इस बात में उलझ जाते हो कि 'सत्य क्या है? तुम्हारी बुद्धि उसी में लग जाती है। तुम्हारे लिए आनन्द की बात ही क्या है? किन्तु मेरा अपना सूत्र यह है कि जिसमें मन आनन्दित हो जाए, वह सत्य

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

है। मेरे लिए सर्वत्र सत्य ही है, आनन्द ही आनन्द है। दार्शनिक तुम्हारी और मेरी भूमिका एक नहीं है।'

एक सृजन की थकान मिट गई और नया सृजन प्रस्फुटित हो गया। सृजन का यह क्रम निर्बाध गति से चलता रहा।

६१. ऋषभायण महाकाव्य है.....(६३)

पूज्य गुरुदेवश्री की प्रेरणा की फलश्रुति है—'ऋषभायण' का प्रणयन। तेरापंथ धर्मसंघ में हिन्दी भाषा में आलेखित यह प्रथम महाकाव्य है। इस महाकाव्य से केवल हिन्दी जगत् ही समृद्ध नहीं हुआ अपितु इसके माध्यम से जैनधर्म, दर्शन, इतिहास और संस्कृति का अभिनव आलेख प्रस्तुत हुआ है।

६२. दिन में कर कंठस्थ.....(६४,६५)

परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी ने मुनिश्री नथमलजी का वि.सं. २००१ का चातुर्मास सरदारशहर घोषित किया। यह मुनिश्री का आचार्यवर से पृथक् प्रथम वर्षावास था। सरदारशहर का श्रावक समाज, प्रबुद्ध, जागरूक और तत्त्वज्ञ है। ऐसा माना जाता है कि सरदारशहर में जो सफलतापूर्वक चातुर्मास व्यतीत कर देता है, वह सफल अग्रगण्य कहलाता है। कौन-सा अग्रगण्य कैसा है? सरदारशहर इसका निर्णायक क्षेत्र होता था।

उस समय रात्रि के समय रामचरित का व्याख्यान अनिवार्य रूप से होता था। प्रकाश आदि की सुविधा उस समय नहीं हुआ करती थी। हजारों-हजारों लोगों की उपस्थिति में मुनिश्री रामायण सुनाया करते। वहां के अनेक श्रावकों को भी रामायण कंठस्थ थी। एक भी गाथा छूट जाती तो श्रावक तत्काल कहते—'महाराज! यह गाथा छूट गई।' इसलिए प्रत्येक व्याख्याता को पूरी तैयारी के साथ प्रवचन करना होता था। मुनिश्री प्रतिदिन रामायण कंठस्थ करते, रात्रि में उसका व्याख्यान करते। सरदारशहर का प्रथम सफल पावस जनता के मन में एक गहरी और अमिट छाप छोड़ गया।

६३. बौद्ध धर्म रा पिटकां रै.....(६६,६७)

गुरुदेवश्री तुलसी की महाराष्ट्र यात्रा। मंचर गांव। अपराह्न का समय।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

अनायास ही गुरुदेव के हाथ में 'धर्मदूत' नामक पत्र आया। उसमें बौद्ध-पिटकों के सम्पादन और प्रकाशन की बात थी। उस संवाद को पढ़ते ही गुरुदेवश्री के मस्तिष्क में जैन आगम आ गए। गुरुदेव ने सोचा—'बौद्ध साहित्य पर अब तक काफी काम हो चुका है, काफी प्रसार भी हो चुका है फिर भी बौद्ध विद्वान् निश्चिन्त नहीं है। उन्होंने बौद्ध-पिटकों के सम्पादन की एक व्यवस्थित योजना बनाई है। जैन आगम भी इतने ही महत्त्वपूर्ण हैं किन्तु जैन विद्वानों का उनकी ओर ध्यान ही नहीं गया। जैन आगमों पर अब तक काम क्यों नहीं हुआ?'

गुरुदेव के मस्तिष्क में उथल-पुथल मच गई। कुछ करने के लिए मन आतुर हो गया। उन्होंने तत्काल मुनि नथमलजी को बुलाया। वे आए। 'धर्मदूत' पत्र उनके हाथ में थामते हुए गुरुदेवश्री ने फरमाया—'पढ़ो, क्या लिखा है?'

मुनि नथमलजी—'बौद्ध पिटकों के सम्पादन और प्रकाशन की बात है।'

गुरुदेव—'क्या हम भी जैन आगमों का कार्य हाथ में लें?'

बिना एक क्षण सोचे मुनि नथमलजी ने कहा—'अवश्य लें। चिन्तन बहुत सुन्दर है।'

चिन्तन को क्रियान्वित करने के लिए एक बार फिर गुरुदेव ने मुनिश्री से कहा—'क्या यह काम हो सकेगा? तुमने पूरा सोच तो लिया है?'

मुनि नथमलजी—'इसमें सोचने की क्या अपेक्षा है? आपका जो भी संकल्प होगा, वह अवश्य फलवान बनेगा।'

गुरुदेव—'नथमलजी! यह चिन्तन कोरा उपचार नहीं है। इसे गंभीरता से लो। एक बार फिर गहराई से सोच लो। हमें वही काम हाथ में लेना है, जिसे हम कर सकें।'

मुनि नथमलजी ने दृढ़ता के साथ कहा—'आप जो चाहेंगे, वह होगा।'

मुनि नथमलजी की निर्विकल्प चित्त से सहमति के पश्चात् रात्रि में गुरुदेवश्री ने सब साधुओं को संबोधित करते हुए फरमाया—'जैन आगमों के सम्पादन का काम हमें करना है। यद्यपि इस काम का कोई अनुभव नहीं है, कार्य-पद्धति भी निश्चित नहीं है फिर भी मन में उमंग है। मैं यह भी चाहता

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

हूं कि हमारा काम ऐसा-वैसा नहीं होना चाहिए। मूलपाठ का सम्पादन, हिन्दी अनुवाद, आधुनिकतम टिप्पणियां, शब्दकोश आदि जितने काम आवश्यक प्रतीत होंगे, वे सब करने होंगे? बताओ, किसकी तैयारी है?

उपस्थित सभी साधुओं ने हार्दिक भाव से कार्य करने की इच्छा व्यक्त की।

६४. दो हजार बारह रो पावस.....(६८)

उज्जैन चातुर्मास में आचार्यश्री तुलसी ने साधु-साध्वियों की सभा में कहा—'हमें यह कार्य वेतनभोगी पण्डितों से नहीं कराना है। इसमें हमें अपने पुरुषार्थ का नियोजन करना है। आगम कार्य के सम्पादन का समग्र दायित्व मुनि नथमलजी (टमकोर) को सौंप दिया है और उनके साथ कुछ सहयोगी साधुओं की भी नियुक्ति कर दी।'

६५. हुवै न इणमें कदै मताग्रह.....(६९)

आगम सम्पादन के प्रति आचार्यश्री तुलसी का दृष्टिकोण शोधपरक रहा। साम्प्रदायिक आग्रह किंचित् भी नहीं था। उज्जैन चातुर्मास में मुख्य लक्ष्य आगम सम्पादन का था। एक दिन साधु-साध्वियों को संबोधित करते हुए आचार्यवर ने कहा—

'हम आगम सम्पादन का एक बहुत बड़ा काम हाथ में ले रहे हैं। हमें गहरी निष्ठा और शक्ति के नियोजन से इस कार्य को सम्पन्न करना है। इसमें हमें पूरी तटस्थता रखनी है। आगमों के साथ न्याय करना हैं। यह काम करते समय हमारी दृष्टि में कोई साम्प्रदायिक आग्रह न हो। आगम के मूल अर्थ से कहीं कोई साम्प्रदायिक परम्परा भिन्न हो तो उसका उल्लेख हम पाद-टिप्पण में कर सकते हैं।'

मुनिश्री नथमलजी (आचार्य महाप्रज्ञ) ने आचार्यवर के इस निर्देश के अनुसार आगम-सम्पादन के कार्य को आगे बढ़ाया।

६६. टिप्पण देख नियाग शब्द रो.....(७१)

आचार्य तुलसी कानपुर में चातुर्मासिक प्रवास कर रहे थे। दसवैकालिक

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

के सम्पादन का कार्य चल रहा था। उसके तीसरे अध्याय के एक शब्द 'नियाग' पर मुनिश्री ने पर्याप्त चिन्तन किया। अनेक ग्रंथों के अध्ययन के बाद उसका अर्थ किया और उस पर एक बृहद् टिप्पण लिखा। उसे देखकर आचार्यवर ने प्रसन्नता के साथ उन्हें पुरस्कृत किया।

६७. पदयात्रा नियमित दिनचर्या.....(७२)

एक ओर सुदूर प्रदेशों की यात्राएं, दूसरी ओर आगम-सम्पादन का कार्य। दोनों प्रवृत्तियों में सामञ्जस्य कैसे खोजा जा सकता है? एक स्थान पर दीर्घकालिक प्रवास हो, बृहत्तम पुस्तकालय और शोधोपयुक्त सामग्री की सुलभता हो तो आगम सम्पादन जैसे भगीरथ कार्य में अनुकूलता होती है। प्रतिदिन विहार करना, आवश्यक धर्मोपकरण अपने कंधों पर रखकर चलना, स्थान की अनुकूलता और प्रतिकूलता के साथ समायोजन करना, अपेक्षित साहित्य की सुगमता नहीं होना—इस तरह की अनेक स्थितियों में भी आगम-सम्पादन का काम चलता रहा।

एक बार राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू ने जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित आगम-ग्रंथ देखकर कहा—आचार्यश्री ! आप यात्रा में इतना दुरूह कार्य कैसे करते है?

आचार्यश्री तुलसी—'हमारे पास बाह्य साधन सामग्री कम हैं पर सौभाग्य से हमें अन्तर्दृष्टि प्राप्त है इसलिए यह कार्य निर्बाध गति से चल रहा है। यदि हम साधन-सामग्री पर निर्भर होते तो यात्रा में इतना बड़ा काम कभी नहीं होता।' आचार्यवर की यह वाणी यथार्थ पर आधारित थी।

६८. जैन धर्म में विरला.....(७३)

आगम साहित्य में भाष्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आचार्य महाप्रज्ञ ने आचारांग का संस्कृत में भाष्य लिखा। हजारों वर्षों बाद किसी आगम का संस्कृत में भाष्य लिखा गया। इस भाष्य का आलेखन कर आचार्य महाप्रज्ञ जैन आगम के भाष्यकारों की पंक्ति में अवस्थित हो गए। भाष्यकारों की बहुत विश्रुत और गरिमापूर्ण परम्परा रही है। आचार्य महाप्रज्ञ के प्रस्तुत भाष्य ने प्राचीन आगम की भाष्य परम्परा का पुनरुज्जीवन किया है। 'आचारांगभाष्यम्'

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

का आलेखन कर आचार्य महाप्रज्ञ अनेक आगमिक रहस्यों के अनावरण, मौलिक प्रस्थापनाओं के प्रस्तुतीकरण और महावीर के दर्शन-चिन्तन को एक नया आयाम देने में सफल रहे। तीन वर्ष के अनवरत श्रम से निष्पन्न यह ग्रन्थ भारतीय प्राच्य विद्या की अनमोल धरोहर है।

आचारांग भाष्य की भूमिका में गुरुदेव ने इस विषय को स्पष्ट किया है—'आचारांग के व्याख्या ग्रंथों में इसका अपना विशिष्ट स्थान है। अनेक वर्षों से मेरे मन में कल्पना थी कि आगम पर भाष्य लिखा जाए। मेरी भावना महाप्रज्ञ तक पहुंची और इन्होंने सरल संस्कृत भाषा में आचारांग भाष्य का प्रणयन कर दिया। इन्होंने चूर्णि और वृत्ति से हटकर अनेक शब्दों, पदों और सूत्रों का सर्वथा नया अर्थ किया है। वह अर्थ स्वकल्पित नहीं, किंतु सूत्रगत गहराई में पैठने की सूक्ष्म मेधा से प्राप्त है।'

६९. समय प्रबंधन कला अनुत्तर.....(७४)

उज्जैन में परम पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में आगम-सम्पादन की यात्रा शुरू हुई। मुनि नथमलजी के निर्देशन में यह कार्य चल रहा था। उन्होंने सोचा—कार्य बहुलता के कारण कहीं स्वास्थ्य पर असर न आ जाए। इस चिन्तन के साथ उन्होंने दिन को तीन भागों में विभाजित कर दिया—

१. प्रातःकाल—आनन्दोपासना, ध्यान, स्वाध्याय आदि के रूप में व्यक्तिगत साधना। इसके द्वारा मोहकर्म का विलय होता है।

२. मध्याह्न—ज्ञानोपासना, आगम-सम्पादन आदि कार्य। इससे ज्ञानावरणीय कर्म का विलय होता है।

३. रात्रि—शक्ति-उपासना। जप आदि का प्रयोग। इसके द्वारा अन्तराय कर्म का विलय होता है।

७०. निःशेषम् सूत्र.....(७४)

मुनिश्री प्रतिदिन अनेक कार्यों में अपना समय नियोजित करते। प्रत्येक कार्य के लिए प्रायः समय निश्चित होता। जैसे ही एक कार्य पूरा होता, उस

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

कार्य को वहीं समाप्त कर देते। उस कार्य का फिर मुनिश्री के मन पर कोई भार नहीं होता।

आगम सम्पादन के संदर्भ में मुनिश्री ने अपने जीवन का एक सूत्र निर्धारित किया—'निःशेषम्।' निश्चित समय पर कार्य के लिए प्रस्तुत होना, निश्चित समय पर कार्य से विरत हो जाना और इस भावना के साथ विरत होना—आज का कार्य शेष हो गया, कुछ भी बाकी नहीं बचा। उस कार्य की स्मृति पुनः दूसरे दिन उसी निश्चित समय पर ही करना—उससे पूर्व उस कार्य के संदर्भ में न सोचना, न चिन्तन करना और न अनावश्यक चर्चा में उलझना। मुनिश्री की इस सुगम चर्या का वाचक शब्द है—निःशेषम्।

७१. गण रै अन्तरंग.....(७५)

वि. सं. २०१९, उदयपुर में चतुर्मास समाप्ति के पश्चात् मेवाड़ के छोटे-छोटे गांवों की यात्रा। आचार्यवर का 'आतमा' गांव में प्रवास। मध्याह्न का समय। आहार के पश्चात् 'गत दिवस वार्ता' का निवेदन करने के लिए मुनिश्री गुरुदेव की सन्निधि में पधारे। गुरुदेव ने कहा—'इधर आओ, देखो।' मुनिश्री निकट आए और आचार्यवर ने उनके हाथ में पत्र थमा दिया। उसमें साधु-साध्वियों की व्यवस्था के संकेत लिखे हुए थे। मुनिश्री ने उसे गौर से देखा।

आचार्यवर ने कहा—'इतने दिन मैं संघीय व्यवस्था का कार्य अकेला करता रहा। आज पहली बार तुम्हें यह पत्र सौंप रहा हूं। इसे देखो और व्यवस्था के बारे में चिन्तन शुरू करो।'

उपरोक्त निर्देश के बाद मुनिश्री संघीय व्यवस्था में अंतरंगता से पूर्णरूपेण जुड़ गए। संघ के विषय में हित-चिन्तन तो मुनिश्री बचपन से ही करते थे। वह नैसर्गिक संस्कार अब कार्यक्षेत्र में प्रस्फुटित होने लगा।

प्रस्तुत घटना के संदर्भ में गुरुदेव श्री तुलसी ने अपनी डायरी में उल्लेख किया है—'आतमा गांव में मैंने पहली बार उक्त कार्य में नया सहयोग लिया। कौन साधु किस सिंघाड़े के साथ ठीक बैठ सकता है? इस विषय में मुनि नथमलजी के साथ विचार-विमर्श किया। सहचिन्तन से मुझे हलकेपन का अनुभव हुआ।'

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

७२. दिल्ली चतुर्मास में पहलो.....(७६)

वि.सं. २०२१ में मुनिश्री नथमलजी ने दिल्ली में दूसरा चतुर्मास परमश्रद्धेय आचार्यश्री तुलसी से पृथक् किया था। इसका मुख्य उद्देश्य अणुव्रत शिविर का संचालन था। यह धर्मसंघ का पहला सार्वजनिक शिविर था। अणुव्रत शिविरों की सीमा में आज भी वह अंतिम बना हुआ है। उसमें लगभग २५० व्यक्तियों ने भाग लिया। जैनेन्द्रजी, दादा धर्माधिकारी, गोपीनाथ 'अमन' मोहनलाल कठोतिया, रामेश्वर ठेकेदार आदि दिग्गज व्यक्ति भी सहभागी थे। यशपाल जैन, कविवर हरिवंशराय बच्चन, मोरारजी देसाई, श्रीमन्नारायण आदि अनेक साहित्यकार, पत्रकार और राजनेता समय-समय पर सहभागी बनते थे। चार सप्ताह का शिविर सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। एक बार श्रीमन्नारायण ने कहा—'मैं अनुभव कर रहा हूं कि यहां से निकलने वाला अध्यात्म का स्वर पूरे विश्व को प्रभावित करेगा।' जयप्रकाश नारायण, काका कालेलकर, राष्ट्रकवि दिनकर, वियोगी हरि, प्रो. हुमायुं कबीर, गुलजारीलाल नन्दा, डॉ. राममनोहरलाल लोहिया आदि अनेक चिन्तक और मनीषी व्यक्तियों से मुनिश्री का आत्मीय सम्पर्क बना।

अणुव्रत शिविर में उच्चस्तरीय विद्वान् मुनिश्री को घंटों तक सुनते। उस शिविर में मानवीय संबंधों और पारस्परिक व्यवहारों पर विस्तार से चर्चा हुई। 'मैं : मेरा मन : मेरी शांति' पुस्तक इसी शिविर का प्रतिफलन है। इस प्रवास में मुनिश्री के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को व्यापक परिवेश मिला।

७३. प्रवर निकाय व्यवस्था में.....(७७)

आचार्य भिक्षु से किसी ने पूछा—भगवान महावीर के समय संघ-व्यवस्था में सात पद होते थे। आपके संघ में कितने पद हैं और उनका दायित्व कौन संभाल रहा है?

आचार्य भिक्षु ने कहा—सातों पदों का दायित्व मैं अकेला संभाल रहा हूं।

यह प्रसंग उस समय का है जब तेरापंथ का बहुत विस्तार नहीं हुआ था। गुरुदेव तुलसी के समय तेरापंथ धर्मसंघ व्यापक हो गया और उसका

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

कार्यक्षेत्र भी बढ़ गया। इस स्थिति में गुरुदेव ने एक सहयोगी व्यवस्था की अपेक्षा अनुभव की और उसको वि.सं. २०२२, माघ शुक्ला षष्ठी, हिसार में क्रियान्वित किया गया। निकाय-व्यवस्था के माध्यम से कुछ साधु-साध्वियों को दायित्व सौंपे गए। चार निकाय निर्धारित किए गए—

१. साधना निकाय
२. शिक्षा निकाय
३. साहित्य निकाय
४. प्रबन्ध निकाय

इन चारों निकायों पर व्यवस्थापकों की नियुक्ति की गई। एक निकाय सचिव का स्थान निर्धारित हुआ। यह निर्णय किया गया कि निकाय व्यवस्थापक निकाय सचिव से संबद्ध रहेंगे। निकाय सचिव आचार्य की आज्ञा के अनुसार कार्य को क्रियान्वित करेंगे।

सर्वप्रथम निकाय-सचिव के रूप में मुनिश्री नथमलजी की नियुक्ति की। इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव ने फरमाया—'निकाय सचिव की नियुक्ति से पहले भी ये काम करते रहे हैं। मैंने जब कभी और जिस किसी भी काम को करने का निर्देश दिया, इन्होंने पूरे मनोयोग से उसका पालन किया। अब मैं चाहता हूं—ये इस नए दायित्व को अपनी जिम्मेदारी समझकर निभाएं।'

७४. करी विदेह साधना माजी.....(७८,७९)

आठवें दशक में साध्वी बालूजी का स्वास्थ्य कमजोर हो गया। उनके गले में कैन्सर था। उन दिनों वे गंगाशहर में प्रवास कर रही थी। मुनिश्री आचार्यवर के साथ दक्षिण यात्रा संपन्न कर राजस्थान आए। उस समय गुरुदेव की इच्छा थी और स्वयं मुनिश्री की भी इच्छा थी कि वे गंगाशहर जाकर साध्वी बालूजी को दर्शन दें। अनेक साधुओं ने व श्रावकों ने भी परामर्श दिया—'बालूजी की अंतिम अवस्था है, अतः वहां पूरा समय लगाना चाहिए।'

वि.सं. २०२८ वैशाख कृष्णा १४ को कुछ संतों के साथ मुनिश्री गंगाशहर पधारे। मुनिश्री दुलहराजजी ने गुरुदेव का मौखिक संदेश सुनाया—'कुछ जरूरी कामों से मैं मुनि नथमलजी को पहले नहीं भेज सका। अब वे तुम्हारे पास पर्याप्त समय लगाएंगे।'

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वी बालूजी ने पूछा—आप यहां कितने दिन रहेंगे?

मैं यहां तीन सप्ताह रहना चाहता हूं।

साध्वी बालूजी—'आचार्यवर ने एक मास के लिए कहा है फिर तीन सप्ताह ही क्यों? एक मास ही रहें, उससे अधिक नहीं रोकूंगी।'

मुनिश्री ने मातुश्री की भावना को स्वीकार कर लिया। मासिक प्रवास सम्पन्न होने वाला था। स्थानीय श्रावकों ने आग्रहपूर्ण शब्दों में कहा—'यदि आप प्रार्थना करें तो मुनिश्री यहां कुछ दिन और ठहर सकते हैं।'

साध्वी बालूजी—मैं अर्ज नहीं करूंगी। मुनिश्री की ओर अभिमुख होकर उन्होंने कहा—अब आपको विहार करना है।

कुछ श्रावकों ने कहा—हम आचार्यवर के दर्शन करने जाते हैं। मुनिश्री के चातुर्मासिक प्रवास के लिए प्रार्थना करेंगे।

साध्वी बालूजी ने दृढ़ता के स्वर में कहा—'चौमासा यहां नहीं होगा।'

आचार्यवर के साथ ही होगा। पहले गुरु, फिर मां।

मुनिश्री ने लगभग ५० दिन मातुश्री बालूजी को सेवा का दुर्लभ अवसर प्रदान कर उन्हें प्रवर चित्त समाधि का लाभ प्रदान किया तथा मातृ ऋण से उऋण होने का प्रयास किया।

७५. आत्मा भिन्न शरीर भिन्न.....(८०)

एक दिन बालूजी ने मुनिश्री से कहा—आप दो गीतिकाएं बना दें—एक आचार्य भिक्षु की स्मृति में और दूसरी आचार्य तुलसी के प्रति। मुनिश्री ने उस भावना को स्वीकार कर लिया। मुनिश्री प्रारंभ से कविताएं तो लिखते थे पर गीतिकाएं कम लिखते थे। साधुओं का आग्रह होता तो कभी-कभार लिख देते। मां की भावना को स्वीकार करते हुए उन्होंने दो गीतिकाओं की रचना की—

१. चैत्य पुरुष जग जाएं.....

२. देव दो हस्तावलम्बन.....

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

महाप्रज्ञ ने इन दोनों गीतों का साध्वी बालूजी के सामने सस्वर संगान किया। साधु-साध्वियां सब स्वर में स्वर मिला रहे थे। आध्यात्मिक प्रकंपनों से सारा वातावरण प्रकंपित हो गया। श्रद्धा, वैराग्य और भेद विज्ञान का मंत्र साध्वीश्री बालूजी के माध्यम से सभी को मिल गया।

७६. मुनि नथमलजी बणसी इक दिन.....(८१)

साध्वी बालूजी ने स्वर्गवास के १५ दिन पूर्व साध्वी मालूजी की ओर संकेत करते हुए कहा—'तुम्हारा भाई राजा (आचार्य) बनेगा। मैं तो कुछ नहीं देख सकूंगी, तुम लोग सब कुछ देखोगे।'

साध्वी बालूजी का यह कथन यथार्थ में परिणत हो गया। मुनि नथमलजी महाप्रज्ञ बने, युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ बने, तत्पश्चात् तेरापंथ धर्मसंघ के सर्वोच्च पद (आचार्य पद) पर प्रतिष्ठित हुए।

७७. जैन धर्म में ध्यान योग री.....(८२-८४)

सन् १९६२, उदयपुर। मुनिश्री नथमलजी उत्तराध्ययन सूत्र के तीसवें अध्ययन का सम्पादन कर रहे थे। प्रकरण ध्यान का था। ध्यान के संदर्भ में विस्तृत टिप्पण लिखने के लिए मुनिश्री ने अनेक श्वेताम्बर-दिगम्बर ग्रंथों का अनुशीलन किया। विभिन्न ग्रंथों में बिखरी ध्यान सामग्री का यथावकाश सन्निवेश किया। सायंकालीन प्रतिक्रमण के पश्चात् मुनिश्री ने पूज्य गुरुदेव से निवेदन किया—'जैन आगमों में ध्यान की प्रचुर सामग्री है।'

गुरुदेव—'जैन धर्म में ध्यान योग की समृद्ध परम्परा रही है किन्तु आज वह विच्छिन्न हो गई है। उसका पुनः अनुसंधान करना चाहिए।'

पूज्य गुरुदेव की यह छोटी-सी प्रेरणा प्रेक्षाध्यान की आधारशिला बन गयी। प्रेक्षाध्यान के अभ्युदय का एक मंत्र मिल गया।

मुनिश्री ने हठयोग, तंत्र-साधना आदि से संबंधित ग्रंथों का पारायण किया तथा जैन आगमों व आगमेतर साहित्य का गहराई से अध्ययन किया। शास्त्रों का दोहन, तथ्यों का समाकलन, वैज्ञानिक तथ्यों के साथ अपने अनुभवों का उपयोग किया। फलतः प्रेक्षाध्यान सामने आ गया। इसका मुख्य आधार जैनागम 'आचारांग' रहा है।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

७८. शिक्षा जग री यक्ष समस्या.....(८५)

शिक्षा का उद्देश्य है—समग्र व्यक्तित्व की संरचना। जीवन विज्ञान उसकी संपूर्ति का संकल्प है। जीवन विज्ञान बौद्धिक विकास को उपेक्षित नहीं करता किन्तु उसके साथ मानसिक एवं भावात्मक विकास पर बल देता है। भावात्मक विकास के बिना शिक्षा अधूरी है, अपूर्ण है। जीवन विज्ञान इस अपूर्णता को मिटाता है। न केवल बौद्धिक विकास व्यक्तित्व को सर्वांग बना सकता है, और न केवल भावात्मक विकास ही उसे निखार सकता है। व्यक्तित्व का समग्र रूप तभी बनता है जब बौद्धिक एवं भावात्मक विकास का संतुलन हो। ये दोनों एक दूसरे के पूरक बनकर ही शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावात्मक विकास से युक्त व्यक्ति का सृजन कर सकते हैं।

अध्यापक, विद्यार्थी एवं अभिभावक—इस त्रिकोण को प्रभावित एवं संतुष्ट करने वाला यह उपक्रम शिक्षा का अभिनव प्रायोगिक क्रम है। इस प्रायोगिक पद्धति को विद्यालयी पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाकर वर्तमान शिक्षा के अधूरेपन को मिटाया जा सकता है, चारित्रिक एवं नैतिक व्यक्तित्व के निर्माण की प्रकल्पना को साकार किया जा सकता है।

७९. मारग में शुभ शकुन.....(८६)

वि.सं. २०३५ (१२ नवम्बर १९७८) गंगाशहर में चातुर्मासिक प्रवास, दीक्षा-समारोह का भव्य आयोजन। तेरापंथ भवन का खुला मैदान। परम पूज्य गुरुदेव ने मुनि नथमलजी से कहा—'तुम घण्टा भर आगम का काम करो, फिर कार्यक्रम में आ जाना।' मुनिश्री को यह निर्देश देकर आचार्यवर ने दीक्षा-स्थल की ओर प्रस्थान कर दिया। लगभग एक घण्टे तक आगम-सम्पादन का कार्य कर मुनिश्री प्रवास-स्थल से बाहर पधारे। दीक्षा-स्थल की ओर मुड़ रहे थे कि सामने से एक वृषभ आया और उन्हें देखते ही उसने दड्डुकना शुरू किया। मुनिश्री ने मुनि दुलहराजजी से कहा—शकुन बहुत अच्छे हुए हैं। कुछ नया होगा? मुनि वृन्द ने स्वीकृतिसूचक सिर हिला दिया।

मुनिगण के साथ मुनिश्री आचार्यवर की सन्निधि में पहुंचे। उस समय आचार्यवर साधना की सुन्दर व्याख्या कर रहे थे। उसी प्रसंग में प्रज्ञा का भी

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

विवेचन किया। आचार्यवर ने कहा—'आज मैं प्रज्ञा शब्द को साकार रूप देना चाहता हूं।'

आचार्यवर ने मुनिश्री की ओर दृष्टिक्षेप करते हुए कहा—'मुनि नथमलजी! खड़े हो जाओ।' मुनिश्री खड़े हो गए।

आचार्यवर ने फरमाया—'जैन परम्परा में 'प्रज्ञा' शब्द का बहुत महत्त्व है। इस शब्द का प्रयोग तीर्थंकरों, गणधरों और मेधावी आचार्यों के लिए हुआ है। मुनि नथमलजी ने अपनी प्रज्ञा के द्वारा कुछ नए तथ्य खोजे हैं। साहित्य उनका साक्षी है। प्रेक्षाध्यान युवापीढ़ी और बौद्धिक जगत् को आकृष्ट कर रहा है। अध्यात्म के प्रति जनमानस में आकर्षण बढ़ा है। मैं मानता हूं कि अध्यात्म की भूमिका पर काम करने वाले व्यक्ति को किसी उपाधि या विशेषण की अपेक्षा नहीं होती किन्तु संघ को उसकी अपेक्षा होती है इसलिए मैं अपने दायित्व का अनुभव करते हुए मुनि नथमल को 'महाप्रज्ञ' विशेषण से विभूषित करना चाहता हूं।' महाप्रज्ञ मुनि नथमलजी ने आचार्यवर से प्राथना की—जो व्यक्ति निर्विशेषण और निरुपाधिक सत्ता की ओर आगे बढ़ना चाहता है, उसे निर्विशेषण ही रहने दें। आप मेरी प्रज्ञा को बढ़ाएं।'

आचार्यवर ने महाप्रज्ञ मुनि नथमलजी की प्रार्थना को उत्तरित करते हुए कहा—'मैं आज बहुत प्रसन्न हूं। मैं केवल व्यक्ति नहीं हूं, संघ का नायक हूं। मुनि नथमलजी ने संघ की जो सेवा की है, उसके अंकन का यह प्रारम्भ मात्र है। इन्होंने संघ की आंतरिक सेवा की है, उसका मूल्यांकन करना मेरा कर्तव्य है।'

आचार्यवर ने मुनिश्री को आशीर्वाद देते हुए कहा—'अब तुम महाप्रज्ञ बन गए हो, धर्मसंघ में प्रज्ञा की रश्मियां बिखेरो।'

८०. गणवेदी पर कर्या प्रतिष्ठित.....(८७)

गुरुदेवश्री ने अपनी डायरी में उल्लेख किया है कि मुनि नथमलजी को 'महाप्रज्ञ' विशेषण देकर मैंने दायित्व मात्र का निर्वाह किया है? डायरी की पंक्तियां इस प्रकार है—

'मुनि नथमल एक ऐसा व्यक्ति है जो साधक है, विद्वान् है, वक्ता है,

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

लेखक है, चिंतक है, अन्वेषक है, प्रयोक्ता है। यश, पद और नाम की भूख से काफी ऊपर है, विनम्र है, विश्वस्त है, भक्त है, समर्पित है। एक व्यक्ति में इतने गुणों का एक साथ समावेश बहुत बड़ी बात है। संघ विकास की मेरी कल्पना के ये कलाकार हैं। अतः इनको 'महाप्रज्ञ' विशेषण से अलंकृत करके मैंने बहुत बड़ा काम किया हो—ऐसा नहीं, बल्कि अपने दायित्व का निर्वहन मात्र किया है, ऐसा मैं मानता हूं।'

८१. आद्यक्षर जिणरो 'मकार'.....(८९)

एक बार डीडवाना निवासी जयसिंहजी मुणोत आचार्यश्री तुलसी के पास आए। वे प्रख्यात हस्तरेखाविद् थे। उन्होंने कहा—'पैंसठ वर्ष की आयु में आप अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करेंगे।'

आचार्यश्री—मैंने इस विषय में कोई निर्णयात्मक चिन्तन नहीं किया है। यह तुम्हारी भविष्यवाणी कैसे सच होगी?

जयसिंहजी ने विश्वास के साथ कहा—मेरी बात बिल्कुल सही प्रमाणित होगी। आपके उत्तराधिकारी के नाम का पहला अक्षर 'मकार' होगा।

आचार्यवर ने 'मकार' वाले नामों पर ध्यान दिया पर किसी नाम पर ध्यान केन्द्रित नहीं हुआ फिर भी जयसिंहजी के निवेदन को आचार्यवर ने अपनी डायरी में नोट कर लिया। ६४ वर्ष की संपन्नता के साथ युवाचार्य की नियुक्ति और महाप्रज्ञ नामकरण ने उस हस्तरेखाविद् की भविष्यवाणी को सार्थक बना दिया।

८२. राजाणै मर्याद-महोत्सव.....(९०)

वि.सं. २०३५ का चातुर्मास गंगाशहर में था। उसके बाद मर्यादा महोत्सव कहां हो? इसकी जानकारी करने के लिए खेमचंदजी सेठिया कार्यकर्ताओं के साथ पंजाब के क्षेत्रों का निरीक्षण करने के लिए गए हुए थे। अकस्मात् गुरुदेव के चिन्तन में एक नया मोड़ आ गया। स्वयं गुरुदेव ने इस विषय में लिखा है—'वि.सं. २०३५ के चतुर्मास से पूर्व तक मैंने अपनी भावी व्यवस्था के संबंध में कोई निर्णय नहीं लिया। २०३५ का चतुर्मास गंगाशहर था। उस समय मेरे मन में आकस्मिक चिन्तन आया कि पंजाब-यात्रा से पहले मुझे

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

अपने उत्तराधिकारी का निर्णय कर निश्चिंत हो जाना चाहिए और उसके लिए आकस्मिक रूप से पंजाब यात्रा को कुछ विलंबित करने का मानसिक निर्णय लेना पड़ा। उधर चतुर्मास के बाद पूर्व घोषित पंजाब-यात्रा की पूरी तैयारी हो चुकी थी। खेमचंदजी सेठिया और पंजाब के कार्यकर्ता यात्रा की दृष्टि से उन-उन क्षेत्रों का सर्वे करके लौट आए। उनकी दृष्टि में भटिण्डा क्षेत्र मर्यादा-महोत्सव के लिए सब तरह से उपयुक्त था। पंजाबवासियों तथा विशेषकर भटिण्डावासियों ने अपनी ओर से महोत्सव की तैयारी शुरू कर दी थी। इन सारी परिस्थितियों को मोड़ देने में मुझे डॉ. एस. आर. मेहता का सहारा मिला।'

'डॉ. मेहता हमारे श्रद्धालु श्रावक बलवन्तराजजी भण्डारी के दामाद हैं। वे पिछले कई वर्षों से समय-समय पर मेरे स्वास्थ्य की जांच करते रहे हैं। यात्रा के संबंध में उनका क्या अभिमत है, इस दृष्टि से उनको याद किया गया। वे आए उस समय मैं गंगाशहर से प्रस्थान कर भीनासर पहुंच गया था। उन्होंने पूरे शरीर की जांच की। स्वास्थ्य सामान्य था फिर भी उनका परामर्श था कि पंजाब यात्रा के लिए शीतकाल का समय टाल दिया जाए तो अधिक उपयुक्त होगा। डॉक्टर का परामर्श मेरी भावना के अनुकूल था। मैंने कहा—डाक्टर साहब को याद किया है तो इनके सुझाव पर भी ध्यान देना होगा।'

'मृगसर कृष्णा चतुर्थी, शनिवार (१८ नवम्बर १९७९), भीनासर में प्रातःकालीन प्रवचन का समय। भीनासर, गंगाशहर, बीकानेर आदि क्षेत्रों के हजारों लोगों की उपस्थिति में प्रवचन करने लगा। न तो जनता में कोई नई उत्सुकता थी और न ही कोई मर्यादा-महोत्सव की प्रार्थना थी। किसी को कोई संभावना भी नहीं थी। मैंने अप्रत्याशित रूप से मर्यादा-महोत्सव के लिए राजलदेसर का नाम घोषित कर दिया। लोग देखते रह गए। यह क्या? कहां पंजाब और कहां राजलदेसर? उस समय मुनि नथमलजी भी वहां नहीं थे। उन्हें दो दिन पूर्व ही जैन विश्व भारती, लाडनूं के लिए प्रस्थान करा चुका था। उस समय वि.सं. २०३५, मृगसर कृष्णा तृतीया, शुक्रवार (१७ नवम्बर १९७८), मेरे मन में स्पष्ट अवधारणा हो गयी थी कि इस मर्यादा-महोत्सव पर मुझे कोई निर्णय लेना हैं। पर मैंने इसका आभास किसी को भी नहीं होने दिया।'

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

उत्तराधिकारी नियुक्त करने से पूर्व गुरुदेव ने इस प्रकार भूमिका का निर्माण किया था।

८३. निज हस्ताक्षर स्यूं आलेखित.....(९१)

माघ शुक्ला सप्तमी का दिन। ११५वां मर्यादा महोत्सव। राजलदेसर, डागा परिवार की बाड़ी। विशाल पण्डाल। आचार्यवर का मर्यादा-महोत्सव की आयोजना के लिए वहां ससंघ पदार्पण। आचार्यवर द्वारा मर्यादाओं का विश्लेषण। अकस्मात् कार्यक्रम में नया मोड़। आचार्यवर ने कहा—मैं ४३ वर्ष से धर्मसंघ का नेतृत्व कर रहा हूं। अब मैं ६४ वर्ष का हो गया हूं। मैं भी आज मेरे उत्तराधिकारी के नाम की घोषणा करना चाहता हूं।' इस घोषणा के साथ ही समूची जनमेदिनी उत्कन्धर हो गई। आचार्यवर ने आगे कहा—'मुनि नथमलजी! खड़े हो जाओ।' निर्देश के साथ ही मुनिश्री खड़े हो गए।

आचार्यवर—'मैं आज तेरापंथ धर्मसंघ के ११५वें मर्यादा-महोत्सव में अपने उत्तराधिकारी के रूप में महाप्रज्ञ शिष्य मुनि नथमल को नियुक्त करता हूं।'

इस उद्घोषणा के साथ ही पूरे समवसरण में हर्ष और उल्लास छा गया। आचार्यवर ने अपने हाथ से लिखित नियुक्ति पत्र मुनि नथमलजी के हाथ में सौंप दिया। संघीय परम्परा के अनुरूप आचार्यवर ने स्वयं नई पछेवड़ी ओढ़ी। दायित्व की इस प्रतीकात्मक पछेवड़ी को उतार कर मुनिश्री के सक्षम कंधों पर ओढ़ा दी। तत्पश्चात् आचार्यवर ने मुनिश्री का नाम परिवर्तन किया। महाप्रज्ञ, जो विशेषण था, उसे नाम रूप में प्रतिष्ठित कर दिया।

परम्परागत सम्पूर्ण औपचारिक विधि की पूर्णाहुति के बाद आचार्यवर ने फरमाया—'अब तुम युवाचार्य बन गए हो, मेरे बराबर आसन पर बैठो।'

युवाचार्यश्री मन ही मन सकुचा रहे थे—'दीक्षा के पहले दिन से लेकर आज तक जिनके चरणों में बैठता रहा, आज उनके बराबर कैसे बैठूं।'

आचार्यवर ने युवाचार्यश्री की मानसिकता को पढ़ा और कहा—'आओ, दो क्षण के लिए तो बैठो।' आपने उत्तराधिकारी का हाथ पकड़कर अपने पास अपने आसन पर बिठा लिया। उस समय ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो युवाचार्यश्री निर्विकल्प समाधि में लीन हो गए हो।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

८४. ज्ञान-ध्यान में लीन अनवरत.....(९३,९४)

वि.सं. २०३८, नई दिल्ली, मर्यादा महोत्सव का आयोजन। अनेक वक्ताओं ने मर्यादा और अनुशासन के संदर्भ में अपने विचार रखे। कार्यक्रम के मध्य संयोजक महोदय ने शुभकरणजी दसानी को आमंत्रित किया। दसानीजी मंच पर पहुंचे। समाज के कुछ युवक इस बात को लेकर क्रुद्ध हो गए। उन्होंने दसानीजी की मंच पर उपस्थिति के विरोध में नारेबाजी शुरू कर दी। गुरुदेव ने देखा, कार्यक्रम में व्यवधान डालने के प्रयत्न हो रहे हैं। गुरुदेव ने तत्काल मर्यादा गीत का संगान शुरू किया। वातावरण शांत होने लगा। कुछ लोगों द्वारा वातावरण को बिगाड़ने के इस प्रयत्न से युवाचार्यश्री महाप्रज्ञजी का मानस आहत हुआ। उनकी सुप्त चेतना जाग उठी। उन्होंने गुरुदेव की विशेष अनुमति लेकर एक ओजस्वी वक्तव्य दिया। उनका यह वक्तव्य उनकी प्रशासन क्षमता को उजागर कर रहा है। उसका सार संक्षेप इस प्रकार है—

'यह हमारा धर्मसंघ है। यह कोई राजनैतिक मंच नहीं है, कोई अखाड़ा नहीं है। किसी भी श्रावक के मन में साधु-साध्वी के मन में या किसी के भी मन में कोई बात हो तो वह आचार्यवर को निवेदन कर सकता है किन्तु अपनी बात को मनवाने के लिए हो, हल्ला करना, नारेबाजी करना, विघ्न उत्पन्न करना कतई उचित नहीं है। मैं उन बन्धुओं से बड़ी विनम्रता के साथ कहना चाहता हूं कि वे स्वप्न में भी न सोचें कि हो-हल्ला करने से, नारेबाजी करने से उनकी बात मान ली जाएगी। न तो हमें उनसे कुछ लेना है, न उनको कुछ देना है। जिनकी श्रद्धा हो, भावना हो, वे प्रवचन सुनें। जिनकी श्रद्धा न हो, वे इस प्रकार धर्मशासन और तेरापंथ के आचार्यों के सामने ऐसा उद्दण्डतापूर्वक व्यवहार न करें। वे अपने घर में ही सामायिक करें, धर्म की आराधना करें। इससे उनका भी कल्याण होगा और यहां भी किसी प्रकार का कोई विघ्न नहीं होगा।'

युवाचार्यश्री का यह वक्तव्य जितना संतुलित था, उतना ही गंभीर और अनुशासनात्मक था। आपके इस ओजस्वी प्रवचन से वातावरण में एक अकल्पित बदलाव घटित हो गया। आचार्यश्री के इस वक्तव्य को सुनकर अनेक व्यक्तियों ने कहा—हमने सोचा था कि युवाचार्यजी की बौद्धिक क्षमता

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

और चारित्रिक निष्ठा प्रबल है पर प्रशासन इनके वश की बात नहीं है। ज्ञान और ध्यान में डूबे रहने वाले व्यक्ति का प्रशासनिक रूप देखकर सब स्तब्ध रह गए। मांगीलालजी सेठिया ने कहा—'मैंने युवाचार्यश्री के प्रशासनिक रूप को पहली बार देखा है। मैं यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि महाप्रज्ञ की प्रशासनिक क्षमता ऐसी विलक्षण है। मैं आपका प्रशासनिक रूप देखकर दंग रह गया।'

८५. अणु परमाणु अन्वेषण कर.....(९५)

नई दिल्ली में ४ नवम्बर १९९९ में अणु वैज्ञानिक डॉ. वाई.एस. राजन्, डॉ. सेल्वमूर्ति, श्री एम. पी. लेले आदि डॉ. अब्दुल कलाम के साथ थे। रात्रि में लगभग साढ़े सात बजे से सवा आठ बजे तक अध्यात्म साधना केन्द्र में डॉ. कलाम ने आचार्यवर से विभिन्न विषयों पर वार्तालाप किया। इसी वार्तालाप में आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने डॉ. कलाम को 'शांति की मिसाइल' बनाने की प्रेरणा दी।

आचार्य महाप्रज्ञ—आज भय का वातावरण बन गया है। अणु अस्त्रों का प्रयोग मनुष्य के लिए चिंता का विषय बन रहा है। अनेक देश अणु शक्ति के विकास में लगे हैं। क्या ऐसी स्थिति बन सकती है जिससे उसका प्रयोग रुक जाए?

डॉ. कलाम—अणु अस्त्र के प्रयोग को रोकना संभव नहीं है। अणु अस्त्र का प्रयोग हो रहा है, वे भूमि पर आ रहे हैं। इस स्थिति में उन्हें विरोधी तत्त्वों से नष्ट कर सकते हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ—महावीर के समय का प्रसंग है। वैश्यायन बाल-तपस्वी था। उसे तेजोलब्धि प्राप्त थी। उसने गोशालक को मारने के लिए तेजोलश्या का प्रयोग किया। महावीर ने देखा—गोशालक को जलाने के लिए तेजोलेश्या का प्रयोग किया जा रहा है। महावीर ने तत्काल शीतल तेजोलेश्या का प्रयोग किया। उष्ण तेजोलेश्या समाप्त हो गई।

विज्ञान ने विध्वंसक एटम-बम का निर्माण किया है। आज दूसरे एटम बम के निर्माण की जरूरत है।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

क्या आज विज्ञान विध्वंसक एटम बम को निरस्त करने के लिए शीतल एटम बम का निर्माण कर सकता है?

डॉ. कलाम—(विस्मय-विमुग्ध होते हुए) आचार्यश्री! आप क्या कह रहे हैं?

आचार्य महाप्रज्ञ—विनाशक एटम बम का निर्माण अनेक देशों ने कर लिया है। भारत को शांति के एटम बम का, शांति की मिसाइल का निर्माण करना चाहिए। क्या आप यह कर सकते है?

डॉ. कलाम—(श्रद्धा भरे स्वर में) आचार्यश्री! यह अपूर्व कन्सेप्ट है। केवल भारत ही यह कार्य कर सकता है। महावीर, बुद्ध और गांधी का देश आध्यात्मिक रूप से मजबूत हो जाए तो हम इस मिशन को शुरू कर सकते हैं।

८६. योगक्षेम वर्ष आयोजन.....(९६)

वि.सं. २०४५, ११ नवम्बर १९८८ को आचार्य तुलसी ने ७५वें वर्ष में प्रवेश किया। इस उपलक्ष्य में कोई आयोजन की कल्पना नहीं की गई। अनायास साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के चयन दिवस पर, उनके विशेष अनुरोध पर प्रशिक्षण की परिकल्पना हुई। ७५वें वर्ष में प्रवेश का संदर्भ जुड़ गया और उसे 'योगक्षेम वर्ष' के रूप में मनाने का निर्णय हो गया। योगक्षेम वर्ष तेरापंथ की भाग्य-लिपि का एक अनुत्तर अभिलेख बन गया। उसके सारे कार्यक्रम प्रज्ञापर्व समारोह समिति के अंतर्गत जैन विश्व भारती मे आयोजित हुए। बहुआयामी प्रशिक्षण की दृष्टि से प्रशिक्षण व्यवस्था को चार भागों में बांटा गया—१. प्रबुद्ध वर्ग २. बोधार्थी वर्ग ३. तत्त्वज्ञ वर्ग ४. स्नातक वर्ग। इनमें २५० से अधिक साधु-साध्वियों एवं समण-समणियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। विकास के नए आयाम उद्घाटित हुए। योगक्षेम वर्ष में प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य रहा—

१. आध्यात्मिक-वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण।

२. जैन दर्शन, तेरापंथ, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान के अधिकृत प्रवक्ताओं का निर्माण।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

२१ फरवरी १९८९ को प्रज्ञापर्व समारोह का विधिवत् उद्घाटन हुआ और ६ फरवरी १९९० को समापन समारोह। लगभग एक वर्ष तक प्रशिक्षण का सघन उपक्रम चला।

८७. भिक्षु-भारमल जय-मघवा.....(९८)

तेरापंथ धर्मसंघ में वर्तमान आचार्य अपने युवाचार्य (उत्तराधिकारी) की नियुक्ति करते हैं। नियुक्ति के बाद आचार्य कभी युवाचार्य को अपने साथ रखते हैं, कभी पृथक् विहार में भेज देते हैं। तेरापंथ के इतिहास में किसी उत्तराधिकारी को अपने अनन्तर पूर्ववर्ती आचार्य के साथ प्रलम्ब काल तक रहने का अवसर सिर्फ आचार्य महाप्रज्ञजी को मिला। इस तथ्य का उल्लेख करते हुए एक बार आचार्य महाप्रज्ञजी ने कहा—'भिक्षु-भारीमाल का सैंतालीस वर्षों का सम्बन्ध रहा, जय-मघवा का तीस वर्ष का सम्बन्ध रहा। मेरा व गुरुदेव का तो सड़सठ वर्ष का सम्बन्ध रहा।' सचमुच गुरुदेव और आचार्य महाप्रज्ञ की एकात्मकता जन-जन के मन को मंत्रमुग्ध करने वाली थी।

८८. मूल्यवान मणका अणगमता.....(९९)

एक बार सीता ने प्रसन्न होकर अपना बहुमूल्य हार हनुमान को प्रदान किया। सारे दर्शक हनुमान के सौभाग्य की प्रशंसा कर रहे थे पर हनुमान तो अपनी ही धुन में खोए हुए थे। कुछ समय पश्चात् उसने हार में से एक मणि निकाली और उसे फोड़कर उस की ओर पैनी दृष्टि से देखने लगे। सीता ने पूछा—हनुमान! ऐसे क्या देख रहे हो?

हनुमान ने कहा—मैं देख रहा हूं कि इसमें राम है या नहीं? यानी इस हार में राम का नाम है तो यह हार मेरे काम का है, अन्यथा आपके द्वारा दिया हुआ हार मेरे लिए बिल्कुल बेकार है।

सीता—हार में राम है तब काम का है पर दिल में राम का नाम है या नही?

सीता के वचन सुनकर हनुमान का पौरुष जाग गया। उसने अपना हृदय खोलकर दिखाया, जिसमें लिखा हुआ था—राम! वह नाम हनुमान के केवल हृदय में ही नहीं अपितु रोम-रोम में दिखाई देने लगा।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

हनुमान राम के भक्त थे और आचार्य महाप्रज्ञ आचार्य तुलसी के। हनुमान को वह हार पसन्द नहीं जिसमें राम का नाम न हो और आचार्य महाप्रज्ञ को वह कार्य पसन्द नहीं है जिसमें तुलसी का नाम न हो।

८९. एक बार श्रुतिलेख लिख्यो.....(१००)

६ दिसम्बर १९९२, भारतीय इतिहास का एक कालिख भरा दिन बन गया। रामजन्मभूमि पर राममंदिर का दावा करनेवाले युवकों ने न्याय और कानून की धज्जियां उड़ाते हुए विवादग्रस्त ढांचे को ढहा दिया। पूरे देश में उत्तेजना का माहौल बन गया। साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे। देश हिंसा की आग में झुलस उठा। हजारों लोग मारे गए। जान-माल की भारी क्षति हुई।

समाधान की अनिवार्यता का अनुभव करने वाले लोगों का मत है कि राजनीति से हटकर ही इस समय देश को समस्या के भंवर से निकाल सकते हैं। उनकी आशा का केन्द्र है—धर्म और धर्माचार्य। इसी आशा से कुछ पत्रकार और सर्वोदयी कार्यकर्ता श्री कन्हैयालालजी फूलफगर के साथ गुरुदेव तुलसी व युवाचार्य महाप्रज्ञ का मार्गदर्शन पाने के लिए लाडनूं आए।

'जनसत्ता' के सम्पादक प्रभाष जोशी ने प्रभावशाली तरीके से देश की स्थिति को गुरुदेव के समक्ष प्रस्तुत करते हुए निवेदन किया—'आचार्यजी! साम्प्रदायिक विद्वेष को शान्त करने के लिए आपके प्रयत्न बहुत मूल्यवान बन सकते हैं। आप मेरी प्रार्थना को स्वीकार करें, देश को इस कठिन समय में राह दिखाएं। इस समय आपको ऐसा संदेश देना चाहिए, जिससे देश का प्रत्येक नागरिक अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक बने। हिन्दू और मुसलमान को, मन्दिर और मस्जिद की राजनीति से जुड़े लोगों में सद्बुद्धि आए।

पूज्य गुरुदेव ने प्रभाष जोशी की भावना को सुना। ऐसा लग रहा था प्रभाष जोशी नहीं, उनका हृदय बोल रहा है। उनकी समयोचित सूझबूझ को पूज्य गुरुदेव ने स्वीकार कर लिया। उसी समय युवाचार्य महाप्रज्ञ को देश की जनता के नाम संदेश देने का निर्देश दिया। गुरुदेव का निर्देश मिलते ही वे आशु वक्तव्य के लिए प्रस्तुत हो गए। एक मुनिजी कलम एवं कागज लेकर लिखने के लिए सन्नद्ध हुए। उसी समय जोशीजी बोले—मुनिजी! मैं लिख लूंगा।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

पूज्य गुरुदेव ने कहा—जोशीजी! आप क्या करेंगे?

जोशीजी ने अत्यन्त विनम्रता से आग्रह किया—आचार्यश्री! आज युवाचार्यश्री बोलेंगे और मैं लिखूंगा।

युवाचार्यजी! आप व्यास हैं और मैं आपका गणपति। प्रभाष जोशी भावपूर्ण स्वरों में यह कहते हुए लिखने की मुद्रा में बैठ गए।

९०. विश्व भारती चौमासा में.....(१०१)

८ नवम्बर सन १९९१, जैन विश्व भारती लाडनूं में चातुर्मासिक प्रवास। वि.सं. २०४८, कार्तिक शुक्ला द्वितीया, गुरुदेव के जन्म दिवस का आयोजन। गुरुदेव ने अपने प्रवचन में कहा—'मैं लम्बे समय से संघीय कार्य करता रहा हूं। अब युवाचार्य मेरे सामने है। सब कार्य करने में सक्षम हैं। मैं चाहता हूं कि ये अब अपना दायित्व संभालें।'

गुरुदेव को विश्राम का समय बहुत कम मिलता था। पूरे संघ की यह भावना थी—गुरुदेव अवस्था और स्वास्थ्य—दोनों को ध्यान में रखकर पर्याप्त विश्राम करें जिससे दीर्घकाल तक आपका नेतृत्व संघ को मिलता रहे। इस आकांक्षा को ध्यान में रखकर आचार्यश्री ने उक्त भावना व्यक्त की। गुरुदेव की भावना के आधार पर युवाचार्य महाप्रज्ञ ने एक पत्र तैयार किया। वह पत्र गुरुदेव को निवेदित किया। उस पत्र का एक अंश इस प्रकार है—

संघ के दीर्घकालिन हित तथा स्वास्थ्य के विषय में पूरी जागरूकता रहे और गुरुदेव को समुचित विश्राम का अवसर मिले, पूरे संघ की इस प्रार्थना को ध्यान में रखकर आचार्यश्री ने मुझे निर्देश दिया कि प्रशासन कार्य अब मैं (महाप्रज्ञ) करूं। आचार्यश्री का नेतृत्व, आवश्यक निर्देश, दिशा-निर्देश और दिशा-दर्शन मुझे सतत मिलता रहा है और मिलता रहेगा।

९१. गुरु तुलसी रो महाविसर्जन .....(१०२)

सुजानगढ़ मर्यादा महोत्सव पर परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी ने युवाचार्य महाप्रज्ञ को 'आचार्य' पद पर प्रतिष्ठित कर दिया। युवाचार्य महाप्रज्ञ आचार्य महाप्रज्ञ बन गए। गुरुदेवश्री के निर्देश को स्वीकार करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

ने विनम्र भाव से प्रार्थना की—'पूज्य गुरुदेव! गण के कार्य और विस्तार को ध्यान में रखकर आप व्यवस्था को नया रूप देना चाहते हैं। यह आपका युगानुरूप चिन्तन है। आप अध्यात्म के उच्च शिखर पर पहुंच चुके हैं। अतः आप हमारी एक नेतृत्व की परम्परा के नियंता, अनुयोग के नियामक तथा अध्यात्म-गुरु के पवित्र आसन पर विराजमान होकर 'गणाधिपति' के पद को सुशोभित करें।'

चतुर्विध धर्मसंघ के साग्रह अनुरोध को देखते हुए पूज्य गुरुदेव ने अपनी स्वीकृति प्रदान की।

आचार्य तुलसी ने अपना पद युवाचार्य महाप्रज्ञ में संक्रान्त कर दिया। आचार्य महाप्रज्ञ तेरापंथ के दसवें आचार्य बन गए। आचार्य तुलसी को गणाधिपति गुरुदेव के रूप में संबोधित किया गया।

९२. ऊंचो लक्ष्य बणा पद छोड्यो.....(१०३)

जयाचार्य ने शासन सत्ता से निवृत्त रहने का प्रयोग किया था। उसमें और वर्तमान व्यवस्था में इतना अन्तर है कि जयाचार्य ने अपने युवाचार्य मघवा को एक प्रकार से आचार्य ही बना दिया। संघ की सारणा-वारणा, आलोयणा देना आदि कार्य वे ही करते। उससे कुछ नया करने की बात आचार्य तुलसी के मन में नहीं आई। 'अकडं करिस्सामि'—जो किसी ने नहीं किया, वह करूं, यह उनकी मनोवृत्ति रही। इस ऋषि मनोवृत्ति का उल्लेख अश्वघोष ने 'बुद्धचरितम्' में किया है—

राज्ञां ऋषीणां चरितानि तानि-कृतानि पुत्रैरकृतानि पूर्वैः।

इस मनोवृत्ति ने आचार्य तुलसी को प्रेरित किया—मैं अपने युवाचार्य को आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित करूं। भिक्षुशासन की परम्परा के अनुसार आचार्य अपने उत्तराधिकारी के रूप में युवाचार्य की नियुक्ति करते हैं और मैंने भी की है। पूर्ववर्ती किसी भी आचार्य ने युवाचार्य को आचार्य के रूप में नहीं देखा। आचार्य तुलसी ने अपनी इस चाह को आकार दे दिया।

९३. तुलसी री आ सीख सतोली.....(१०४)

सन् १९९४, सुजानगढ़ मर्यादा महोत्सव के पश्चात् गणाधिपति पूज्य

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

गुरुदेवश्री तुलसी ने आचार्य महाप्रज्ञ को साथ लेकर जयपुर की ओर प्रस्थान किया। जयपुर पहुंचने के बाद गुरुदेव सी-स्कीम में विराजे। २७ मार्च को गुरुदेवश्री ने साधु-साध्वियों की गोष्ठी आहूत की। उसमें गुरुदेव ने संस्कृत भाषा में वक्तव्य दिया, जिसमें साधु-साध्वियों को नए आचार्य के प्रति विशेष विनय-भक्ति रखने का सन्देश प्रदान किया। उसका एक अंश इस प्रकार है—

'इदानीम् अयं महाप्रज्ञः आचार्यः। सर्वाधिकारसंपन्नोऽयम्। सर्वे साधवः सर्वा साध्व्यश्च मत्तोप्यधिकं विनयभावं, श्रद्धाभावं, भक्तिभावम्, अनुशासनभावं च एनं प्रति रक्षेयुः। नास्मिन् विषये मम पुनः कथनावसरः समागच्छेत्। एषा अस्माकं गौरवमयी परम्परा विद्यते।'

'अब महाप्रज्ञजी आचार्य हैं। ये सर्वाधिकार सम्पन्न हैं। सभी साधु-साध्वियां मेरे से भी अधिक विनयभाव, श्रद्धाभाव, भक्तिभाव और अनुशासन का भाव इनके प्रति रखें। इस विषय में मुझे पुनः कहने का अवसर न आए। यह हमारी गौरवमयी परम्परा है।'

९४. वर्तमान आचारज री है.....(१०५-१०७)

तेरापंथ धर्मसंघ में वर्तमान आचार्य का पदाभिषेक दिवस—पट्टोत्सव आयोजनपूर्वक मनाया जाता है। गुरुदेव तुलसी का पट्टोत्सव भाद्रपद शुक्ला नवमी को मनाया जाता था। सन् १९९४ में गुरुदेव तुलसी ने आचार्य-पद का विसर्जन कर दिया और युवाचार्य महाप्रज्ञ को आचार्यपद पर प्रतिष्ठित कर दिया। आचार्यपद के दायित्व से मुक्त होने पर उन्होंने युवाचार्य महाप्रज्ञ से कहा—'अब मेरा पट्टोत्सव नहीं मनाया जाएगा। तुम्हारा पट्टोत्सव ही मनाया जाएगा।' आचार्य महाप्रज्ञ को यह घोषणा अच्छी नहीं लगी।

गुरुदेव तुलसी ने कहा—'मैं अपना पद-विसर्जन कर चुका हूं। उसके साथ ही महोत्सव की प्रासंगिकता बदल गई है।'

आचार्य महाप्रज्ञ—'भाद्रपद शुक्ला नवमी का दिन हमारे संघ में इतना प्रतिष्ठित हो गया है कि हम इसे छोड़ नहीं सकते। हम भले इसे किसी भी रूप में मनाएं पर मनाएंगे अवश्य।'

आचार्य महाप्रज्ञ ने अपनी नवोन्मेषी प्रज्ञा से नवीन चिन्तन प्रस्तुत करते

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

हुए कहा—'गुरुदेव! आप विकास के प्रतीक पुरुष हैं। आपने संघ के विकास के अनेक आयाम उद्घाटित किए हैं। फलतः तेरापंथ में विविध आयामी विकास हुआ है। हमारी विकास-यात्रा अबाध चलती रहे। वर्तमान विकास की समीक्षा और भविष्य के विकास की व्यवस्थित योजनाएं बनाई जाए—इन सबके लिए आवश्यकता है—एक सशक्त आधार की। इन सबको क्रियान्वित करने के लिए भाद्रपद शुक्ला नवमी को हम 'विकास-महोत्सव' के रूप में मनाना चाहते हैं। इस विकास-महोत्सव का आधार संघीय विकास है। अतः मर्यादा महोत्सव की तरह यह सदा मनाया जाए।'

आचार्य महाप्रज्ञ ने संघ विकास की सक्षम अवधारणा को सुदृढ़ता के साथ प्रस्तुत किया। गुरुदेवश्री तुलसी ने उसकी उपयोगिता और प्रासंगिकता का अनुभव किया। आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा प्रस्तुत 'विकास महोत्सव' की परिकल्पना को पूज्य गुरुदेव ने उपयुक्त मानकर उसे स्वीकृति प्रदान की। धर्मसंघ का यह एक शाश्वत उत्सव बन गया।

९५. चंदेरी में पूछ्यो गुरुवर.....(१०८)

प्रातःकालीन प्रवचन चल रहा था। कोई खास प्रसंग भी नहीं था। परम पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी ने कहा—बताओ, अभी किसका बरतारा चल रहा है?

स्वयं ही गुरुदेव ने इस प्रश्न का उत्तर दे दिया—अभी महाप्रज्ञ का बरतारा चल रहा है।

९६. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम सह.....(१०९)

'द फेमिली एण्ड द नेशन' पुस्तक तेरापंथ धर्मसंघ का दुर्लभ दस्तावेज है। यह श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं पूर्व राष्ट्रपति श्री ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के द्वारा लिखित संयुक्त कृति है। विश्व प्रसिद्ध प्रकाशन संस्थान हार्पर कोलिंस द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में परिवार, राष्ट्र तथा विश्व में शांति और आनंद के सुगम उपायों की चर्चा की गई है।

९७. अंगरेजी, गजराती.....(११०,१११)

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञ के साहित्य का अनेक देशी-विदेशी

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

भाषाओं में अनुवाद हुआ है। प्राप्त जानकारी के अनुसार उसकी सूची दी जा रही है–

आंग्ल भाषा में अनेक पुस्तकों का अनुवाद हुआ है–१. कैसे सोचें, २. मैं कुछ होना चाहता हूं, ३. अपना दर्पण : अपना बिम्ब आदि।

● रशियन भाषा में आचार्यवर की अनेक पुस्तकें अनूदित हुई हैं–१. ध्यान क्यों?, प्रेक्षाध्यान : सिद्धांत और प्रयोग, प्रेक्षाध्यान : प्रयोग पद्धति, कैसे सोचें?, तब होता है ध्यान का जन्म, अपना दर्पण : अपना बिम्ब, प्रतिदिन, जीवन की पोथी, संबोधि आदि।

● स्पेनिश–ध्यान क्यों?, संबोधि।

● इटालियन–अहिंसा प्रशिक्षण।

● जर्मनी–ध्यान क्यों?, मैं कुछ होना चाहता हूं।

● नेपाली–मन के जीते जीत आदि।

● गुजराती भाषा में आचार्य की संभवतः शताधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

● उड़िया भाषा–लोकतंत्र : नया व्यक्ति : नया समाज, कैसे सोचें?, परिवार के साथ कैसे रहें आदि।

● बंगला भाषा–चेतना का ऊर्ध्वारोहण, जीवन विज्ञान : शिक्षा का नया आयाम।

● मलयालम और उर्दू भाषा में द फैमिली एण्ड द नेशन का अनुवाद हुआ है।

● कन्नड़–धर्म मुझे क्या देगा?, मन के जीते जीत।

● पंजाबी–कैसे सोचें?, सुखी परिवार : समृद्ध राष्ट्र।

● असमिया–कैसे सोचें?, Family and the Nation।

● तमिल–कैसे सोचें?, नया मानव : नया विश्व, जीवन विज्ञान : शिक्षा का नया आयाम।

● मराठी–समयसार, तब होता है ध्यान का जन्म, पहला सुख निरोगी काया, कैसे सोचें?, फाइंडिंग योर स्प्रिच्वल सेन्टर।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

९८. सहज मिल्यो संकेत सुगुरु रो.....(११२)

मुनि नथमलजी के वक्तृत्व की भाषा संस्कृतनिष्ठ एवं परिष्कृत रही हैं। अनेक वर्षों तक उनके वक्तृत्व का विषय दर्शन रहा। वक्तव्यों की भाषा गूढ़ एवं दार्शनिक रही। यह तथ्यान्वेषी शैली अनेक सामान्य व्यक्तियों को अगम्य जैसी प्रतीत होती। फलतः अनेक बार ऐसे शब्द कानों का विषय बनते—'अब मुनि नथमलजी बोलने के लिए खड़े हो गए हैं, कुछ भी पल्ले पड़ने वाला नहीं है।' मुनिश्री के वक्तव्य के समय लोग ऊंघने लग जाते अथवा बातचीत में मशगूल हो जाते। प्रतिक्रिया के स्वरों में कहते—'पता नहीं, मुनि नथमलजी किस भाषा में, किस विषय पर बोल रहे हैं?' उनके वक्तव्य केवल बौद्धिक लोगों के लिए ही समझ का विषय बनते थे।

एक दिन गुरुदेव ने मुनिश्री से कहा—'तुम दर्शन की भाषा को कुछ सरसता में बदलो ताकि सामान्य जनता उसे समझ सके।' मुनिश्री ने गुरुदेव के इंगित को शिरोधार्य किया और वक्तव्य की शैली में परिवर्तन-परिष्कार करना प्रारम्भ कर दिया। दर्शन की भाषा के साथ कथानक, रूपक, दृष्टान्त आदि के प्रयोग से वक्तव्य सरस, सरल साधारण जन-भोग्य बन गया।

९९. चाड़वास मोच्छब री घटना.....(११३)

गुरुदेवश्री तुलसी ने अकस्मात् आचार्यपद का विसर्जन कर दिया। विसर्जन के समय अनेक चिन्तन-बिन्दु उनके सामने थे। उनमें एक चिन्तन-बिन्दु यह था—युवाचार्य महाप्रज्ञ बहुत करुणाशील हैं। ये शासन सूत्र का संचालन कैसे कर पाएंगे? गुरुदेव ने अनेक बार कहा—मेरे मन में कोई संदेह नहीं है पर कुछ लोग बार-बार ऐसा प्रश्न उपस्थित करते हैं। क्यों न उनके प्रश्न का समाधान कर दिया जाए? चाड़वास में स्वतंत्र रूप से मर्यादा-महोत्सव के पीछे भी चिंतन का एक बिन्दु यह रहा। स्वतंत्र मर्यादा-महोत्सव करने का निर्णय आकस्मिक नहीं था। काफी दिनों से पूज्य गुरुदेव इस विषय में चिन्तन कर रहे थे। आचार्य महाप्रज्ञजी गुरुदेव से पृथक् मर्यादा-महोत्सव करना नहीं चाहते थे। उन्होंने अनेक बार गुरुदेव के समक्ष अपना चिन्तन भी रखा पर गुरुदेव हर बार यही कहते रहे कि यह प्रयोग आवश्यक है इसलिए हमें करना है।

पृथक् मर्यादा-महोत्सव के पीछे एक कारण यह भी था—स्वतंत्र विहार और मर्यादा-महोत्सव के कार्य का सम्पादन जनता में नया विश्वास पैदा करेगा,

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

कुछ लोगों की आशंका का भी परिमार्जन कर देगा और आचार्य-पद के विसर्जन की सार्थकता भी सबकी समझ में आ जाएगी। इस संदर्भ में गुरुदेवश्री तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के साथ अनेक बार वार्तालाप हुआ।

गुरुदेव—इस बार का मर्यादा-महोत्सव तुम स्वतंत्र करो। यह उपयोगी लगता है।

आचार्य महाप्रज्ञ—मैं यह नहीं चाहता।

गुरुदेव—मैं जानता हूं, तुम नहीं चाहोगे। पर यह एक प्रयोग है। यह गणहित में अच्छा है।

आचार्य महाप्रज्ञ—मैं अलग रहकर कार्य करूं, इसकी अपेक्षा अच्छा है—गुरुदेव के साथ ही रहूं और मर्यादा-महोत्सव का सारा कार्य मैं स्वतंत्र रूप से सम्पादित करूं।

गुरुदेव—ऐसा होता नहीं है। तुम हर बात मेरे सामने लाकर रख देते हो। मैं चाहता हूं कि मुझे कुछ भी न बताया जाए। सारा कार्य अपनी स्वतंत्रता से सम्पादित किया जाए।

आचार्य महाप्रज्ञ—स्थिति का निवेदन करना एक आत्मतोष का विषय है। कार्य तो अपने ढंग से होता ही है।

आखिर निर्णय वही हुआ—जो गुरुदेव चाहते थे। श्रावक समाज का आग्रह होने लगा—गुरुदेव मर्यादा-महोत्सव में अवश्य पधारें। मर्यादा-महोत्सव चाड़वास में हो और गुरुदेव पचीस कि.मी. की दूरी पर लाडनूं में रहे, यह कैसा लगेगा? एक और गुरुदेव का दृढ़ निश्चय, दूसरी ओर साधु-साध्वी और श्रावक समाज का आग्रह। दोनों का लम्बे समय तक द्वंद्व चलता रहा। आखिर गुरु का गुरु कौन हो सकता है!

गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी ने मर्यादा-महोत्सव के संदर्भ में अपनी डायरी में लिखा—'मर्यादा-महोत्सव अधिक सफल रहा। विजय-दुंदुभि बज गई। जनता की समझ में भी आने लगा कि हम चाड़वास क्यों नहीं गए।'

१००. साखी गुरु-शिष्य रो.....(११३)

प्रत्यक्ष में दर्शन अधिक काम करता है, शब्द मौन रहते हैं। परोक्ष में दर्शन मौन हो जाता है, शब्द सक्रिय बन जाते हैं। हमारा बहुत सारा व्यवहार

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

शब्दों के आधार पर चलता है। संवाद, समाचार और पत्र-लेखन की परम्परा इसीलिए स्थापित हुई कि हम परोक्ष को भी प्रत्यक्ष बना सके।

आचार्य महाप्रज्ञ ने चाड़वास मर्यादा महोत्सव के लिए जैन विश्व भारती से प्रस्थान कर दिया। सुजानगढ़ से ही साधु-साध्वियों का गमनागमन और पत्रों का गमनागमन प्रारंभ हो गया। यह सिलसिला चाड़वास महोत्सव तक चलता रहा।

(पत्रों के लिए द्रष्टव्य—मैं और मेरे गुरु, पृ. २९२ से ३०४)

१०१. तुलसी में महाप्रज्ञ निहारो.....(११४)

गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी ने यह निर्णय कर दिया—'इस बार महाप्रज्ञजी स्वतंत्र रूप से चाड़वास में मर्यादा महोत्सव करेंगे।'

श्रावक समाज को यह निर्णय सम्यक् नहीं लगा। चाड़वास के लोग बार-बार गुरुदेव की सन्निधि में गए। प्रार्थना की—'एक-दो दिन के लिए भी आप पधारें। यह आग्रह केवल चाड़वास वालों का ही नहीं, अनेक साधु-साध्वियों तथा श्रावकों का भी था।

गुरुदेव ने चाड़वास के श्रावकों से कहा—'हमारा अभी लाडनूं में ही रहना संभव है। चाड़वास जाना संभव नहीं है। तुम इसकी चिन्ता मत करो।'

श्रावकों को आश्वस्त करते हुए गुरुदेव ने चिर-परिचित सूत्र दोहराया—'महाप्रज्ञ में तुलसी को देखो और तुलसी में महाप्रज्ञ को देखो।'

१०२. गण चिंता स्यूं मुक्त बण्या.....(११८)

दिल्ली में जब युवाचार्य महाप्रज्ञ को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया तब पूज्य गुरुदेव ने महाश्रमण मुनि मुदितकुमारजी को प्रदत्त पत्र में लिखा—'महाश्रमण मुनि मुदितकुमार आचार्य महाप्रज्ञ के गण संचालन के कार्य में सतत सहयोगी रहें तथा स्वयं गण-संचालन की योग्यता विकसित करें। इसके लिए अवशेष जो करणीय है, वह उचित समय पर आचार्य महाप्रज्ञ करेंगे।' आचार्यश्री महाप्रज्ञजी गुरुदेव श्री की इस दिव्य-दृष्टि के आधार पर महाश्रमण मुनि मुदितकुमार को युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर निर्भार बन गए।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१०३. युगप्रधान श्रुतधर आचार्यां री.....(११९)

वि.सं. २०५५, २३ जनवरी १९९९, टोहाना मर्यादा-महोत्सव का दूसरा दिन। आचार्य महाप्रज्ञ का पांचवां पदारोहण दिवस। युवाचार्य महाश्रमण ने वक्तव्य में अपने मन की बात प्रस्तुत करते हुए कहा—'मेरे मन में काफी समय से एक विचार है। श्रद्धा का अपना मूल्य है। बुद्धि, समीक्षा और तटस्थ चिन्तन का अपना मूल्य है। मैंने तटस्थ भाव से समीक्षा की तो लगा—हमारे धर्मसंघ और मानव जाति के उत्थान में आचार्यवर का महान् योगदान है। मैंने सोचा—मर्यादा महोत्सव का अवसर है। इतना बड़ा साधु-साध्वी समाज मेरे सामने हैं। मैं व्यक्ति भी हूं और संघ का प्रतिनिधि भी हूं। अतः मैंने अनेक वरिष्ठ साधु-साध्वियों से विमर्श किया। जिससे भी मैंने बात की, सबका समर्थन प्राप्त हुआ। सभी ने इस विचार को सुंदर और स्तुत्य बताया। मैं कहना चाहूंगा कि श्रद्धेय आचार्यप्रवर के जीवन, अवदानों और संघ विकास के प्रयत्नों को देखते हुए आचार्यवर के नाम के आगे 'युगप्रधान' शब्द का प्रयोग हो। तत्काल हजारों हाथ एक साथ ऊपर उठ गए। योगीवर आचार्य महाप्रज्ञ ने संघ की इस भावना को स्वीकार किया। अब आचार्य महाप्रज्ञ 'युगप्रधान आचार्य महाप्रज्ञ' बन गए।

१०४. रजधानी विज्ञान-भवन में.....(१२०)

सन् १९९९ में परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञ का दिल्ली में चतुर्मास था। इस वर्ष क्रिश्चियन धर्मगुरु पॉप जॉन पॉल द्वितीय भारत यात्रा पर आए। उस अवसर पर राजधानी के विज्ञान भवन में 'अंतर्धार्मिक परिसंवाद' का आयोजन किया गया। उसमें विभिन्न धर्मों के धर्मगुरु उपस्थित थे। जैन धर्म के प्रतिनिधि के रूप में परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञ को आमंत्रित किया गया। आचार्यश्री ने इस अवसर पर युगीन समस्याओं के संदर्भ में धर्म की प्रासंगिकता को रेखांकित किया। धार्मिक जगत् की समस्याओं के प्रभावी समाधान-सूत्र भी प्रस्तुत किए। आचार्यवर का वक्तव्य विचारोत्तेजक एवं दिशा-दर्शक था। उस कार्यक्रम से जैन धर्म की अतिशय प्रभावना हुई।

१०५. गांधी री धरती पर दंगा.....(१२३)

अहिंसा यात्रा के कदम गुजरात की ओर बढ़ रहे थे। लोगों का विश्वास

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

भी बल पकड़ रहा था कि हिंदू-मुस्लिम दंगों की जलती आग को आचार्यश्री महाप्रज्ञ ही बुझा सकते हैं। वे ही हिन्दु और मुसलमानों के बीच समाधान के सेतु बन सकते हैं।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ के आगमन ने गुजरात के इतिहास में नए आलेख जोड़े। लोगों के चिन्तन में एक मोड़ आया। आचार्यवर के प्रयत्न का गुजरात की धरती ने मूल्यांकन किया।

अहमदाबाद में अभिनन्दन का कार्यक्रम चल रहा था। वहां के मेयर श्री हिम्मतसिंह पटेल ने 'की ऑफ सिटी' नगर की चाबी को आचार्यप्रवर के कर कमलों में अर्पित की। उपस्थित सभी धर्मों के लोगों–विशाल परिषद् ने हाथ उठाकर हर्ष ध्वनि व्यक्त की।

मेयर श्री हिम्मतसिंह पटेल ने कहा–'यह चाबी सर्वोत्तम विश्वास का प्रतीक है। घर की चाबी उसे दी जाती है जिस पर सर्वाधिक विश्वास होता हैं। यह शहर आपका घर है। हम चाहते हैं–आप के प्रयत्न से हमारे सारे दुःख-दर्द दूर हों। हमारे घर में निरंतर शांति और खुशहाली रहे। आप जिस शांति और सद्भावना के उद्देश्य से यहां आए हैं, वह उद्देश्य शीघ्र पूरा हो, यही मंगलकामना है।'

१०६. हिन्दू-मुस्लिम और प्रशासन री.....(१२४)

सन् २००२ में गुजरात में साम्प्रदायिक तनाव की समस्या जटिल बनी हुई थी। गोधरा रेल हिंसा काण्ड के बाद साम्प्रदायिक उत्तेजना और हिंसा से पूरा गुजरात झुलस उठा। आचार्यवर अहिंसा-यात्रा करते हुए गुजरात पहुंचे। आचार्यवर के प्रयत्नों ने हिंसा की ज्वाला पर शीतल फुहारों का काम किया।

आचार्यवर ने सिद्धपुर में मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी के सुरक्षा सलाहकार श्री के. पी. गिल से इस समस्या पर विचार किया। ऊंझा में विभिन्न समुदायों के लोगों की संगोष्ठी की। इसके बाद संगोष्ठियों और संबद्ध लोगों से वार्तालाप का सुनियोजित एवं सुव्यवस्थित क्रम प्रारम्भ किया। शाहीबाग, अहमदाबाद में प्रशासन तथा हिन्दू, मुस्लिम समुदाय के प्रमुख लोगों से अनेक बार वार्तालाप किया, समस्या के समाधान की भूमिका तैयार हो गई, शांतिपूर्ण समाधान का

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

पथ प्रशस्त बन गया। उसे अहिंसा-यात्रा की एक महान् उपलब्धि के रूप में स्वीकार किया गया। अहमदाबाद के महापौर श्री हिम्मतसिंह ने सागर-सदन में आयोजित स्वागत समारोह में 'अहमदाबाद की चाबी' आचार्यवर को सौंपते हुए कहा—आपके शुभागमन से नगर में अमन चैन का वातावरण बना है। अहिंसा और शांति इस नगर की संस्कृति बन जाए।

इस अवसर पर तत्कालीन उपप्रधान मंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी एवं मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने साम्प्रदायिक सद्भाव एवं शांति के लिए किए गए आचार्यवर के प्रयत्नों की उन्मुक्त भाव से प्रशंसा की।

१०७. रथयात्रा पर रोक-टोक में.....(१२५)

रथयात्रा को लेकर अनेक चिन्तन सामने आए। स्वयं प्रधानमंत्री श्री वाजपेयीजी का भी चिन्तन रहा—इस बार रथयात्रा को स्थगित कर दिया जाए क्योंकि इससे हिंसा को भड़कने का अवसर मिलेगा। इस संदर्भ में आचार्यवर ने कहा—किसी भी समाज के धार्मिक पर्व को रोकने का अर्थ है—पारस्परिक दूरियों को बढ़ाना। हमें तो उन उपायों को ईजाद करना चाहिए जिनसे अहिंसा को बल मिले, परस्पर सौहार्द बना रहे। यदि इस रथयात्रा को हम रोक देंगे तो यह बहुत बड़ी भूल हो जाएगी।

१२ जुलाई २००२ को अहमदाबाद में रथयात्रा का अवसर नजदीक आ रहा था। साम्प्रदायिक सौहार्द और परस्पर भाईचारे का वातावरण बनाने के लिए आचार्य महाप्रज्ञ ने एक आचार-संहिता का निर्माण किया—

१. आपत्तिजनक नारों, गीतों आदि का उपयोग न हो।

२. जुलूस पूर्ण अनुशासित एवं शांतिपूर्ण ढंग से निकले।

३. किसी व्यक्ति या संप्रदाय द्वारा कहीं भी, किसी भी प्रकार का व्यवधान न किया जाए।

४. यात्रा के दौरान व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग करें।

५. प्रशासन एवं पुलिस शांतिपूर्ण वातावरण बनाये रखने में सहयोग करें।

उपस्थित सभी हिंदू-मुस्लिम तथा सरकारी तंत्र के प्रमुखतम प्रतिनिधियों ने उल्लासपूर्वक हाथ खड़े कर सर्व सम्मति से इस आचारसंहिता को स्वीकार

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

किया। इसके साथ-साथ आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में हिन्दू और मुसलमानों की संयुक्त संगोष्ठी का भी समायोजन किया गया। ११ जुलाई को हिन्दू और मुस्लिम समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने आचार्यवर के दर्शन किए एवं रथयात्रा में शांति बनाए रखने का संकल्प किया।

१०८. मेयर रो अनुरोध मानकर.....(१२६)

१२ जुलाई की पूर्व रात्रि को मेयर के विशेष अनुरोध पर आचार्यप्रवर नगरपालिका के प्रांगण में पहुंचे। वहां अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने आचार्यवर के दर्शन किए। संक्षिप्त बातचीत की। सभी ने आचार्यप्रवर के प्रयत्नों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की। प्रातः जगन्नाथ के मंदिर से प्रारंभ हुई रथयात्रा नगरपालिका प्रांगण में पहुंची। आचार्य महाप्रज्ञजी का आशीर्वाद प्राप्त कर सब आश्वस्त हुए। रथयात्रा शान्ति के साथ आगे बढ़ गई। दूसरे दिन गुजरात से निकलने वाले पत्रों में इस घटना का उल्लेख था—'रथयात्रा को शांतिपूर्ण तरीके से सम्पन्न कराने में प्रशासन के साथ-साथ आचार्य महाप्रज्ञ का भी अहम योगदान है।' इस बात को मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी सहित अन्य अधिकारियों ने भी माना।

१०९. मान्य राष्ट्रपति जन्म दिवस पर.....(१२७,१२८)

सूरत का नवनिर्मित विशाल 'तेरापंथ भवन' (सिटीलाईट)। १५ अक्टूबर २००३ को भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम का जन्मदिन था। आचार्य महाप्रज्ञ से आशीर्वाद लेने राष्ट्रपतिजी सूरत आए। उस समय धर्मगुरुओं के सम्मेलन का समायोजन किया गया। इससे एक दिन पूर्व सभी धर्मगुरुओं की संगोष्ठी हुई। उसी सम्मेलन की एक निष्पत्ति है—Surat Spiritual Declaration. इस डिक्लेरेशन के आधार पर बाद में फ्यूरेक (Foundation for unity of Religions and Enlightened Citizenship) का गठन हुआ।

११०. लांघीवय सब आचार्यां री.....(१२९)

तेरापंथ के गौरवशाली आचार्यों की परम्परा में दशम अधिशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के सर्वाधिक आयुमान ने धर्मसंघ में एक नए इतिहास का सृजन किया। समय की ओर से यह युग को स्वर्णिम अवदान रहा। इस दिन को 'कालजयी

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

महर्षि अभिवंदना' के रूप में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में आचार्यवर की ८३ कृतियों का एक साथ लोकार्पण हुआ। यह इतिहास का एक दुर्लभ दस्तावेज है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने तीन सौ से अधिक ग्रन्थों का प्रणयन कर साहित्य जगत् को जो दिशा और दृष्टि प्रदान की है, साहित्य के द्वारा मानव जाति की जो सेवा की है, उससे आने वाली शताब्दियां उपकृत होकर धन्यता का अनुभव करती रहेगी।

१११. सार्थक जीवन रा राज.....(१२९)

तेरापंथ धर्मसंघ में नौ आचार्यों में सर्वाधिक आयु प्राप्त की थी आचार्य तुलसी ने। ८३वें वर्ष में उनका महाप्रयाण हो गया। दसवें आचार्य, आचार्य महाप्रज्ञ ने लगभग ९० वर्ष की आयु को प्राप्त किया। जब उन्होंने ८४वें वर्ष में प्रवेश किया, उस समय प्रवचन में 'सफल जीवन के रहस्य' सूत्रों को व्याख्यायित किया था। वे सूत्र इस प्रकार हैं—

१. अनेकान्तदृष्टि
२. अनुशासन का जीवन
३. विनम्रता और आत्मानुशासन
४. गुरु का अनुग्रह
५. निस्पृहता
६. आशावादी दृष्टिकोण
७. पुरुषार्थ का जीवन
८. सतत जागरूकता
९. धैर्य और प्रतीक्षा
१०. व्यवहार कौशल
११. संकल्पनिष्ठा
१२. उपशांत कषाय
१३. प्रखर तर्क : प्रगाढ़ श्रद्धा
१४. जीवन का केन्द्रीय लक्ष्य
१५. तीसरे नेत्र का विकास

विस्तार के लिए देखें, आचार्यश्री महाप्रज्ञ की पुस्तक—'मेरे जीवन के रहस्य'।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

११२. माला की इक लड़ी बणाई.....(१३०)

परम पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी का एक सपना था—समणियों का शतक हो। आचार्य महाप्रज्ञ ने उस स्वप्न को पूरा किया। मुंबई प्रवास में समणियों की संख्या १०१ हो गई। उस समय आचार्यवर ने फरमाया—'गुरुदेव बहुत बार समणियों के शतक के संदर्भ में फरमाते थे। वर्षों का वह संकल्प आज पूर्ण हुआ है। इसकी मुझे प्रसन्नता है।' बाद में यह संख्या १०८ तक पहुंच गई।

११३. प्रोफेश्नल फोरम स्यूं जुड़ग्यो.....(१३२)

सन् २००७ में उदयपुर चतुर्मास से पूर्व तेरापंथ के बौद्धिक वर्ग को जोड़ने का एक नया अभियान तीव्र गति से प्रारम्भ हुआ। तेरापंथ प्रोफेश्नल फोरम के नाम से एक मंच का गठन उसकी एक स्वाभाविक निष्पत्ति बन गई। हजारों प्रोफेश्नल व्यक्ति इस मंच के सदस्य बने। डॉक्टर, एडवोकेट, प्रशासनिक अधिकारी, सी.ए., एम.बी.ए, इंजीनियर आदि वर्ग के लोग इस फोरम के साथ जुड़ते चले गए। तेरापंथ प्रोफेश्नल फोरम का पहला अधिवेशन जयपुर में सन् २००८ में आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में हुआ। सन् २०१० में तेरापंथ प्रोफेश्नल फोरम की बुद्धिजीवी वर्ग की एक स्वतंत्र संगठनात्मक संस्था के रूप में विधिवत् स्थापना हो गई। वर्तमान में यह फोरम शिक्षा, चिकित्सा आदि क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रहा है।

११४. युनिवर्सिटी यूनीक बणै.....(१३३)

आचार्य महाप्रज्ञ का एक सपना था कि जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय यूनीक बने। इस दृष्टि से सापेक्ष अर्थशास्त्र और अहिंसा प्रशिक्षण विषयक चिन्तन किया। आचार्यवर ने देश की समस्याओं का अध्ययन एवं गहन विश्लेषण किया। स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ अर्थ व्यवस्था का सूत्र प्रदान करते हुए सापेक्ष अर्थशास्त्र की अवधारणा को विकसित करने की अभिप्रेरणा दी। इस दृष्टि से आचार्यवर की सन्निधि में अनेक बार चिन्तन-मंथन हुआ और सापेक्ष अर्थशास्त्र का एक नया प्रारूप सामने आया। आचार्यवर ने अपने जीवन के अन्तिम दिन भी सापेक्ष अर्थशास्त्र के कार्य को आगे बढ़ाने हेतु मार्गदर्शन दिया।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

आचार्यवर ने अहिंसा प्रशिक्षण का नया आयाम प्रस्तुत किया। उसके चार अंग निर्धारित किए—

१. अहिंसा का सैद्धांतिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण।

२. भावात्मक विकास का प्रशिक्षण।

३. दृष्टिकोण का परिवर्तन, अनेकान्त दृष्टि का विकास।

४. आजीविका का प्रशिक्षण तथा आजीविका-शुद्धि का प्रशिक्षण।

आचार्यवर के सान्निध्य में अहिंसा विश्व शांति एवं सापेक्ष अर्थशास्त्र आदि विषयों पर अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार हुए।

११५. तेरापंथ रो नयो मैनुअल.....(१३४)

तेरापंथ धर्मसंघ की व्यवस्था को सुनियोजित ढंग से चलाने के लिए एक अनुशासन संहिता (Manual) की आवश्यकता थी। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने युवाचार्य महाश्रमण को निर्देश दिया—'तुम्हें अनुशासन संहिता का निर्माण करना है। इसमें वर्तमान व्यवस्था को प्रस्तुत करना है। इसे आधार मानकर प्रत्येक साधु-साध्वी अपने-अपने कार्यों को सम्यक्तया संपादित करें।' आचार्यवर का निर्देश प्राप्त कर युवाचार्यवर ने श्रमपूर्वक इसे तैयार किया।

वि. सं. २०६३ में गंगाशहर मर्यादा महोत्सव के ऐतिहासिक अवसर पर आचार्यप्रवर ने साधु-साध्वियों के लिए निर्मित 'अनुशासन संहिता' को विशाल जनमेदिनी के समक्ष घोषणापूर्वक लागू कर दिया।

११६. मुख्य नियोजक अरु नियोजिका..... (१३५)

तेरापंथ धर्मसंघ में सर्वोच्च पद आचार्य का होता है। आचार्य अपने उत्तराधिकारी के रूप में युवाचार्य को नियुक्त करते हैं। साध्वियों की व्यवस्था को सुगम बनाने के लिए आचार्य साध्वीप्रमुखा का मनोनयन करते हैं।

पूज्यपाद आचार्य महाप्रज्ञजी ने मुख्य नियोजक और मुख्य नियोजिका—इन दो पदों की सर्जना कर अन्तरंग परिषद् का विस्तार किया।

११७. इन्द्रा गांधी राष्ट्र एकता.....(१३६,१३७)

जो पुद्गल को देखता है, उसे पुद्गल से तृप्ति होती है। जो आत्मा को

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

देखता है, उसे आत्मा से तृप्ति होती है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ आत्मवेत्ता, आत्मचेता थे। अतः बाहरी सुख-दुःख से सहजतः उपरत थे।

२ अगस्त २००५ का 'साम्प्रदायिक सद्भावना पुरस्कार' राष्ट्रपति अब्दुल कलाम के द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ को उपहृत किया गया। दूसरे दिन मैंने पूछा—आचार्यवर! इस पुरस्कार को स्वीकार करते समय आपश्री के मन पर क्या प्रतिक्रिया हुई।

आचार्यप्रवर की चेतना समत्व में प्रतिष्ठित थी। उन्होंने कहा—'सम्मान और अपमान जीवन के दो पहलु हैं। अपमान में दुःख और सम्मान में सुख होता है, यह माना जाता है, किन्तु यह अनिवार्य नहीं है। विज्ञान भवन में दो अगस्त को मेरा सम्मान किया गया। उससे मेरी सुखानुभूति बढ़ी, ऐसा मुझे नहीं लगता। मैंने सम्मान प्राप्ति से होनेवाली सुखानुभूति से ऊपर रहने का अभ्यास किया है। अतः सम्मान की प्राप्ति मुझे सुखानुभूति के उस मेरु तक नहीं ले जा सकती, जहां मैं हूं।'

वस्तुतः कमल की तरह निर्लेप आचार्य महाप्रज्ञ अनेक नाम, उपनाम, अभिधान, अधिमान के साथ इस दुनिया में रहे लेकिन दुनिया के ये सारे उपचार उनके लिए उपचार ही रहे, उनकी चेतना के किसी स्पन्दन का स्पर्श न कर सके। संभवतः यही वजह थी कि उन्हें अनेक पुरस्कार मिलने के बावजूद भी उनकी चेतना इन सबसे अप्रभावित रही। प्राप्त सम्मान-पुरस्कार की सूची इस प्रकार है—

	नाम	सन्	द्वारा
१.	महाप्रज्ञ अलंकरण	1978	आचार्य तुलसी
२.	जैनयोग के पुनरुद्धारक	1986	आचार्य तुलसी
३.	प्राकृत के परम्परागत पंडित	1989	U.G.C. (Government of India, Delhi)
४.	Man of the Year	1998	American Biographical Institute
५.	D.Lit.	1999	Netherland Inter-Cultural Open University

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

६.	Diwali Ben Progressive Religious Award	2003	Diwali Ben Mohanlal Mehta Charitable Trust, Mumbai
७.	लोकमहर्षि	2003	नई मुंबई नगरपालिका
८.	Ambassador for Peace	2003	Inter-Religious and International Federation of World Peace, London
९.	इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार	2003	Indira Gandhi National Award Committee, New Delhi
१०.	महात्मा	2004	चैतन्य कश्यप फाउण्डेशन
११.	धर्म चक्रवर्ती	2004	कर्नाटक के विभिन्न धर्मगुरु
१२.	National Communal Harmony Award	2005	Ministry for Home Affairs, Govt. of India, New Delhi
१३.	Mother Teresa Award	2005	Interfaith Harmony Foundation of India, New Delhi
१४.	World Peace Messenger	2008	कर्नाटक के विभिन्न धर्मगुरु
१५.	Ahimsa Award	2008	Institute of Jainology, London.

११८. महाश्रमण खातिर आया म्है.....(१४३)

एक दिन आचार्य महाप्रज्ञ ने युवाचार्य महाश्रमण को कहा—'मैंने सरदारशहर जाने का निर्णय महाश्रमण के लिए ही किया है। मेरी यह भावना है कि महाश्रमण का पहला चौमासा सरदारशहर में हो।' इस वाक्य में क्या रहस्य छिपा हुआ था, स्वयं युवाचार्य महाश्रमण भी इसे नहीं समझ पाए।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

सरदारशहर प्रवेश के समय भी आचार्य महाप्रज्ञ ने फरमाया था—'मैं तो यहां महाश्रमण के लिए आया हूं।'

११९. 'प्रेक्षाध्यान पुस्तिका' पूरी.....(१४६)

परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी के उर्वर मस्तिष्क में प्रेक्षाध्यान के दार्शनिक दृष्टिकोण एवं प्रयोगों की एकरूपता के लेखन के संदर्भ में एक नई कल्पना आई। उस कल्पना को आकार देने के लिए ७ फरवरी २०१० श्रीडूंगरगढ़ में आचार्यवर ने मुझे 'प्रेक्षाध्यान : दर्शन और प्रयोग' पुस्तक को लिखाना प्रारंभ किया। प्रेक्षाध्यान का दार्शनिक आधार मुझे पूरा लिखा दिया। प्रेक्षाध्यान : प्रयोग और पद्धति का पुनर्निरीक्षण करवा रहे थे। प्रयोगों में अनेक स्थानों पर यथोचित परिवर्तन का निर्देश देते हुए फरमाया—लेश्याध्यान का प्रयोग पुस्तक में व्यवस्थित नहीं है। तुम नया लिखो। मुझे एक पूरा प्रयोग लिखा दिया। आगे कहा—इसी क्रम से अवशिष्ट प्रयोग तुम स्वतः लिख लेना। लगभग तुम्हें पूरी पुस्तक लिखा दी है। सिर्फ अनुप्रेक्षा का अध्याय अवशिष्ट रहा है। ९ मई को हुई इस वार्ता का विराम सदा-सदा के लिए पूर्णविराम जैसा होगा—ऐसा तो कभी सपने में भी नहीं सोचा था, पर नियति को यही मान्य था।

१२०. बिद वैसाखी ग्यारस मझदिन.....(१५०)

सनातन परम्परा के लोगों ने अपनी मान्यता का उल्लेख करते हुए कहा—पुरुषोत्तम मास में एकादशी के दिन, जिस समय आचार्य महाप्रज्ञ का महाप्रयाण हुआ, यह योग दुर्लभ है। किसी महापुरुष का ही इस मास के इस दिन और इस समय निर्वाण होता है। इस समय महाप्रयाण करने वाले व्यक्ति के लिए मोक्ष के दरवाजे खुले रहते हैं। उसकी मोक्ष के सिवाय और कोई गति नहीं है। सनातन धर्म की इस मान्यता ने भी नगर में विशेष वातावरण का निर्माण किया।

१२१. देवयान सी बैंकूठी रो.....(१५४)

महाप्रयाण यात्रा के लिए बैकुंठी का निर्माण श्री पूनमचंदजी लूणिया एवं जतनलालजी सेठिया के मार्गदर्शन में हुआ। बैकुंठी का निर्माण मोहनलाल कमलकुमार गोठी के घर पर रुकमानन्द खाती (सुपुत्र दुर्गारामजी खाती) एवं बच्छराज दर्जी सहित १६ खाती और ७ दर्जी लगे, जिन्होंने १६ घण्टों में

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

बैकुंठी का निर्माण किया। इकसठ खंडी बैकुंठी की लम्बाई नौ फीट, चौड़ाई चार फीट और ऊंचाई सात फीट थी। चीड़ की बांस, ईश व प्लाई से बनी इस बैकुंठी में साढ़े छत्तीस मीटर साटन का कपड़ा लगा। इसमें इकसठ चांदी के कलश लगे हुए थे। कलश बनाने वालों ने अपना पारिश्रमिक नहीं लिया। बैकुंठी में प्रयुक्त केसर शासन सेवी श्री जब्बरमलजी दूगड़ एवं जतनलालजी सेठिया के घर से आई। पार्थिव देह पर ओढ़ाई गई शॉल श्री जब्बरमल दूगड़ ने भेंट की। दाह संस्कार के लिए ८२ किलो चंदन की लकड़ी शासनसेवी श्री जब्बरमलजी दूगड़ ने उपहृत की। १५ किलो चंदन की लकड़ी समाज के अनेक व्यक्तियों ने दी। खेजड़ी की लकड़ी मोहनलाल कमलकुमार गोठी ने दी। ग्यारह पींपा घी, ग्यारह बोरी नारियल (लगभग एक क्विंटल) सात किलो खोपरा तथा ग्यारह किलो अन्य सामग्री का उपयोग हुआ।

१२२. हेलीकॉप्टर स्यूं बरसाया.....(१५४)

महाप्रयाण यात्रा के समय हेलीकॉप्टर से चांदी के सिक्के बरसाए गए। यह उपक्रम श्री रघुवीर जैन-मार्बल परिवार (उकलाना मंडी) वालों की ओर से किया गया।

१२३. वायुयान स्यूं कलकत्ता.....(१५५)

आचार्य महाप्रज्ञ की महाप्रयाण यात्रा में देश के प्रान्तों और सैकड़ों-सैकड़ों क्षेत्रों के लोग उपस्थित हुए। स्वर्गवास का समाचार मिलते ही जिसे जो साधन मिला, वह उसी से सरदारशहर के लिए प्रस्थित हो गया। चेन्नई, मुंबई, कोलकाता आदि शहरों की सभी एयरलाइन्स की सारी सीटें कुछ ही समय में बुक हो गई। इन शहरों के सैकड़ों लोग चार्टर्ड प्लेनों से आए। अनेक लोगों को बहुत प्रयत्न करने पर भी चार्टर्ड विमान नहीं मिल पाए। १० मई को सरदारशहर के भीतर और बाहर केवल वाहन और जनता ही दिखाई दे रही थी। ज्ञात सूत्रों के अनुसार लगभग दो हजार बसों और दस हजार से अधिक कारों की कतारें थी। पूरा ताल मैदान बसों से खचाखच भरा था। महाप्रयाण यात्रा के समय चार कि.मी. का यात्रा-पथ जनाकीर्ण था।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१२४. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम.....(१५६)

आचार्य महाप्रज्ञ के देहावसान का समाचार सुनते ही देश के प्रतिष्ठित संतों, राजनेताओं और विचारकों ने अपने शोक सन्देश प्रेषित किए। अनेक प्रतिष्ठित राजनेता और विचारक श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए सरदारशहर पहुंचे।

विशिष्ट व्यक्तियों में सबसे पहले पूर्व राष्ट्रपति ए. पी. जे. अब्दुल कलाम पहुंचे। १० मई को प्रातः ११ बजे डॉ. कलाम जयपुर से कार द्वारा यात्रा करते हुए सरदारशहर पहुंचे। उन्होंने आचार्यवर की पार्थिव देह को सूत की माला समर्पित की। कुछ क्षण तक पूज्यवर की पार्थिव देह को बद्धांजलि मुद्रा में निहारते रहे। डॉ. कलाम ने अपने संक्षिप्त संवेदना सन्देश में कहा—'आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अणुव्रत और अहिंसा के माध्यम से मानवीय मूल्यों को बढ़ावा दिया। देश ने विश्व शांति और मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए समर्पित एक महान संत खो दिया।'

मध्याह्न में महाप्रयाण यात्रा से एक घंटा पूर्व देश एवं राज्य के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने श्री समवसरण पहुंच कर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, केन्द्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायतराज मंत्री श्री सी. पी. जोशी, केन्द्रीय भूतल एवं परिवहन राज्यमंत्री श्री महादेवसिंह खंडेला, राज्यगृहमंत्री श्री शांति धारीवाल, श्री गुरमीतसिंह कुन्नर, पूर्व मुख्यमंत्री श्री वसुंधरा राजे सिंधिया, विधानसभा में विपक्ष के उपनेता श्री घनश्याम तिवारी, श्री राजेन्द्रसिंह राठौर, सांसद श्री नरेन्द्र बुडानिया, शिक्षामंत्री मास्टर भंवरलाल मेघवाल, सार्वजनिक निर्माण मंत्री श्री प्रमोद भाया, पूर्व सांसद सुभाष महरिया, अर्जुन मेघवाल, सांसद श्री रामसिंह कासवा, विधायक राजकुमार रिणवा, विधायक अशोक पींचा, विधायक हाजी मकबूल मंडेलिया, पूर्व विधायक डॉ. चन्द्रशेखर बैद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के श्री सुरेश भैया, श्री बजरंगलाल गुप्ता, जिलाधीश चूरू श्री के. के. पाठक, पुलिस अधीक्षक निसार अहमद, नगरपालिका अध्यक्ष श्री जान मोहम्मद, पूर्व विधायक महीदा बेगम, राजस्थान पत्रिका के प्रबंध संपादक श्री गुलाब कोठारी, संपादक सुकुमार वर्मा, श्री एस. रघुनाथन, वरिष्ठ आई. ए. एस. श्री एस. अहमद, पुलिस महानिरीक्षक श्री दलपतसिंह दिनकर सहित अनेक वरिष्ठ व्यक्तियों ने श्री समवसरण

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

पहुंचकर परम श्रद्धेय आचार्य महाप्रज्ञ की पार्थिव देह को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

१२५. गार्ड ऑफ ऑनर.....(१५६)

पार्थिव देह के अन्तिम संस्कार से पूर्व प्रशासन द्वारा परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सम्मान में पुलिस द्वारा 'गार्ड ऑफ ऑनर' दिया गया और मातमी धुन बजाई गई। भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् तेरापंथ के किसी आचार्य के महाप्रयाण के अवसर पर इस प्रकार के राजकीय सम्मान का यह पहला प्रसंग था।

१२६. संयम जीवन रो.....(१५९)

तेरापंथ धर्मसंघ की श्रमण परम्परा में मुनि छबीलजी स्वामी ७३ वर्ष, ५ मास, २३ दिन तक संयम पर्याय में रहे। वे बगड़ी नगर के थे। उन्होंने आचार्यश्री महाप्रज्ञ को दीक्षा के लिए प्रेरित किया था। आाचार्यश्री महाप्रज्ञ श्रावण शुक्ला द्वितीया विक्रम संवत् २०६१ को ७३ वर्ष, ५ मास, २३ दिन का संयम पर्याय पूरा कर दीक्षा-प्रेरक मुनि के संयम-पर्याय का अतिक्रमण कर नए इतिहास का सृजन किया और श्रमण परम्परा में संयम-पर्याय का नया कीर्तिमान रचा दिया। २२ जुलाई २००४ को सिरियारी में 'श्रमण संघ में संयम पर्याय का कीर्तिमान' संस्थापना के अवसर पर चतुर्विध धर्मसंघ ने युवाचार्य महाश्रमण के मार्गदर्शन में अभिवंदना का विशिष्ट उपक्रम किया। इसी उपलक्ष्य में 'प्रज्ञा महायज्ञ समारोह' के रूप में प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चला। इस वर्ष को आचार्यवर ने 'चित्त समाधि वर्ष' के रूप में घोषित किया था।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

परिशिष्ट-२

विशेष शब्दकोश

अंबार	—	ढेर
अणचक	—	अकस्मात्
अणगमता	—	अप्रिय
अणचिंती	—	अचिन्तित
अणधार	—	सहज
अनिवार	—	अनिवार्य
अनुग्रह	—	कृपा
अनुहार	—	सदृश
अपरम्पार	—	असीम
अरुणाई	—	लालिमा
अवदान	—	देन
अहलाण	—	चिह्न
आखर	—	अक्षर
आगन्या	—	आज्ञा
आधि	—	मानसिक रोग
आगम	—	जैन धर्म ग्रंथ
आपण	—	दुकान
आभै	—	बादल
आमय	—	रोग
आयास	—	प्रयत्न

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

आर-पार	—	ओर-छोर
आर-बार	—	चारों ओर
आरेक	—	संदेह
आसार	—	लक्षण
इकतारी	—	तादात्म्य
इकलोतो	—	अकेला
इकरार	—	वादा, प्रतिज्ञा
इजहार	—	प्रकटीकरण
इयां कियां	—	ऐसे-कैसे
उणिहारो	—	चेहरा
उपाधि	—	भावनात्मक रोग
एह्वा	—	ऐसे
ओजस्वी	—	बलवीर्यशाली
ओपै	—	सुशोभित होना
ओळम्भो	—	उपालम्भ
कदै	—	कभी
करतार	—	करने वाला
करार	—	प्रतिज्ञा
कलदार	—	रुपया
कार	—	असर
किरदार	—	भूमिका
कीन्हा	—	किया
कुन्दन	—	खालिस और दमकता हुआ सोना
कृतिकार	—	रचनाकार
क्षम्य	—	सह्य
खेवणहार	—	पार लगाने वाला

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

गच्छाधार	—	आचार्य
गणधार	—	आचार्य
गिगनार	—	आकाश
गुत्थ्यां	—	उलझनें
गुलजार	—	सुशोभित
गोधूली	—	संध्या का समय
घर बार	—	घर
घोक	—	उच्चारण करना
चसग्या	—	प्रज्वलित हुआ
चुकायो	—	वापस दिया
छाण	—	जानकारी
जगतार	—	जगत् को तारने वाले
जाणक	—	मानो
जाणणहार	—	जानने वाला
जानदार	—	जीवन्त
जिजीविषा	—	जीने की इच्छा
झीणो	—	सूक्ष्म
टंकार	—	ध्वनि विशेष
ठाठ	—	भीड़
ठायो	—	किया
ढाल	—	सुरक्षा कवच
तर-तर	—	धीरे-धीरे
तारणहार	—	तारने वाला
तीरथ	—	साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका रूप चतुर्विध धर्मसंघ
दमदार	—	शक्तिशाली
दरकार	—	अपेक्षा

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

दातार	—	देने वाला
दारमदार	—	निर्भरता
दिदार	—	ललाट, मुख
दिलदार	—	उदार
दिवलो	—	दीपक
दुक्करकार	—	कठिनतर
दुतरफी	—	दोनों तरफ से
दुधार	—	दोनों तरफ धार वाली
दुर्वार	—	मुश्किल
दुश्वार	—	कठिन
दोफार	—	मध्याह्न
धारफार	—	साहसी
धुर	—	प्रथम
धोरा	—	बालु रेत का टीला
निखार	—	चमक
निरख्यो	—	देखा
निरधार	—	निश्चयपूर्वक
निस्तार	—	कल्याण
पढ्यो-भण्यो	—	शिक्षा प्राप्त करना
पतवार	—	पार उतारने का सहारा
पत्राचार	—	पत्र-व्यवहार
पद्मरेख	—	कमल के आकार की रेखा जो अति धनवान होने का लक्षण मानी जाती है।
पलकारो	—	झबका
पारावार	—	समुद्र
पिटकां	—	बौद्ध धर्म ग्रन्थ

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

पूरबली	—	पहले की
पोसाल	—	पाठशाला
प्रतिकार	—	चिकित्सा
प्रशस्त	—	प्रशंसा के योग्य
प्रस्फोटन	—	विकसित होना
प्रारूप	—	प्रस्ताव
प्रातराश	—	सुबह का नाश्ता
फेन	—	झाग
बयार	—	हवा
बरतारो	—	युग
बागडोर	—	जिम्मेदारी
बौछार	—	झड़ी
बाढ़	—	तेज
भंजनहार	—	समाप्त करनेवाले
भमतो-भमतो	—	घूमता-घूमता
भागीदार	—	हिस्सेदार
भाष्यकार	—	व्याख्याकार
भास्कर	—	तेजस्वी
मंडी	—	बैकुण्ठी
मंथर	—	धीरे-धीरे
मंदार	—	कल्पवृक्ष
मगरा	—	पहाड़
मणका	—	मोती
मझदिन	—	दोपहर का समय
मझार	—	मध्य
मनहरणार	—	चित्ताकर्षक
मा'मोच्छव	—	मर्यादा महोत्सव

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

रफ्तार	—	गति
रैस	—	रहस्य
लख	—	देखकर
लिगार	—	किंचित्
वनणा	—	वंदना
वरदायी	—	वरदान देने वाली
वर्चस्वी	—	उत्साही
वाङ्मय	—	ग्रन्थ
वातायन	—	झरोखा
वातूल	—	तूफान
वासर	—	दिन
विकराल	—	भयंकर
विज्ञाता	—	जानने, समझनेवाला
विद्युल्लेख	—	बिजली की रेखा
विश्रम	—	विश्राम
वसूली	—	प्राप्तव्य, उगाही
विरवो	—	वृक्ष
विश्रुत	—	प्रसिद्ध
व्याधि	—	शारीरिक योग
श्रेयस्कर	—	कल्याणकर
सांतरो	—	श्रेष्ठ
संधान	—	खोज
सचकार	—	सत्यापित
सतरंगो	—	सात रंग वाला
सदाबहार	—	हमेशा विकसित रहने वाला
समरांगण	—	युद्धस्थल
सरखा	—	समान

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

सरदार	—	बड़े समूह का मुखिया
सवार	—	प्रातःकाल
सहकार	—	आम
साझपति	—	वर्ग-मुखिया
साझीदार	—	भागीदार
साथी-संगलिया	—	साथ में रहने वाले
सिरजणहार	—	रचनाकार
सूर्यवार	—	रविवार
सोनेला	—	स्वर्णिम
हाजर	—	उपस्थित
होडाहोड	—	प्रतिस्पर्धा
होनहार	—	भवितव्यता
ज्ञानाम्बुधि	—	ज्ञान-सागर

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

लेखिका की अन्य कृतियां

1. **An Introduction to Jainism.**
2. **An Introduction to Terapanth.**
3. **An Introduction to Preksha Meditation.**
4. **Basics of Jainism.**
5. **Journey into Jainism.**
6. **Truth of present.**
7. **Acharya Shree Tulsi : A Legend of Humanity**

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

'आत्मा मेरा ईश्वर है। त्याग मेरी प्रार्थना है, मैत्री मेरी भक्ति है। संयम मेरी शक्ति है। अहिंसा मेरा धर्म है'–इन शब्दों में अपने भावात्मक व्यक्तित्व का परिचय देने वाले अध्यात्मयोगी आचार्यश्री महाप्रज्ञ (ईस्वी सन् १९२०-ईस्वी सन् २०१०) आत्म-मंगल एवं लोक-मंगल के लिए समर्पित संत थे। अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक, आचार्यश्री तुलसी के उत्तराधिकारी और तेरापंथ के दशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ महान् दार्शनिक एवं मौलिक चिन्तक थे। उनके द्वारा सृजित तीन सौ से अधिक जीवन-स्पर्शी ग्रंथ उनकी ऋतम्भरा प्रज्ञा तथा मानवीय, जागतिक समस्याओं के सूक्ष्म विश्लेषण एवं समाधायक प्रतिभा के जीवन्त प्रमाण हैं। उनके द्वारा अनूदित और शोधपूर्ण संपादित जैन आगम प्राच्यविद्या की अनमोल निधि है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने जीवन के नौवें दशक में सप्तवर्षीय अहिंसा यात्रा कर अहिंसक चेतना के जागरण और नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा का महान् अभिक्रम किया। उन्होंने जहां युगीन समस्याओं के समाधान के लिए स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ समाज और स्वस्थ अर्थ-व्यवस्था का सूत्र प्रस्तुत किया, वहीं दूसरी ओर अपने आध्यात्मिक चिन्तन एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बौद्धिक और वैज्ञानिक जगत् को प्रभावित किया। उनके द्वारा दी गई शांति मिसाइल के निर्माण की अभिप्रेरणा आज भी डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का जीवन मिशन बनी हुई है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा प्रवर्तित प्रेक्षाध्यान पद्धति जहां मानसिक तनाव और अवसादग्रस्त मनुष्यों के लिए शांतिपूर्ण और स्वस्थ जीवन का वरदान है, वहां जीवन-विज्ञान शिक्षा के क्षेत्र में भावात्मक विकास का अभिनव अनुदान है। आध्यात्मिक-वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण, 'अहिंसा प्रशिक्षण' तथा सापेक्ष अर्थशास्त्र की संकल्पजा उनके उर्वर मस्तिष्क से उपजे हुए अवदान हैं। व्यष्टि और समष्टि को त्राण और प्राण देने में समर्थ इन अवदानों की उनकी अलौकिक अतीन्द्रिय चेतना का साक्षात्कार होता है।

ISBN - 81-71-5-245-3

Price : ₹60.00

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org